दी इंटर्न

(सब कुछ किसी कारण से होता है!)

डॉ. निशा शास्त्री

दी इंटर्न

(सब कुछ किसी कारण से होता है!)

(Thriller Murder Mystery)

डॉ. निशा शास्त्री

राजमंगल प्रकाशन

An Imprint of **Rajmangal Publishers**

ISBN: 978-8198085269

Published by:

Rajmangal Publishers

Rajmangal Prakashan Building,
1st Street, Ozone, Quarsi, Ramghat Road
Aligarh-202001, (UP) INDIA
Cont. No. +91- 7017993445
www.rajmangalpublishers.com
rajmangalpublishers@gmail.com
sampadak@rajmangalpublishers.in

प्रथम संस्करण: नवम्बर 2024 – पेपरबैक

प्रकाशक: राजमंगल प्रकाशन

राजमंगल प्रकाशन बिल्डिंग, 1st स्ट्रीट,

ओजोन, क्वार्सी, रामघाट रोड,

अलीगढ़, उप्र. – 202001, भारत

फ़ोन : +91 - 7017993445

First Published: Nov. 2024 - Paperback
Printed by : Thomson Press India LTD, Repro India LTD & Manipal Tech LTD
eBook by: Rajmangal ePublishers (Digital Publishing Division)
***Copyright* © डॉ. निशा शास्त्री**

यह एक काल्पनिक कृति है। नाम, पात्र, व्यवसाय, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना के उत्पाद हैं या काल्पनिक तरीके से उपयोग किए जाते हैं। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत, या वास्तविक घटनाओं से कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में मुद्रित, प्रसारित-प्रचारित या बिक्रय नहीं किया जा सकेगा। किसी भी परिस्थिति में इस पुस्तक के किसी भी भाग को पुनर्विक्रय के लिए फोटोकॉपी नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त किए गए विचार के लिए इस पुस्तक के मुद्रक/प्रकाशक/वितरक किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं। सभी विवाद मध्यस्थता के अधीन हैं, किसी भी तरह के कानूनी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत ही होगा।

अनुक्रमणिका

लेखिका की कलम से	5
चरित्र परिचय	9
अध्याय 1	11
अध्याय 2	17
अध्याय 3	23
अध्याय 4	32
अध्याय 5	40
अध्याय 6	47
अध्याय 7	53
अध्याय 8	59
अध्याय 9	65
अध्याय 10	73
अध्याय 11	79
अध्याय 12	88
अध्याय 13	95
अध्याय 14	104
अध्याय 15	112
अध्याय 16	119
अध्याय 17	132

अध्याय 18	140
अध्याय 19	148
अध्याय 20	163
अध्याय 21	174
अध्याय 22	184
अध्याय 23	193
अध्याय 24	201
अध्याय 25	210
अध्याय 26	219
अध्याय 27	231
अध्याय 28	241
अध्याय 29	250
अध्याय 30	260
अध्याय 31	273
अध्याय 32	281
अध्याय 33	288
अध्याय 34	297
अंतिम अध्याय	306

लेखिका की कलम से

मेरे प्यारे पाठकों, आप सभी ने मेरे साइंस फिक्शन नावेल दो दुनिया के वारिस - अनकही कथा (भाग एक) को अत्यधिक सराहा और प्यार दिया उसके लिए मैं आपकी बहुत बहुत आभारी हूँ।

आपके इसी प्यार और सपोर्ट के चलते मैं अपनी इस साइंस फिक्शन नावेल का इंग्लिश वर्जन CHILD OF TWO WORLDS – BOOK 1 OF THE SAGA UNTOLD, ब्रिटिश पार्लियामेंट में गिफ्ट कर के आ पायी। उसकी एक फोटो ग्लिम्प्स मैंने यहाँ लगा दिया है।

आप सभी ने मेरे इंस्टाग्राम पर और यूट्यूब चैनल पर भी मुझे बहुत प्रेम दिया है और मुझे एक थ्रिलर मर्डर मिस्ट्री लिखने के लिए प्रेरित किया है।

इसलिए मैं आप सभी के सामने लेकर प्रस्तुत हुईं हूँ ये रोमांचक थ्रिलर उपन्यास। कैसे एक प्रोफेसर की हत्या हो जाती है; एक इंस्पेक्टर को उसका बॉस ACP अनेकों अजीबोगरीब केस पर लगा रहा है और एक नामी फार्मा कंपनी में एक इंटर्न के आने के बाद से ही हत्या का सिलसिला शुरू हो जाता है। ये तीनो अलग अलग घटनाएं कैसे एक दूसरे से जुडी हुई है। इन्ही सब हैरत अंगेज़ पहेलियों का ताना बाना है ये रोमांचकारी उपन्यास -**दी इंटर्न** - थ्रिलर मर्डर मिस्ट्री ।

आप इस उपन्यास के बारे में अपने सुझाव मुझे मेरे इंस्टाग्राम (imnish1992) या मेरे यूट्यूब चैनल (Nisha Shastry Audiostories) पर कमेंट करके अवश्य बतलायें।

मेरे साइंस फिक्शन उपन्यास की तरह यहाँ भी मैंने हिंगलिश का ही इस्तेमाल करने की स्वंतंत्रता ले ली है जिससे ना सिर्फ मौलीक रुप से हिंदी भाषी इसे समझे अपितु सभी लोग इसका पूरा आनंद ले सके।

आशा करती हूँ आप लोगों को मेरा यह प्रयास पसंद आएगा

सादर प्रणाम !

निशा

CHURCHILL ROOM – HOUSE OF COMMONS, UK – PALACE OF WESTMINSTER (OCT 3, 2023)

चरित्र परिचय

इस रोमांचकारी उपन्यास के मुख्य किरदार हैं : -

अमरीक	क्राई का इंटर्न जिसके क्राई में आते ही अनेकों खून शुरु हो गए
वास्को	क्राई कंपनी का मालिक
प्रोफेसर राजन शर्मा	जिसने कैंसर का परमानेंट क्योर ढूंढ लिया था और जिसकी हत्या हो गई थी
इंस्पेक्टर राजवीर	मैन इंवेस्टिगेटिंग ऑफिसर
श्रद्धा	वास्को की एजेंट जो उस तक सारी ख़बरें पहुंचाती थी
नरेश	क्राई का चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर
प्रथमेश	क्राई की विरोधी कंपनी मूनस्टोन फार्मा का मालिक
अभिषेक	मूनस्टोन फार्मा का प्रेजिडेंट
सावित्री	अभिषेक की पत्नी
ACP माधव	राजवीर का बॉस
ऋतू	क्राई की मैनेजर जिसके अंडर में अमरीक इंटर्नशिप कर रहा था
रेनू	क्राई की रिसेप्शनिस्ट
सत्या	क्राई का स्टोर मैनेजर
जयेश	राजन शर्मा का बेटा

नरेंद्र मीणा	जयेश का प्रोफेसर
कालिया	मुंबई का खतरनाक डॉन जिसके लोगों की हत्या हो जाती है और शक के दायरे में इंटर्न अमरीक था
काला मास्कधारी	वो आदमी जिसने कथित रुप से राजन शर्मा की हत्या की थी
अमरीक के दादा दादी	इंस्पेक्टर राजवीर ने अमरीक के दादा दादी को ढूंढ लिया था और उनके जरिये अमरीक की सच्चाई जानना चाहता था
कुंवर सिंह	पुलिस सब-इंस्पेक्टर जो इंस्पेक्टर राजवीर की मदद कर रहा था
रामलाल	ACP माधव का ड्राइवर

अध्याय 1

राजन इतना तेज कभी भी नहीं भागा था। शायद उसके जीवन की ये सबसे तेज दौड़ थी। उसे पता ही नहीं लगा कि वो इस तकरीबन डेढ़ किलोमीटर की दौड़ में चीते से भी तेज भाग लिया था। शायद जब मौत को कोई सामने देख ले तो वो ऐसे ही पागल हो जाता है। रात बहुत ही गहरी थी और सुनसान सड़क जहाँ साधारणतया आवारा कुत्तों की फ़ौज रहती थी, परन्तु आज वहाँ कोई नहीं था, शायद उन जानवरों को भी पता था कि जो राजन को जान से मारने की कोशिश कर रहा था वो इतना भयावय था कि उससे दूर रहने में ही उनकी भलाई थी।

राजन बमुश्किल उस मल्टी-स्टोरी मॉल के ग्राउंड फ्लोर पर किसी तरह से घुस पाया था और किसी रुम में, जो शायद किसी कंपनी का स्टोर रुम था, छुप कर इस रात की सुबह होने का इन्तजार कर रहा था।

राजन को पता ही नहीं चला कब और कैसे इतना क्रूर कातिल उसके घर में घुस आया था। राजन की किस्मत अच्छी थी कि जब उस कातिल ने राजन पर पिस्तौल की बट से हमला किया तो राजन जमीन पर गिर कर बेहोश होने का नाटक अच्छे से निभा पाया। उस कातिल का इंटरेस्ट न तो राजन के पैसे में था और न ही किसी और चीज में, उसे सिर्फ राजन का लैपटॉप और उसकी रिसर्च से सम्बंधित नोट्स और पुस्तकों में ही रुचि थी। उस क्रूर गुंडे को क्या इतनी जटिल थीसिस समझ भी आएगी

और इसका एक ही मतलब था कि कोई और इस गुंडे के जरिये राजन की रिसर्च हासिल करने की कोशिश कर रहा था। राजन को पता था कि वो कौन था। राजन इसी उधेड़बुन में था जब उसने देखा कि कातिल ने उसकी तरफ पिस्तौल तान दी थी और उसे मारने ही वाला था, तब अचानक से राजन ने वो कालीन खींच दी जिस पर वो कातिल खड़ा था। इससे पहले वो दुष्ट उठता राजन खिड़की से बाहर कूद कर अपनी जीवन की सबसे तेज दौड़ लगा चुका था।

उसने अपने जीवन के पचास वर्षो में शायद ही कभी इतनी तेज दौड़ लगाई हो परन्तु शायद ये उसके कुछ अच्छे कर्म ही होंगे की आज वो इस गति से भाग पाया और अपनी जान उस अति क्रूर और खौफनाक व्यक्ति से बचा पाया।

राजन को इंतज़ार था बस सुबह होने का। धीरे धीरे उस अँधेरे कमरे में उसकी आँखे अभ्यस्त होने लगी थी। वो मॉल का स्टोर रूम था जहाँ अनेकों बॉक्स पड़े हुए थे। राजन की सांस में सांस आ रही थी और धीरे धीरे उसकी धड़कने सम्भल रही थी। उसकी किस्मत उस पर आज कुछ ज्यादा ही मेहरबान थी। उस बंद मॉल के अँधेरे स्टोर रूम में उसे एक छोटा नोकिआ का फ़ोन दिख गया। शायद किसी कर्मचारी का फ़ोन आज वहाँ रह गया था। राजन ने फॉरेन उस फ़ोन को अपने हाथों में उठा लिया। उसकी उत्सुकता ऐसी थी मानो किसी बहुत ही प्यासे व्यक्ति के सामने किसी ने शीतल जल रख दिया हो।

राजन को वो नोकिआ का छोटा फोन लाखों रुपए के स्मार्टफोन से भी महंगा लग रहा था। राजन के लिए उसके देवदूत द्वारा भेजा गया उसकी मुक्ति का साधन था।

राजन ने फॉरेन 100 नंबर लगाया परन्तु फिर काट दिया। उसे एक अलग सा ही संशय होने लगा। उसके घर में उस अनजान कातिल का आ जाना जिसे उसकी रिसर्च में इंटरेस्ट हो, उसे किसी बहुत ही बड़े षड़यंत्र की बू आने लगी थी। हो सकता है लोकल पुलिस का कोई आदमी भी मिला हुआ हो, और वो खुद ही कहीं पुलिस को अपनी लोकेशन बता कर उस कातिल को अपने तक पहुँचने में मदद कर दे। फिर उसे लगा ये वो क्या सोच रहा था। वो कुछ ज्यादा ही एनालिसिस करने लग गया था।

राजन को समझ नहीं आया कि वो क्या करे। तभी राजन को अपने पुत्र का ख्याल आया। उसका पुत्र दिल्ली में पढ़ रहा था। राजन ने अपने पुत्र को फोन लगाया। इस समय रात के दो बज रहे थे। राजन के पुत्र ने फोन नहीं उठाया था। राजन ने फिर फोन मिलाया और इस बार उसके बेटे ने फोन उठा लिया था।

‘हेलो,’ राजन के बेटे ने उबासी लेते हुए बेमन से बोला।

‘बेटा मैं पापा बोल रहा हूँ।’ राजन ने हांफते हुए बोला।

‘पापा, ये आपका कौनसा नंबर है।’

‘बेटा ये मेरा नंबर नहीं है।’

‘तो फिर‘ राजन के बेटे को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि रात के दो बजे उसके पिता उसके साथ क्या खेल रहे थे।

‘बेटा, आज जब मैं अपनी रिसर्च कर रहा था तब अचानक मेरे घर में एक छह फुट लम्बा काले वस्त्रो में घिरा हुआ मास्कधारी व्यक्ति घुस आया।’

‘क्या‘ राजन के बेटे की नींद उड़ गयी। उसके पिता मुंबई में थे और अकेले थे।

‘हाँ और मैं अपने लैपटॉप पर काम कर रहा था उसने मेरे को पीछे से पिस्तौल के बट्ट से मारा। मैंने बेहोश होने का नाटक किया। मैंने देखा वो मेरा लैपटॉप, रिसर्च पेपर्स, और जो भी कुछ मेरी टेबल पर था सब कुछ समेट रहा था।’

‘क्या, उसको आपकी रिसर्च के बारे में पता है। आपने तो मुझे भी ज्यादा कुछ नहीं बता रखा।’

‘हाँ बेटा। लगता है उसको किसी ऐसे व्यक्ति ने भेजा है जिसे मेरी रिसर्च के बारे में पता है।’

‘आपकी रिसर्च तो‘ राजन का बेटा अपना वाक्य पूरा करता उससे पहले राजन बोला,

‘तुम ज्यादा मत बोलो और मैंने तुम्हें जो किताब दी है उसके पन्ने 15, 21, 28, 35 और 41 के पहली तीन लाइन पढ़ लो।’

राजन का बेटा समझ गया था कि राजन क्या कहना चाह रहा था। उसे पता था कि राजन को ये डर हमेशा से था कि उसकी रिसर्च को कोई भी चुरा सकता था इसलिए उसने अपने पुत्र के पास एक कोड रखा हुआ था। बिना उस कोड के उसके लैपटॉप में से वो सेंसिटिव डिटेल्स नहीं निकाले जा सकते थे और बहुत ही कम लोगों को उसके बारे में पता था।

‘बस एक बात समझ नहीं आयी पापा’ राजन का बेटा बोला।

‘यही कि मैंने तो अपनी रिसर्च ख़त्म कर ली है फिर अब हमला क्यों’ राजन बीच में बोला।

‘नहीं पिता जी, हमला तो अब ही होना था परन्तु उसने....’ राजन का बेटा अपना वाक्य पूरा करता उससे पहले ही फोन कट गया था।

राजन ने देखा वो फोन डिस्चार्ज हो चुका था। शायद दिन भर से वो फोन वही पड़ा था और उसकी बैटरी ख़तम होना लाज़मी थी ।

राजन को समझ नहीं आ रहा था कि उसने पुलिस को फोन नहीं करके कहीं गलती तो नहीं कर दी थी।

उसने उस फोन को वही पर रख दिया जहाँ से उठाया था और धीरे धीरे उस स्टोर रूम से बाहर निकल आया।

उसकी आँखे अब रात के अँधेरे में अभ्यस्त हो गयी थी। परन्तु शायद तेज भागने के कारण या बहुत ज्यादा डर के कारण उसकी साँसे अब उखड रही थी। उसे उस अँधेरे बंद मॉल में डर लगने लग गया था। वो पसीने पसीने हो रहा था। अचानक से ही उसकी तबियत बिगड़ गयी थी।

उसे उस मॉल से निकलना होगा। वैसे भी वो मौत का दूत अब तक चला गया होगा। वो धीरे धीरे मॉल से बाहर आ गया।

राजन उस अँधेरी रात में उस सुनसान रस्ते पर अकेला खड़ा था। तभी राजन के कंधे पर किसी ने हाथ रखा, राजन की रूह कांप गयी परन्तु वो धीरे धीरे पीछे मुड़ा।

वो छह फुट लम्बा काले कपड़ो में काला मास्कधारी व्यक्ति खड़ा था। राजन ने मॉल से बाहर आकर बहुत बड़ी गलती कर दी थी। शायद उसे उसके भाग्य ने मौका दिया भी था परन्तु वो उस मौके को भुना नहीं पाया। उसने अपने पुत्र से बात करने के बजाय पुलिस को बुला लिया होता तो शायद अच्छा रहता।

अध्याय 2

राजवीर आज बहुत उदास था और उसका दिन आज कोर्ट में बहुत ही बुरा गया था। वो बहुत ही ग़मगीन अंदाज़ में इंद्रापूरी पुलिस स्टेशन में घुसा और अनेकों हवलदारों के सैलूट को अनदेखा कर अपने केबिन में अपनी कुर्सी पर बैठ गया। वो इस थाने का न ही सिर्फ इंचार्ज था अपितु मुंबई पुलिस में सबसे काबिल इंस्पेक्टर और ऑफिसर्स में शामिल था परन्तु फिर भी उसने अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण साथी को खो दिया था। उसकी पत्नी उसकी पहली मोहब्बत उसे आज छोड़ कर चली गयी थी। उनका डाइवोर्स (divorce) केस वैसे तो तीन साल से चल रहा था परन्तु आज उस पर कोर्ट की मोहर लग चुकी थी और राजवीर की आखरी उम्मीद भी ख़त्म हो चुकी थी। उसे कभी यकीन ही नहीं हुआ कि उसकी पत्नी उसको कभी समझ क्यों नहीं पायी। मुंबई पुलिस का होनहार इंस्पेक्टर जिसकी इज्जत पूरा डिपार्टमेंट करता था अपनी पत्नी को कभी नहीं समझा पाया कि वो उसके साथ क्यों नहीं रह पाया। उन छोटी छोटी खुशियों में उसका साथ नहीं दे पाया जिसकी वो अपने पति से उम्मीद करती थी। धीरे धीरे उनका फासला इस कदर बड़ा हो गया की आखिर उनका रिश्ता कोर्ट में सार्वजनिक रूप से शर्मसार हुआ।

राजवीर की उस उदासी को उसके एक हवलदार ने तोड़ा।

‘सर आपके लिए ACP साहब का फोन आया था।’ हवलदार बोला।

‘क्या बोल रहे थे वो‘ राजवीर बोला। हालाँकि उसका ज्यादा ध्यान नहीं था। वो अपने ही ख्यालो में खोया हुआ था।

‘सेंट्रल सिटी हॉस्पिटल में आज एक आदमी हार्ट अटैक से मर गया है।’ हवलदार बोला।

‘तो ये कोई पुलिस केस नहीं है।’ राजवीर झिल्लाते हुए बोला।

‘हाँ सर, परन्तु ACP सर बोले कि आप एक बार चेक कर ले। उस बन्दे को कोई भी लेने नहीं आया‘ हवलदार बोला।

‘यार ये क्या बात हुई।’ राजवीर गुस्से से बोला। उसके सामने हवलदार का डरा हुआ चेहरा था। राजवीर फिर खुद से ही बोला ‘ठीक है मैं चला जाऊंगा।’

राजवीर बेमन से उठा और धीरे धीरे अपनी महिंद्रा थार पुलिस जीप की ओर बढ़ गया। उसे नहीं पता था कि वो किसी ऐसे केस पर काम करने जा रहा था जो उसके जीवन का सबसे अनोखा केस होने वाला था।

राजवीर जल्द ही सेंट्रल सिटी हॉस्पिटल पहुँच गया और उस हॉस्पिटल की मोरचुअरी (mortuary) में उसे वो लाश दिख गयी। वो किसी पचास वर्षीय आदमी की थी और ऐसा लग रहा था कि उसकी मौत कुछ सात आठ घंटे पहले हुई हो। जल्द ही वो डॉक्टर वहाँ आ गया जो उस केस को हैंडल कर रहा था।

‘सर दो लड़के इस आदमी को लेकर हमारे हॉस्पिटल में सुबह छह बजे के करीब आये थे। उन्हें ये सड़क पर मिला था।’

राजवीर ने उस आदमी को गौर से देखा।

‘शायद ये आदमी कुछ बहुत तेज़ और बहुत लम्बे समय तक बिना रुके भागा, जिससे इसके शरीर पर बहुत अधिक दबाव पड़ा। शायद ये ट्रेंड एथिलीट भी नहीं था इसलिए इसके हार्ट पर जरुरत से ज्यादा जोर पड़ा और हार्ट फ़ैल हो गया।‘

राजवीर डॉक्टर की बात काटते हुए बीच में बोला, ‘समझ गया। परन्तु कौन है ये आदमी तुम्हें पता है।’

‘नहीं‘

‘वो दो आदमी कहाँ है जो इसे छोड़ कर गए।’ राजवीर ने पूछा।

‘वो तो चले गए। हालाँकि उनकी डिटेल्स हैं मेरे पास।’ डॉक्टर बोला।

‘ठीक है मुझे उनका नंबर दे दो और इस आदमी का फोटो। मैं अख़बार में दे देता हूँ यदि कुछ दिनों में कोई लेने नहीं आता तो...’

इस बार डॉक्टर राजवीर की बात काटते हुए बोला,

‘तो इसी हॉस्पिटल को ये बॉडी हैंड ओवर (hand over) हो जाएगी फॉर टीचिंग पर्पस (for teaching purpose)।’

राजवीर ने हामी में सर हिलाया।

राजवीर ने फिर अपने ACP को फोन लगाया और अपडेट दे दी। राजवीर ने कल्पना भी नहीं की थी कि ये लाश जो उसने अभी देखी थी और जिसे वो एक साधारण केस समझ रहा था वो प्रोफेसर राजन शर्मा की लाश थी और ये केस बहुत खतरनाक मोड़ लेने वाला था। राजवीर अपनी जीप ड्राइव करके अपने घर चला गया। वो अभी किसी भी तरह पुलिस स्टेशन जाने की मनस्थिति में नहीं था। वैसे भी शाम हो चली थी।

उसने रास्ते में रुक कर अपने एजेंट को उस लाश की फोटो दे दी थी ताकि वो उसे सुबह के अख़बार में छपवा सके। राजवीर चुपचाप अपने घर आ गया था। उसे वो घर काटने को दौड़ रहा था और राजवीर ने अपनी पत्नी की याद भुलाने के लिए रॉयल चैलेंज की एक बोतल खोली और एक बड़ा पेग बना के पीने लगा। शायद ये व्हिस्की ही उसे सहारा दे पाए। उसकी पत्नी अक्सर उसे शराब पीने के लिए मना करती थी। परन्तु आज इस घर में कोई नहीं था जो उसे मना करे। धीरे धीरे उसने पूरी बोतल पी ली थी। उसको अभी भी नशा नहीं हो रहा था। उसकी पत्नी ही उसके सामने बार बार आ रही थी। उसकी वो मुस्कान और अदाएँ राजवीर को अब किसी सजा की तरह लग रही थी। राजवीर उठा और उसने एक और रॉयल चैलेंज की बोतल खोल ली। वो उस बोतल को भी तकरीबन पूरी ही पी गया। उसको नशे में पता ही नहीं चला कि कब वो सोफे पर बैठे बैठे अपनी पत्नी की यादों में सो गया।

राजवीर का ध्यान उस कर्कश फोन की ध्वनि ने तोडा जो उसके लैंडलाइन फोन से बज रही थी। उस समय सुबह हो चुकी थी और राजवीर ने फोन उठाया। दूसरी ओर वो सेंट्रल सिटी हॉस्पिटल का डॉक्टर था।

‘राजवीर सर‘ डॉक्टर बोला।

‘क्या हुआ इतनी सुबह फोन कर रहे हो‘ राजवीर ने उबासी भरते हुए पूछा।

‘सर दोपहर के दो बज रहे है।’ डॉक्टर बोला।

‘क्या मुझे समय बताने के लिए फोन किया है।’ राजवीर गुस्से से बोला।

‘सर आपने वो लाश कल देखी थी ना।’ डॉक्टर बोला।

‘हाँ‘

‘वो लाश आज गायब हो गयी है।’

‘क्या‘ राजवीर का सारा नशा एक दम से गायब हो गया।

‘सही में सर‘

‘क्या बकवास कर रहे हो।’ राजवीर बोला।

‘सर आप यहाँ आकर खुद देख लो।’

राजवीर को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि उस मृतक को कोई लेने नहीं आया परन्तु वो लाश गायब हो गई थी। आज के ही तो अख़बार में उसने खबर छपवाई थी और दोपहर तक लाश को कोई बिना बताये लेकर चला गया।

राजवीर तैयार होकर फॉरेन अस्पताल पहुँच गया और उसने जल्द ही पता लगा लिया कि मोरचुअरी में कोई CCTV कैमरा नहीं था और जिन दो लोगों ने अपने नंबर दिए वो फेक नंबर थे।

इसका मतलब साफ़ था ये कोई बहुत ही बड़ा षड़यंत्र था। राजवीर को अब जल्दी ही ऐसी घटनाओं की आदत डाल लेनी पड़ेगी क्योंकि मुंबई शहर में अब ऐसी घटनाएं आम होने वाली थी। कौन था ये प्रोफेसर राजन शर्मा और क्या थी उसकी रिसर्च। कौन था वो काला मास्कधारी आदमी? राजवीर को नहीं पता था कि जिस समय उसकी तीव्र बुद्धि और पैनेपन की पुलिस को सबसे ज्यादा आवश्यकता थी उसी समय वो अपनी पत्नी के वियोग में अपनी सभी कलाएं और कुशाग्रता भूल बैठेगा।

अध्याय 3

कैम्ब्रिआ रिसर्च इंस्टिट्यूट या CRI (क्राई) की वो बिल्डिंग वर्ली की सबसे बड़ी और बेहद खूबसूरत बिल्डिंगों में से एक थी। क्राई हिंदुस्तान की ही नहीं अपितु विश्व की नामी कंपनियों में से थी जिसने कैंसर का अस्थायी इलाज ढूंढ लिया था और अब वो इसको जड़ मूल से ख़तम करने का उपाय खोज रहे थे। क्राई की कैंसर की ड्रग कैंसर पेशेंट को दो से तीन वर्ष तक का समय दे देती थी और कई बार तो कैंसर पेशेंट स्टेज थ्री पर पहुँच कर भी क्राई की कैंसर ड्रग्स के कारण पांच से दस वर्ष तक निकाल लेता था।

वो अलग बात थी कि क्राई के इस ड्रग को अफ़्फोर्ड करना गरीब लोगों के लिए आसान नहीं था परन्तु केंद्र तथा राज्य सरकारों ने भारी मात्रा में ये ड्रग क्राई से लिए थे और उन्हें सब्सिडाइज (subsidize) करके गरीबो को पहुँचाया था।

क्राई की इस खूबसूरत बिल्डिंग के रिसेप्शन पर आज अमरीक पहली बार आया था।

'यस, हाउ मे आई हेल्प यू? (Yes, how may I help you?)' रिसेप्शनिस्ट ने बहुत ही मृदु भाव से पूछा।

'जी मैं यहाँ इंटर्नशिप करने के लिए आया हूँ। मैंने ऑनलाइन अप्लाई किया था और मैं सेलेक्ट हो गया हूँ। ये रहा मेरा लेटर।' अमरीक

जल्दी जल्दी बोला और उसने एक फोल्डर में से एक लेटर निकाल कर रिसेप्शनिस्ट को दे दिया।

'ओके, लेट मी चेक। (Ok. Let me check.)' रिसेप्शनिस्ट बोली और अपने कंप्यूटर पर कुछ चेक करने लगी।

रिसेप्शनिस्ट ने अमरीक को नज़र भर देखा और बोला, 'आप प्लीज सोफे पर बैठे मैं चेक कर के आपको बताती हूँ '

रिसेप्शनिस्ट ने सोफे की ओर इशारा किया और अमरीक हामी में सर हिला कर चुपचाप सोफे पर जाकर बैठ गया।

वो बहुत ही बड़ा ऑफिस था और कई लोग वहाँ आ जा रहे थे। अमरीक पहली बार इतने बड़े ऑफिस में आया था।

रिसेप्शनिस्ट ने अपने इण्टरकॉम में किसी को फोन लगाया और वो जल्दी ही आंसर (answer) हो गया।

'ऋतू मैंम' रिसेप्शनिस्ट फोन पर बोली।

'यस रेनू' ऋतू बोली।

'मैंम कोई अमरीक अवस्थी करके कैंडिडेट आया है, कह रहा है कि इंटर्न के लिए सेलेक्ट हुआ है।' रेनू बोली।

'हाँ भेज दो 14th फ्लोर पर।' ऋतू बोली।

'पर मैंम' रेनू थोड़ा हिचकी।

'मुझे पता है रेनू ये तीस साल का है परन्तु ये बहुत ही काबिल है। इसने बायो टेक्नोलॉजी में इंजीनियरिंग की है परन्तु इसने हमारा फार्मा

क्विज ऑफ़ ईयर वाला एग्जाम टॉप किया है और जहाँ बाकि लोग पांच लाख का कैश इनाम चाहते इसने हमसे रिक्वेस्ट की इस इंटर्नशिप के लिए, और तुम्हें पता है वास्को चाहे दुनियाँ के नंबर वन अमीरों में से हो परन्तु पांच रुपया भी बचता है, तो पांच लाख के बदले दो महीने की इंटर्नशिप, क्या बुरा है।’

‘ठीक है, ऋतू मैम मैं इसे 14th फ्लोर पर भेजती हूँ।’

रेनू ने इशारा कर के अमरीक को बुलाया और उसे एक टेम्पररी आई डी (ID) कार्ड दिया और बोला ‘ये तुम्हारा आई डी (ID) कार्ड है जिसे तुम्हें दो महीने तक संभाल के रखना है। इसी को दिखा कर तुम्हें चौदहवें फ्लोर पर एंट्री मिलेगी। सामने लिफ्ट है कार्ड टेप (tap) करो और चौदहवां फ्लोर दबाओ। वहाँ ऋतू मैम तुम्हें समझा देंगी आगे क्या करना है।‘

अमरीक चुपचाप लिफ्ट के पास चला गया। वहाँ पांच लिफ्ट थी और एक लिफ्ट अभी अभी ग्राउंड फ्लोर पर आयी थी परन्तु अमरीक उसमे नहीं गया और उस पांचवी लिफ्ट का इंतज़ार करने लग गया। थोड़ी देर में ही वो पांचवी लिफ्ट भी ग्राउंड फ्लोर पर आ गयी और उसमे से वास्को - क्राई का मालिक निकला और उसके साथ उसके दो बॉडी गार्ड भी थे। अमरीक लपक कर उस लिफ्ट के अंदर घुसा परन्तु वहाँ एक लिफ्ट मैन था जो सिक्योरिटी गार्ड की ड्रेस पहने था और उसके पास गन भी थी।

‘तुम कौन हो।’ उस लिफ्ट मैंन कम सिक्योरिटी गार्ड ने पूछा। उसका हाथ अनायास ही अपनी गन की ओर चला गया।

इससे पहले अमरीक कुछ बोलता वहाँ रेनू - रिसेप्शनिस्ट भागती हुई आ गयी।

‘ये इंटर्न है आज पहला दिन है‘ रेनू बोली।

‘सॉरी मेरे से कुछ गलती हुई क्या’ अमरीक बोला वो काफी घबराया हुआ था।

‘इस लिफ्ट का प्रयोग केवल प्रमोटर फॅमिली करती है।’ गार्ड गुस्से में बोला।

‘हाँ अमरीक आप को बाकि चार में से कोई लिफ्ट लेनी होगी। ये लिफ्ट आपके लिए नहीं है।’ रेनू बोली और हाथ खींच कर अमरीक को बाहर निकाल लिया।

‘सॉरी मुझे पता नहीं था।’

‘कोई बात नहीं‘ गार्ड बोला और चुपचाप लिफ्ट बंद करके लिफ्ट को ऊपर ले गया।

‘मैंने देखा तुमने वो लिफ्ट जानबूझ कर ली थी।’ रेनू ने अमरीक की ओर देखा और गुस्से से बोली।

‘इसलिए तुम भागते हुए आयी।’ अमरीक ने रेनू को आँख मारते हुए बोला।

‘तुम अपने आप को जितना स्मार्ट समझते हो उतने हो नहीं। तुम्हारा पहला दिन है और मुझे पता चला है की तुम कोई टॉपर वोपर हो

इसलिए ये पहली गलती माफ़। आगे से कोई ओवर स्मार्टनेस मत दिखाना।' रेनू गुस्से से बोली।

'ठीक है। वैसे मैंने पिछली लिफ्ट जानबूझ कर नहीं अपितु गलती से मिस कर दी थी। मेरा पहला दिन है तो मैं अपने ख्यालो में था कि मुझे ऋतू मैम को क्या बोलना है।' अमरीक बोला।

'मान लिया।' रेनू बोली। तब तक एक और लिफ्ट आ चुकी थी और रेनू ने अमरीक को उस लिफ्ट में जाने का इशारा कर दिया।

अमरीक उस लिफ्ट में चला गया और अपने आई डी (id) कार्ड को टेप (tap) करके चौदहवां नंबर का बटन दबा दिया।

वो कुछ सेकण्ड्स में ही चौदहवें फ्लोर पहुँच चुका था।

वो एक बहुत ही आलीशान फ्लोर था। अमरीक लिफ्ट से निकला और उसका स्वागत एक कांच के दरवाजे ने किया। अमरीक ने अपना आई डी (id) कार्ड टेप (tap) किया और वो ग्लास डोर (glass door) खुल गया। अमरीक अंदर गया और वहाँ अनेकों डेस्क थी और हर डेस्क पर बहुत से कर्मचारी। वहाँ अनेक केबिन भी थे और उसमे से एक बहुत ही बड़े केबिन पर नरेश खट्टर लिखा हुआ था। अमरीक को समझ आ गया इस कंपनी में नरेश खट्टर कोई बहुत बड़ा आदमी था। इससे पहले वो और कुछ सोचता एक आवाज़ ने उसका ध्यान आकर्षित किया।

'आर यु अमरीक (Are you Amrik)'

उसके सामने एक नौजवान स्त्री खड़ी थी। वो गौर वर्णी थी और उसने वाइट शर्ट और ब्लैक पैंट पहनी थी और साथ ही ब्लू कलर का ब्लेजर पहन रखा था। उसकी हील कुछ ज्यादा ही लम्बी थी इस लिए वो लम्बी लग रही थी परन्तु उसकी हाइट कुछ पांच फुट दो इंच से ज्यादा नहीं होगी।

‘यस मैम‘ अमरीक उसको देख कर बोला।

‘मेरा नाम ऋतू है, तुम मेरी ही टीम में हो।’ ऋतू ने अमरीक को देखा और बोली।

‘थैंक्स मैम‘ अमरीक बोला।

‘तुम मेरे साथ आओ।’ ऋतू बोली।

अमरीक ऋतू के पीछे पीछे गया और ऋतू उसे नरेश खट्टर के केबिन में ले गयी।

ऋतू ने केबिन को बाहर से दो बार नॉक किया और केबिन का गेट खोल कर बोली, ‘में वी कम इन (May we come in)’

नरेश ने हाथ से इशारा किया और उन दोनों को अंदर आने के लिए कहा।

वो केबिन बहुत ही बड़ा था और वहाँ सामने टीवी लगा हुआ था और एक बहुत बड़ा सोफा और नरेश की टेबल के सामने बैठने के लिए तीन कुर्सियां थी।

अमरीक एक कुर्सी पर आराम से बैठ गया।

‘अमरीक ये नरेश सर इस कंपनी के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर - इस कंपनी का इंडिया और ओवरसीज सभी का पूरा ऑपरेशन्स नरेश सर संभालते है।’ ऋतू बोली।

‘गुड मॉर्निंग सर‘ अमरीक नरेश को देख कर बोला।

‘वेल अमरीक तुमने क्राई, जो कि एक फार्मा कंपनी है, उसमें इंटर्नशिप को क्यों चुना। तुम तो बायोटेक्नोलॉजी में इंजीनियर हो किसी भी कंपनी में तुम्हें जॉब मिल जाता।’ नरेश बोला।

‘सर क्राई ड्रीम कंपनी है। मैं चाहता हूँ इन दो महीनो में मैं आपको मेरे काम से इतना इम्प्रेस कर दूँ कि आप मुझे जॉब ऑफर कर दें।’

‘इंटरेस्टिंग‘ नरेश बोला।

‘तुम तीस साल के हो तो तुम्हें अभी तक कोई जॉब क्यों नहीं मिला।’ नरेश थोड़ा संषित होते हुए बोला।

‘सर मैंने बायो टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग करने के बाद अपना एक स्टार्ट अप (start up) खोला परन्तु मेरा बिज़नेस फ़ैल हो गया। फिर मैं जॉब ढूंढ ही रहा था कि आपका एडवरटाइसमेन्ट (advertisement) आया और मैंने सोचा क्यों न मैं ये क्विज (quiz) कम्पटीशन जीतूं और बस मैंने वो जीता और इंटर्नशिप मिल गयी।’

‘तुम बहुत ही इंटरेस्टिंग करैक्टर हो।’

‘थैंक्स सर‘ अमरीक बोला।

‘ऋतू इसे काम सीखा दो एंड मुझे एक हफ्ते में रिपोर्ट दो।’ नरेश बोला।

ऋतू ने हामी में सर हिला दिया। दोनों वहाँ से उठ खड़े हुए और जल्द ही ऋतू की डेस्क पर पहुँच गए।

‘तुम्हें हमारे इनवॉइस प्रोसेस करने है।’ ऋतू बोली।

‘क्या मैं आपके स्टोर में दवाइयों की एकाउंटिंग देखूँ।’ अमरीक बोला।

‘तुम अपनी मर्जी से काम चुनोगे।’ ऋतू गुस्से में बोली।

‘नहीं मेरा वो मतलब नहीं था।’ अमरीक बोला।

‘देखो अमरीक तुम इंटेलीजेंट होगे परन्तु यहाँ तुम मेरे इंटर्न हो और मैं जो बोलू वो ही करो।’ ऋतू ऊँचे स्वर में बोली।

‘ठीक है मैम‘ अमरीक बोला।

ऋतू ने फिर कंप्यूटर पर अमरीक को क्या काम करना था बता दिया और उसे एक जगह पर बैठा दिया।

ऋतू ने रेनू को अपने इण्टरकॉम से फोन किया और बोला ‘तुम इस इंटर्न का आज का खाना मंगवा दो।’

‘ठीक है ऋतू मैम, परन्तु वैसे वो कैंटीन में खाना खा लेगा’ रेनू रेसप्शनिश बोली।

'हाँ परन्तु आज मैं उसे ऑब्ज़र्व (observe) करना चाहती हूँ इसलिए उसके डेस्क पर ही उसे खाना दे दो, मुझे ये कुछ ओवर स्मार्ट लग रहा है।'

'वो तो है। मैंने देखा वो जानबूझ कर वास्को सर की लिफ्ट में घुस गया था।' रेनू बोली।

'क्या' ऋतू ने अनायास ही बोला। वो अपनी डेस्क से खड़ी हुई और दूर बैठे अमरीक को देखा वो अपने कंप्यूटर पर कुछ काम कर रहा था।

'हाँ मैम ये कुछ गड़बड़ करैक्टर लग रहा है।' रेनू बोली।

'कोई नहीं मैं देखती हूँ। तुम उसका और मेरा खाना मंगवा दो आज हम दोनों लंच अपनी डेस्क पर साथ में करेंगे।' ऋतू बोली और उसने फोन काट दिया।

ये अमरीक कुछ ज्यादा होशियार बनने की कोशिश कर रहा था। ऋतू को पता था कि उसे इस पर नज़र रखनी है।

अध्याय 4

राजवीर अचंभित था कि वो गायब हुई लाश किसकी थी। वो फॉरेन अपने साइबर सेल के पास पहुँच गया। उसके सामने एक सताइस अठाइस वर्षीय पुलिस का जूनियर अफसर बैठा हुआ था।

‘क्या तुम मुझे इस आदमी के बारे में कुछ बता सकते हो।’ राजवीर ने पूछा।

‘सर इस तस्वीर के अलावा आपके पास और कोई जानकारी है।’ उस जूनियर अफसर ने पूछा।

‘नहीं मेरे पास बस यह तस्वीर ही है।’ राजवीर बोला।

‘मैं कोशिश करता हूँ। क्योंकि यदि ये मृतक कोई बहुत फेमस नहीं हुआ तो केवल इस फोटो से कुछ नहीं हो सकता।’ जूनियर बोला।

‘मुझे पता है। वो बॉडी गायब कैसे हो गयी समझ नहीं आ रहा। इस सिटी हॉस्पिटल का न तो CCTV काम करता है न ही यहाँ पर कोई सिक्योरिटी है।‘ राजवीर बोला।

‘सर सिटी हॉस्पिटल के सामने एक रेस्टॉरेंट है वहाँ का CCTV देख लीजिये।‘ जूनियर बोला।

‘मैंने वो सब पता कर लिया है, वो CCTV केवल एक ही एंट्रेंस कवर करता है। हॉस्पिटल में आने जाने के तीन एंट्रेंस हैं।’ राजवीर बोला। उसके स्वर में उदासी थी।

‘सर फिर इस फोटोग्राफ से कुछ भी निकालना बहुत ही मुश्किल होगा। परन्तु आप मुझे दे दीजिये मैं नेट में सर्च करता हूँ यदि इसने कोई सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाया होगा जैसे फेस बुक, इंस्टाग्राम आदि तो शायद कुछ कनेक्ट मिले।’ जूनियर बोला।

‘इसको देख कर लगता नहीं की ये सोशली एक्टिव (socially active) होगा। परन्तु तुम चेक कर लो।’ राजवीर बोला।

राजवीर उस साइबर सेल ऑफिस से निकल कर बाहर आ गया। उसको उसी दिन उस लाश को फॉरेंसिक के लिए भेज देना चाहिए था। राजवीर की लापरवाही उसे अब सता रही थी। उस दिन हालाँकि वो बेहद दुखी था परन्तु ड्यूटी कम्स फर्स्ट (duty comes first)।

राजवीर अपनी जीप में बैठ कर इन्दर पूरी पुलिस स्टेशन आ गया था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वो लाश कहाँ गायब हो गयी थी। हालाँकि उसे कुछ पूर्वाभास हो रहा था कि वो आदमी किसी बहुत ही बड़े षड़यंत्र का हिस्सा रहा होगा जिसे किसी ने दौड़ा दौड़ा कर मार डाला था।

राजवीर जो नहीं जानता था, वो ये था कि वो लाश प्रोफेसर राजन शर्मा की थी, जिसने अपने जीवन में कई खोज की थी और उसकी सबसे बड़ी खोज ही उसकी मौत का कारण बन गयी थी।

राजवीर राजन की फोटो को अपने फोन में घूर ही रहा था और सोच रहा था कि ये कौन हो सकता है तभी उसके मोबाइल फोन की घंटी बजी। वो फोन ACP माधव का था।

‘यस सर‘ राजवीर बोला।

‘राजवीर तुम्हें फॉरेन क्राई की बिल्डिंग में पहुंचना है।’

‘क्या हुआ सर‘

‘वहाँ एक मर्डर हुआ है, फॉरेन वर्ली पहुंच जाओ।’

‘सर परन्तु वो मेरा एरिया नहीं है।’ राजवीर बोला।

‘मुझे पता है परन्तु तुम अभी वहाँ पहुंचो मैं तुम्हें एडिशनल परमिशन भेज रहा हूँ।’ ACP ने बोला और फोन काट दिया।

राजवीर को समझ नहीं आ रहा था कि ACP उसे ही क्यों इन सब अजीबो गरीब केस पर भेज रहा था। पहले एक व्यक्ति जिसकी मौत हार्ट अटैक से होती है परन्तु उसकी लाश रहस्यमय तरीके से गायब हो जाती है। अब क्राई का ये मर्डर। क्राई इंडिया की ही नहीं अपितु वर्ल्ड की गिनी चुनी टॉप कम्पनीज में से एक थी।

राजवीर इन्ही सब ख्यालों में खोया हुआ हुआ वर्ली पहुँच चुका था। वहाँ उसके सामने थी क्राई की वो आलिशान तीस माले की बिल्डिंग।

राजवीर उस बिल्डिंग के अंदर गया जहाँ बहुत सारे लोग रिसेप्शन पर ही एकत्रित हो रखे थे। राजवीर को पुलिस यूनिफार्म में देख फॉरेन ही रेनू रिसेप्शनिस्ट भागते हुए उसके पास आ गयी।

‘सर मैंने ही पुलिस को फोन किया था।’ रेनू बोली।

‘जी बताईये।‘ राजवीर गंभीर स्वर में बोला।

'मेरे साथ आईये हमारे 2nd फ्लोर पर। जो हमारा ड्रग स्टोर है।' रेनू बोली।

'चलिए।' राजवीर बोला।

रेनू राजवीर का हाथ पकड़ कर वहाँ ले गयी जहाँ लिफ्ट्स मौजूद थी। सभी लिफ्ट इस समय ग्राउंड फ्लोर पर ही थी। उनमे से एक में रेनू, राजवीर के साथ चली गयी और अपना आई डी (id) कार्ड टेप (tap) करके 2nd फ्लोर का बटन दबा दिया।

'क्या बिना इस आई डी (id) कार्ड के किसी भी फ्लोर पर नहीं जाया जा सकता।' राजवीर ने पूछा।

'नहीं सर। हमारे एम्प्लाइज के आई डी (id) कार्ड स्पेसिफिकली प्रोग्राम्ड (specifically programmed) है और कोई भी एम्प्लोयी अपने डेसिग्रेटेड (designated) फ्लोर के अलावा कहीं नहीं जा सकता। हाँ ग्राउंड फ्लोर पर आ सकता है या फिफ्थ (5th) फ्लोर जहाँ कैंटीन है वहाँ जा सकता है।' रेनू बोली।

इतनी ही देर में उनकी लिफ्ट 2nd फ्लोर पर आ चुकी थी।

रेनू और राजवीर लिफ्ट से उतरे और उतरने के साथ ही उनके सामने काँच का एक बहुत बड़ा दरवाजा था। रेनू ने आई डी (id) कार्ड टेप (tap) किया और वो दरवाजा खुल गया।

'सर ये बुलेट प्रूफ ग्लासेज से बने स्पेशल डोर है यदि कोई किसी के साथ लिफ्ट में यहाँ आ भी जाये तो भी बिना आई डी (id) कार्ड के दरवाजा नहीं खुलेगा।' रेनू बोली।

'बहुत सिक्योरिटी कर रखी है आपने।' राजवीर बोला।

रेनू राजवीर के साथ अंदर चली गयी और राजवीर ने देखा ड्रग स्टोर बहुत ही बड़ा था और वहाँ तरह तरह की दवाइयां रखी हुई थी। वहाँ का तापमान सेंट्रलाइस्ड (Centralised) AC से मेन्टेन (maintain) किया गया था। वहाँ पर बहुत से केबिन भी थे। जिसमे स्टोर कीपर, स्टोर मैनेजर आदि लिखा हुआ था।

राजवीर को रेनू एक केबिन में ले गयी जिस पर लिखा था स्टोर कीपर। जैसे ही राजवीर ने एंट्री की उसने देखा वहाँ एक लाश पड़ी हुई थी।

ऐसा लगता था कि उस लाश को किसी ने रस्सी से गला घोट कर मार डाला था।

वो कोई पेंतीस छतीस वर्ष का आदमी लग रहा था।

'तुम जानती हो ये कौन है।' राजवीर बोला।

'हाँ ये हमारा स्टोर मैनेजर है। सारी ड्रग्स की सेल का पूरा रिकॉर्ड ये ही मैनेज करता है।' रेनू बोली।

'ओह इसकी इतनी क्रूर हत्या।' राजवीर अनायास ही बोल उठा। उसने अपने फोन से फॉरेंसिक टीम को फोन किया और वहाँ आने का आदेश दे दिया।

‘आप लोगों को इस हत्या का पता कब चला।’ राजवीर बोला।

‘हमें तब पता चला जब अमरीक ने हमें बताया।’ रेनू बोली।

‘अमरीक कौन है।’ राजवीर ने पूछा।

‘वो हमारा इंटर्न है।’ रेनू बोली।

‘मैं उससे मिलना चाहूंगा। वो कहाँ है।’ राजवीर ने पूछा।

‘वो अभी तो 14th फ्लोर पर है नरेश सर के केबिन में हमने उसे रोका हुआ है।’ रेनू बोली।

‘मैं कुछ समझा नहीं रोका हुआ है।’ राजवीर बोला।

‘सर वो इंटर्न कुछ अजीब सा है। उसने जब से हमें ज्वाइन किया है तब से ही वो बहुत संदिग्ध हरकते कर रहा है।‘ रेनू बोली।

‘तुम थोड़ा कुछ और बता सकती हो उसके बारे में।’ राजवीर बोला।

‘हाँ, उसने हमें इसी हफ्ते ज्वाइन किया है। आते ही वो ड्रग स्टोर में काम करना चाह रहा था। परन्तु ऋतू मैम ने उसे मना कर दिया। फिर भी उसने किसी तरह से किसी एम्प्लोयी का आई डी (id) कार्ड चुराया और आज ड्रग स्टोर में पहुँच गया। वो कहता है जैसे ही वो ड्रग स्टोर में पहुंचा उसने देखा कि कोई हमारे ड्रग स्टोर के मैनेजर का रस्सी से गाला घोंट रहा था। वो घबरा गया और फॉरेन उसने मुझे बताया। परन्तु मैं जब तक सिक्योरिटी गाड्र्स को लेकर पहुँचती वो आदमी भाग चुका था।’ रेनू बोली।

‘ये कब की बात है।’ राजवीर ने पूछा।

‘आज सुबह आठ बजे की।’ रेनू बोली।

‘इतनी जल्दी आप सब आ जाते हो।‘ राजवीर ने पूछा।

‘वैसे हमारा ऑफिस नो बजे खुलता है परन्तु लोग आठ बजे से आना चालू हो जाते है।’ रेनू बोली।

‘समझ गया। मुझे 14th फ्लोर ले चलो। जरा आपके इस इंटर्न से मिल लेते हैं। तब तक फॉरेंसिक टीम भी आ जाएगी।’ राजवीर बोला।

‘बिलकुल सर।’ रेनू बोली।

‘और हाँ मैं अपने फोन से फोटो ले लेता हूँ आप अपने सिक्योरिटी गार्ड्स को बोल दो कि इस एरिया में कोई नहीं आये। ये क्राइम सीन है। कोई किसी भी चीज को नहीं छुएगा जब तक कि फॉरेंसिक टीम नहीं आती।’ राजवीर बोला।

‘मैं बोल देती हूँ।’

रेनू उसे लिफ्ट से 14th फ्लोर ले गयी और राजवीर उसे आश्चर्य से देख रहा था कि वो अपने आई डी (id) कार्ड से टेप (tap) करके किसी भी फ्लोर पर जा सकती थी।

रेनू समझ गयी और बोली, ‘सर मैं किसी भी फ्लोर पर जा सकती हूँ फ्लोर अठाइस से तीस छोड़ कर, वो इस कंपनी के मालिक वास्को सर का फ्लोर है।’

‘ठीक है।’ राजवीर ने हामी में सर हिलाया।

उसे उस इंटर्न से मिलने का इंतज़ार था। जब तक लिफ्ट 14th फ्लोर पहुँचती रेनू ने राजवीर को उस इंटर्न की सारी संदिग्ध हरकते बता दी थी। राजवीर सोच में पड़ गया था कि कौन है ये आदमी जो बायो टेक्नोलॉजी में इंजीनियर होने के बाद भी फार्मा कंपनी में इंटर्नशिप कर रहा है और उसके आते ही क्राई में खून हो जाता है।

पहली वो हार्ट अटैक वाली लाश का गायब होना और अब ये इंटर्न जिसके आते ही क्राई जैसी नामी कंपनी में खून, राजवीर को आजकल बहुत ही रोमांचक असाइनमेंट मिल रहे थे वो भी तब जब वो अपने काम से ब्रेक लेकर अपनी पत्नी के बारे में ही सोचना चाहता था। शायद ये उसकी अच्छी किस्मत थी जो उसे ऐसे केस मिल रहे थे जिसमे वो इतना व्यस्त हो जाने वाला था कि उसे अपनी पत्नी का गम भुलाने में मदद मिलेगी, वरना वो तो शायद शराब के नशे में अपनी सेहत और अपना करियर दोनों ख़राब कर लेता।

अध्याय 5

नरेश खट्टर के केबिन में इस वक्त वो इंटर्न अमरीक, ऋतू, रेनू और राजवीर थे। राजवीर अमरीक से पूछताछ करने ही वाला था तभी नरेश भी वहाँ आ गया था।

‘इंस्पेक्टर राजवीर ये नरेश सर है‘ ऋतू बोली। ‘और सर ये है इंस्पेक्टर राजवीर इस मर्डर केस के इंवेस्टिगेटिंग ऑफिसर।’

‘हाय इंस्पेक्टर’ नरेश बोला।

‘हेलो‘ राजवीर ने जवाब दिया।

‘मैंने 2nd फ्लोर जाने की कोशिश की थी परन्तु आपकी फॉरेंसिक टीम और पुलिस टीम आ चुकी है।’ नरेश बोला।

‘सर आप वहाँ नहीं जाये और सब को बोल दीजिये जब तक फॉरेंसिक टीम अपना काम नहीं कर लेती नो मूवमेंट ऑन सेकंड फ्लोर (no movement on second floor)।’ राजवीर बोला।

‘परन्तु हमारे इम्पोर्टेन्ट ड्रग्स ऐसपेशियली (especially) कैंसर ड्रग्स वहाँ है।’ नरेश बोला।

‘सर आपको कोआपरेट (cooperate) करना होगा, प्लीज‘ राजवीर शांत स्वर में बोला।

‘ठीक है।’ नरेश ने निराशा भरे स्वर में बोला और अपनी सीट पर जाकर बैठ गया।

राजवीर ने अमरीक को देखा जो कौने में खड़ा हुआ था।

नरेश अमरीक को बहुत ही हेय और कटुता से देख रहा था। उसका बस चले तो वो इसे अभी इसी वक्त निकाल दे। इस अमरीक को रखना ही सबसे बड़ी भूल थी।

'तुम्हारा नाम' राजवीर ने अमरीक से पूछा।

'अमरीक अवस्थी।' अमरीक ने शांत स्वर में बोला।

'तुम कहाँ से हो।' राजवीर बोला।

'मैं लखनऊ से हूँ परन्तु दिल्ली में पला बढ़ा हूँ।' अमरीक बोला।

'तो फिर तुम्हें मुंबई में क्राई में दिलसचस्पी क्यों है। मैंने सुना तुमने इनका कोई क्विज टॉप किया और इनसे इंटर्नशिप मांगी।' राजवीर बोला।

'सर वो इसलिए ताकि यदि मैं इन्हे इम्प्रेस कर दूँ तो मुझे यहाँ जॉब मिल जाये।' अमरीक बोला।

'ऐसे इम्प्रेसस करोगे, 2nd फ्लोर में इललीगल (illegal) एंट्री करके।' राजवीर अत्यधिक गुस्से में बोला।

'सर जब मैं ऑफिस आया था तो मैंने देखा हमारे स्टोर मैनेजर भी ऑफिस आ गए थे और हम दोनों ने साथ ही में लिफ्ट ली थी। आप चाहे तो CCTV देख ले।' अमरीक बोला।

'तो तुम उनके पीछे पीछे 2nd फ्लोर पर चले गए।' राजवीर बोला।

‘नहीं सर’ अमरीक बहुत ही तस्सली से जवाब दे रहा था। ‘उनको हाई ब्लड प्रेशर की प्रॉब्लम थी और वो बोल रहे थे कि उनकी तबियत ख़राब लग रही है तो मैंने उनको कहा कि मैं उन्हें मेडिसिन दे देता हूँ। बेनजेपेरिल मेडिसिन।’

अमरीक ने थोड़ा पॉज लिया। उसने एक नज़र वहाँ मौजूद नरेश, ऋतू, रेनू और इंस्पेक्टर राजवीर को देखा और आगे बोला।

‘इसलिए मैं उनके साथ गया और उन्हें स्टोर कीपर के केबिन में बैठा कर मैं बेनजेपेरिल ढूंढ रहा था। अब वो फ्लोर बहुत बड़ा है, मुझे पता ही नहीं चला कब वो काले कपडे पहने काला मास्कधारी भी आ गया और उनका रस्सी से गला घोंट दिया।’

राजवीर बहुत ही संशय भरी निगाहों से अमरीक को देख रहा था। अमरीक के चेहरे पर कोई भाव नहीं थे; या तो वो सच बोल रहा था या वो कोई बहुत ही ट्रेंड किलर है। चान्सेस (chances) उसके किलर होने की ज्यादा थी। ऐसी परिस्थितियों में इतना शांत कोई आम आदमी नहीं रह सकता था।

‘मैं जब मेडिसिन लेकर पहुंचा तो वो आदमी उनका गला घोंट रहा था और कुछ बहुत अजीब सा बोल रहा था, कुछ ओरिएट ओबिलिस्क या ऐसा कुछ।’ अमरीक बोला।

नरेश बीच में बोला ‘ओरिएट ओबिलिस्क’

‘हाँ ओरिएट ओबिलिस्क’ अमरीक बोला।

‘क्या है ये ओरि…’ राजवीर ने नरेश से पूछा।

‘नहीं, कुछ नहीं। मुझे नहीं पता।’ नरेश सकपका गया।

‘अभी तो आपने कुछ बोला‘ राजवीर ने थोड़ा इर्रिटेट होते हुए नरेश से बोला।

‘वो तो मैं अमरीक की बात दोहरा रहा था, कैसा अजीब शब्द है‘ नरेश बोला।

‘तुमने क्या सुना‘ राजवीर ने अमरीक को देख कर बोला।

‘मैंने यह ही सुना ओरिएट ओबिलिस्क’ अमरीक बोला।

राजवीर को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा था। उसे अब उस इंटर्न के साथ साथ नरेश पर भी शक हो रहा था। क्योंकि नरेश और अमरीक दोनों को ही नहीं पता था कि जब अमरीक ने ओरिएट ओबिलिस्क बोला तो उसने नरेश की ओर देखा और नरेश ने फॉरेन रियेक्ट किया। इसका मतलब कुछ तो राज़ है इस इंटर्न और इस ओरिएट ओबिलिस्क का।

राजवीर को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वो किस भंवर में फस रहा था।

‘आप बोले तो मैं आपको रिसेप्शन और लिफ्ट के CCTV दिखवा सकता हूँ‘ नरेश बोला। उसे इस ओरिएट ओबिलिस्क से राजवीर का ध्यान हटाना था और इस इंटर्न अमरीक से पूछना था कि उसने और क्या क्या सुना था।

‘हाँ इससे मदद मिलेगी। हम भी तो देखें कौन काला मास्कधारी आपकी कंपनी में आ गया।’ राजवीर ने अमरीक को शक भरी निगाहों से देखते हुए बोला।

नरेश ने ऋतू को इशारा किया और ऋतू वहाँ से निकल गयी।

‘ठीक है मिस्टर इंटर्न आगे बताईये।’ राजवीर ने इंटर्न से पूछा।

‘बस फिर कुछ नहीं मैं घबरा गया और वहाँ से भाग कर एक अलमीरा के पीछे छुप गया। वो आदमी सेकंड फ्लोर से बाहर निकल गया और मैंने रेनू रिसेप्शनिस्ट को फोन कर दिया।’ अमरीक बोला।

‘मतलब उस मर्डरर ने ये जानते हुए भी कि तुम ऑय विटनेस (eye witness) हो तुम्हें छोड़ दिया।’ राजवीर ने अमरीक से पूछा।

‘हाँ उसे भी तो डर होगा कि बाकि लोग कभी भी आ सकते है।’ अमरीक बोला।

तभी ऋतू एक पेन ड्राइव लेकर आ गयी और उसने वो पेन ड्राइव नरेश के लैपटॉप में लगा दी और स्क्रीन पर CCTV फुटेज आ गया।

जैसा अमरीक ने बताया उसने और स्टोर मैनेजर ने साथ में लिफ्ट ली और दोनों कुछ बाते कर रहे थे। दोनों फिर सेकंड फ्लोर पर उतर गए और स्टोर मैनेजर ने अपने आई डी (id) कार्ड से ग्लास डोर खोला और अमरीक के साथ स्टोर कीपर के केबिन में चला गया। अमरीक अकेला बाहर आया और तभी वो CCTV कैमरा ब्लेंक हो गया।

‘ये क्या हुआ’ राजवीर ने पूछा।

‘उस कातिल ने CCTV तोड़ दिया होगा‘ अमरीक बोला।

‘परन्तु वो अंदर आया कब, मुझे रिसेप्शन का CCTV दिखाओ‘ राजवीर बोला।

ऋतू ने रिसेप्शन का CCTV दिखाया परन्तु कहीं भी वो काला मास्कधारी आदमी नहीं दिखा। राजवीर बहुत देर तक बहुत सारी CCTV फुटेज देखता रहा।

परन्तु उसे वो काला मास्कधारी आदमी कहीं नज़र नहीं आया।

‘अमरीक तुम झूठ बोल रहे हो‘ राजवीर ने अमरीक को देखा। ’मैं तुम्हें गिरफ्तार कर रहा हूँ।’ राजवीर बोला।

‘परन्तु किस ग्राउंड पर‘ नरेश बीच में बोला।

‘आपने देखा नहीं कि कोई भी काला मास्कधारी नहीं था अमरीक और वो मृतक साथ में उस केबिन में गए और उसके बाद CCTV ख़राब हो गया और अमरीक के अलावा वहाँ और कोई नहीं था।’ राजवीर बोला।

‘इंस्पेक्टर मुझे लगता है कि पहला तो अमरीक के पास कोई मोटिव (motive) ही नहीं है मर्डर करने का और यदि है भी तो वो भागा क्यों नहीं।’ नरेश ने बोला।

‘क्योंकि वो सेकंड फ्लोर का गेट नहीं खोल पाया। ‘ राजवीर बोला।

‘परन्तु क्यों नहीं, उसके पास उस मृतक का आई डी (id) कार्ड होना चाहिए था।’ नरेश बोला।

‘हाँ‘ राजवीर बोला।

‘परन्तु वो मेरे पास आई डी (id) कार्ड नहीं है वो काला मास्कधारी आदमी उसे लेकर चला गया।’ अमरीक बोला।

राजवीर अचंभित था। ये अमरीक कुछ बहुत बड़ा खिलाडी लग रहा था।

राजवीर को यह भी समझ नहीं आ रहा था कि नरेश इस अमरीक को बचाने में क्यों लगा है। राजवीर क्राई कंपनी के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर से बिना बात के पन्गा नहीं लेना चाहता था। परन्तु उसके पास और कोई चारा भी नहीं था और उसे उस ओरिएट ओबिलिस्क के राज़ का भी पता लगाना था।

‘मैं फिर भी अमरीक को अरेस्ट कर रहा हूँ।’ राजवीर बोला।

‘थिस इस अब्सोलुटली राँग (this is absolutely wrong)’ नरेश चिल्लाया।

‘मिस्टर खट्टर प्लीज डोन्ट इंटरफियर (please don’t interfere)‘ राजवीर बोला।

राजवीर ने अमरीक को अरेस्ट किया और वहाँ से निकल गया।

नरेश गुस्से में आग बबूला हो गया था और ऋतू एवं रेनू को समझ नहीं आ रहा था कि नरेश को क्या प्रॉब्लम है। वो दोनों ही अमरीक की गिरफ़्तारी से बहुत ही खुश थे।

अध्याय 6

अभिषेक बेतहाशा भागते हुए प्रथमेश के केबिन के बाहर पहुँच चुका था। प्रथमेश की सेक्रेटरी ने उसे रोकने की कोशिश की परन्तु अभिषेक के पास समय बहुत कम था। वो प्रथमेश का दरवाजा खोलते हुए अंदर चला गया।

प्रथमेश अपनी कंपनी मूनस्टोन फार्मा के पास्ट रेवेन्यू परफॉरमेंस की रिपोर्ट देख रहा था।

'प्रथमेश आपने सुना' अभिषेक जल्दी जल्दी बोला। उसके स्वर में एक अलग सा उतावलापन था।

'क्या' प्रथमेश अपनी टेबल से नज़र उठाते हुए बोला। उसके आलीशान केबिन में अपनी टेबल के पास खड़ा हुआ प्रथमेश किसी चक्रवर्ती राजा से कम नहीं लग रहा था।

'वास्को की कंपनी में मर्डर' अभिषेक बोला।

'क्या ये कब हुआ।' प्रथमेश बोला।

'मेरी खबरी ने अभी अभी खबर भेजी है। पुलिस भी वहाँ आ गयी है।' अभिषेक बोला।

'तो फिर मीडिया भी आने वाली होगी।' प्रथमेश बोला।

प्रथमेश वास्को से बेइंतिहां नफरत करता था। मून स्टोन फार्मा भी बड़ी फार्मा कंपनी में से एक थी परन्तु जब से वास्को ने कैंसर का अस्थायी इलाज ढूंढ लिया था तब से वास्को की कंपनी का revenue

(रेवेन्यू) और प्रॉफिट कई गुना बढ़ गए थे। प्रथमेश को कैंसर के इलाज का परमानेट क्योर मिलने ही वाला था जब एक एक्सीडेंट के कारण उसके हाथ से वो परमानेंट क्योर निकल गया। आज उसके पास वो परमानेंट क्योर होता तो वास्को की क्राई को मून स्टोन फार्मा बहुत पीछे छोड़ चुकी होती।

अभिषेक ने प्रथमेश को झिंझोड़ा और उसे उसकी ख्वाबो की दुनिया से वापस लाया। अभिषेक बोला, 'ये अच्छा मौका है'

'हाँ, पता लगाओ की वास्को की कंपनी में क्या चल रहा है। अपने मीडिया सेल को खबर कर दो। मीडिया के लोग वास्को को घेर लेंगे।' प्रथमेश बोला।

'मैं बोल देता हूँ। वैसे एक बुरी खबर भी है।' अभिषेक बोला। उसके स्वर में थोड़ी हिचक थी।

'क्या' प्रथमेश गुस्से में बोला।

'जो मरा है वो अपना ही डबल एजेंट था। सत्या।' अभिषेक बोला।

'वो क्राई का स्टोर मैनेजर।' प्रथमेश बोला।

'हाँ जो अपने को क्राई के कई सारे ड्रग्स सप्लाई कर देता था और हम उन पर अपना लेबल लगा कर मार्किट में बेचते थे।' अभिषेक बोला।

'उसको किसने मार दिया।' प्रथमेश बोला।

'यह ही समझ नहीं आ रहा था कि जिसने सत्या को मारा है वो हमें नुक्सान पहुंचाना चाहता था या वास्को को।' अभिषेक बोला।

‘परन्तु वो सत्या किसी काम का नहीं था। वो हमें उस कैंसर क्योर का एपीआई (API) तो दे नहीं पाया।’ प्रथमेश बोला।

‘सर वास्को अपने कैंसर ड्रग का एपीआई बहुत ही संभाल के रखता है। सत्या उस तक नहीं पहुँच सकता था। वो बस छोटी मोटी जेनेरिक ड्रग्स में ही हमारी मदद कर सकता था और उसने हमारी बहुत मदद की भी है।’ अभिषेक बोला।

‘हाँ ठीक है। तुम्हारी वो दूसरी खबरी, वो हमें एपीआई दे पायेगी।’ प्रथमेश बोला।

‘नहीं प्रथमेश। वो यदि इन सब में कोशिश करेगी तो फस जाएगी।’ अभिषेक बोला।

‘तो फिर तुम मुझसे इतने पैसे किस बात के लेते हो।’ प्रथमेश गुस्से में बोला।

प्रथमेश अपने revenue (रेवेन्यू) और प्रॉफिट के कैलकुलेशन में लग गया। अभिषेक के लिए ये सिग्नल था कि वो वहाँ से जा सकता था। अभिषेक चाहे जितनी भी कोशिश कर ले ये प्रथमेश खुश ही नहीं होता था। वैसे प्रथमेश ठीक भी कह रहा था कि आज तक वो लोग क्राई के कैंसर ड्रग्स का सीक्रेट पता नहीं लगा पाए थे।

अभिषेक प्रथमेश के कमरे से बाहर निकला और उसने मीडिया को फोन कर दिया। इधर उसके पास एक प्राइवेट नंबर से फोन आ गया।

‘हेलो’ अभिषेक बोला।

'मैं रेनू बोल रही हूँ।' रेनू बोली।

'हाँ रेनू क्या खबर है।' अभिषेक बोला।

'सत्या का खून हो गया है और पुलिस इंस्पेक्टर राजवीर ने अमरीक को गिरफ्तार कर लिया है।' रेनू बोली।

'ये अमरीक कौन है।' अभिषेक ने पूछा।

'एक इंटर्न है। परन्तु बहुत ही संदिग्ध है। पहले मुझे लगा आपने प्लांट किया है परन्तु अब लग रहा है कुछ और ही चक्कर है।' रेनू बोली।

'मतलब' अभिषेक ने पूछा।

'ये इंटर्न उस वक्त सत्या के साथ अकेला था और उसने ही उसे गला घोंट कर मार दिया।' रेनू बोली।

'तुम इतना स्युरेटी (surety) से कैसे कह सकती हो।' अभिषेक बोला।

'वो इसलिए क्योंकि वो इंटर्न कोई कहानी सुना रहा था काले मास्कधारी की और पता नहीं क्या क्या।' रेनू बोली।

'काला मास्कधारी' अभिषेक अनायास बोल उठा और वो बुरी तरह से शॉक में आ गया। इस इंटर्न को काले मास्कधारी के बारे में कैसे पता।

'हाँ कुछ ओबिलिस्क भी बोल रहा था।' रेनू बोली।

'ओरिएट ओबिलिस्क' अभिषेक बोला।

'हाँ' रेनू बोली।

अभिषेक के चेहरे का रंग उड़ गया। उसको समझ नहीं आया की ये कहानी क्या मोड लेगी।

वो फोन काट कर फॉरेन प्रथमेश के कमरे में घुस गया।

‘प्रथमेश‘ अभिषेक प्रथमेश के करीब जाकर बोला।

‘क्या हुआ‘ प्रथमेश ने अभिषेक को देखते हुए बोला ‘क्या कोई भूत देख लिया‘

‘उससे भी बुरा’ अभिषेक बोला।

‘क्या बकवास कर रहे हो।’ प्रथमेश बोला।

‘वास्को के पास कोई इंटर्न आया है जो काले मास्कधारी और ओरिएट ओबिलिस्क के बारे में जानता है।’ अभिषेक बोला।

‘क्या‘ प्रथमेश धड़ाम से अपनी सीट पर गिर गया। उसके पैरो तले जमीन खिसक गयी।

‘तुम फॉरेन मीडिया को मना करो और कहाँ है वो इंटर्न अभी।’ प्रथमेश थोड़ा संभाला और बोला।

‘मैंने अ.. वो‘ अभिषेक कुछ हिचकिचाया।

‘अरे साफ़ साफ़ बोलो‘ प्रथमेश चीखा।

‘मीडिया को मैंने बाइट दे दिया था उसके बाद रेनू का फोन आया।’ अभिषेक बोला।

‘तुम निरे मुर्ख हो अभिषेक।’ प्रथमेश बोला।

अभिषेक का सर शर्म से झुक गया।

‘कोई बात नहीं यदि तुम नहीं भी बताते तो भी मीडिया तो पहुँच ही जाती, आखिर कार क्राई की बिल्डिंग में दिन दहाड़े मर्डर हुआ है।’ प्रथमेश बोला।

‘तो अब क्या करेंगे‘ अभिषेक ने मिमियाते हुए पूछा।

‘वो इंटर्न कहा है।’ प्रथमेश ने खूंखार स्वर में पूछा।

‘इंस्पेक्टर राजवीर ने उसे अरेस्ट कर लिया है, सत्या के मर्डर के शक में।’ अभिषेक बोला।

‘क्या‘ प्रथमेश चौंका।

‘मतलब ये मामला काफी जटिल हो चला है।’ प्रथमेश बोला।

प्रथमेश ने थोड़ी देर यहाँ वहाँ चहल पहल की फिर बोला, ‘ठीक है अभिषेक मेरे दिमाग में कुछ चल रहा है। परन्तु हम यहाँ बात नहीं करेंगे, हम मेरे घर चलते है वहाँ बात करते है।’

प्रथमेश की आँखों में चमक थी और उसे समझ आ गया था कि ये लुका छुपी अब ज्यादा समय नहीं चलेगी। उसे जल्दी ही इस कहानी का अंत करना पड़ेगा।

आखिर क्या था उस काले मास्कधारी, राजन की हत्या और ओरिएट ओबिलिस्क का राज़। इंस्पेक्टर राजवीर अनजाने में ही दो अलग अलग परन्तु कनेक्टेड केसेस पर काम कर रहा था और ये कहानी अब खूंखार मोड़ लेने वाली थी।

अध्याय 7

राजवीर ने अमरीक को लॉक अप में बंद कर दिया था। राजवीर को समझ आ गया था कि ये अमरीक कहानी बनाने में उस्ताद है।

'तुम यदि सब सच बोल दोगे तो तुम्हारे और मेरे दोनों के लिए अच्छा रहेगा।' राजवीर ने खूंखार स्वर में अमरीक से बोला।

'मैंने कुछ झूठ नहीं बोला।' अमरीक बोला।

'तुम ऐसे मानोगे नहीं।' राजवीर का स्वर खतरनाक होता जा रहा था।

इससे पहले राजवीर कुछ कहता या करता राजवीर के जेब में रखा फोन बज गया। वो साइबर सेल से जूनियर अफसर का फोन था।

'बोलो' राजवीर ने फोन रिसीव करते हुए बोला।

'सर वो लाश की फोटो जो आपने दी थी मैंने खूब चेक किया और मेरे ख्याल से वो लाश राजन शर्मा नामक एक प्रोफेसर की है जो पहले नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट में काम करते थे परन्तु इन्होने वोलंटरी रिटायरमेंट ले लिया।' जूनियर अफसर बोला।

'इंटरेस्टिंग (interesting)।' राजवीर बोला। 'तुम मुझे पूरी डिटेल्स (details) व्हाट्सप्प (whatsapp) कर दो, मैं देखता हूँ।'

'ओके सर' जूनियर अफसर बोला और वो फोन काटने ही वाला था कि राजवीर बोला,

'हाँ एक बात और'

'बोलिये सर'

'मैंने अभी एक आदमी को अरेस्ट किया है, मुझे इसके फ़ोन की भी फुल फॉरेंसिक करवानी है। मैं तुम्हारे पास भिजवा रहा हूँ।'

'बिलकुल सर आप भेज दीजिये मैं फुल ओन रिपोर्ट दे दूंगा।'

राजवीर ने फोन काट दिया और अमरीक की ओर देखा,

'मैं अभी जिससे बात कर रहा था वो इतना एक्सपर्ट है कि तुम्हारे फोन की सारी डिटेल्स की स्टडी करके तुम्हारी जन्म कुंडली खोल देगा।'

'बहुत अच्छा लगा ये जान कर की हमारी पुलिस इतनी एफिसिएंट (efficient) है।' अमरीक बोला।

राजवीर ने बहुत जोर से एक चांटा अमरीक को लगा दिया। फिर खूंखार स्वर में बोला, 'बेटा हम कितने एफिसिएंट (efficient) है तुझे पता चल जायेगा।'

'वैसे आप मुझ से चाहते क्या हो।' अमरीक ने अपना गाल सहलाते हुए पूछा।

'सच सच बता तू कौन है और तुझे क्राई में क्या चाहिए था और सत्या को क्यों मारा।' राजवीर चीखा।

'आप ऐसा करो मेरे फ़ोन का फॉरेंसिक करा लो और मैं आपको अपना परमानेंट एड्रेस दे रहा हूँ, वहाँ भी चेक करा लो।' अमरीक शांत स्वर में बोला।

राजवीर को समझ नहीं आ रहा था कि वो इस अमरीक से कैसे निपटे।

राजवीर ने अपने एक कांस्टेबल को बुलवाया और उसे अमरीक का फोन दे कर उसकी फॉरेंसिक करवाने के लिए भिजवा दिया। साथ ही उसने राजवीर के लखनऊ का और दिल्ली का एड्रेस भी नोट कर के कांस्टेबल को दे दिया।

राजवीर ने अमरीक को लॉक अप में ही बंद करके अपने केबिन में आ गया। वो दुविधा में था कि ये केस किस डायरेक्शन की ओर जा रहा था। तभी उसके मोबाइल पर व्हाट्सप्प (whatsapp) मैसेज बजा।

उसके साइबर सेल के जूनियर अफसर ने प्रोफेसर राजन शर्मा की सारी डिटेल्स भेज दी थी।

राजवीर उन डिटेल्स को पढ़ने लग गया। प्रोफेसर राजन शर्मा नेशनल कैंसर इन्सिटटे में प्रोफेसर थे और बहुत सारी रिसर्च कर चुके थे। उन्होंने फिर दो साल पहले वोलंटरी रिटायरमेंट ले ली थी और तब से वो कहाँ थे किसी को नहीं पता था। प्रोफेसर शर्मा की पत्नी की मौत कैंसर से ही हुई थी और उनका एक पुत्र है जो दिल्ली में पढ़ रहा था। प्रोफेसर शर्मा किसी भी सोशल मीडिया में ज्यादा एक्टिव नहीं थे इसलिए उनकी बहुत डिटेल्स नहीं मिल पायी थी। उनके बेटे की डिटेल्स भी नहीं मिली थी।

राजवीर कुछ सोच में पड़ गया, यदि किसी को प्रोफेसर राजन शर्मा को मारना था तो उसे ऐसे एक्सीडेंट दिखाया फिर लाश गायब कर

दी, आखिर क्यों। यदि लाश गायब नहीं होती तो शायद पुलिस को शक ही नहीं होता। कहीं लाश इसलिए तो गायब नहीं की गयी ताकि पुलिस इस मामले में इन्वॉल्व हो जाये।

अभी ये खबर किसी को नहीं थी की लाश गायब हो चुकी है। राजवीर ने किसी तरह इस खबर को दबा दिया था वरना ये पुलिस और उस हॉस्पिटल की बदनामी का सबब हो जाती।

इधर राजवीर इन्ही सब ख्यालो में उलझा हुआ था तभी उसके पास ACP का फोन आया।

'यस सर' राजवीर बोला।

'तुमने उस इंटर्न को किस बिनाह पर गिरफ्तार किया है।' ACP बोला।

'सर उसकी कहानी में दम नहीं है वो झूठ बोल रहा था कि कोई मास्कधारी आकर उस सत्या को मार गया। वहाँ केवल दो ही लोग थे मरने वाला सत्या और मारने वाला वो इंटर्न अमरीक।' राजवीर बोला।

'परन्तु क्या मोटिव (motive) होगा।' ACP बोला।

"सर वो ही पता लगा रहा हूँ।' राजवीर बोला।

'मेरे पास क्राई और मूनस्टोन फार्मा दोनों ही तरफ से प्रेशर है उस इंटर्न को छोड़ने के लिए।' ACP बोला।

'सर क्राई ऐसा क्यों चाहेगा। उनके एम्प्लोयी का मर्डर हुआ है और ये मूनस्टोन, उसको इससे क्या लेना देना है।' राजवीर बोला।

‘पता नहीं। क्राई को कोई मुसीबत नहीं चाहिए। उनका प्लान सिंपल है कोई काला मास्कधारी इंट्रूडर (intruder) बाहर से आया और उसने मर्डर किया बिकॉज़ ही वांटेड सम सीक्रेट्स ऑफ़ क्राई (because he wanted some secrets of CRI)।’ ACP बोला।

‘और मूनस्टोन फार्मा उनको क्यों छुड़ाना है इस इंटर्न को।’ राजवीर सरकास्टिकली (sarcastically) बोला।

‘पता नहीं उन्हें क्या चाहिए। उनका भी बहुत प्रेशर आ रहा है, टू रिलीज़ थिस इंटर्न (to release this intern)।’ ACP बोला।

‘सर मुझे दाल में कुछ काला लग रहा है। वो इंटर्न कुछ ओबिलिस्क वगैरह भी बोल रहा था। मुझे उससे पूछना है वो क्या है।’ राजवीर बोला।

‘अरे तुम्हें क्या करना है राजवीर। तुम इंटर्न को छोडो और केस का इन्वेस्टीगेशन अच्छे से करो।’ ACP ने बोला और फोन काट दिया।

राजवीर को समझ नहीं आ रहा था कि पहले ACP ने ही उसे इस केस पर लगाया था और अब वो ही उसे मना कर रहे थे।

कुछ बहुत बड़ा षड़यंत्र था परन्तु क्या वो राजवीर को समझ नहीं आ रहा था। यह तो पक्का था कि क्राई और मूनस्टोन दोनों ही चाहते थे किअमरीक जेल में न रहे। या तो ये अमरीक दोनों के लिए जरुरी है या दोनों के लिए खतरनाक।

राजवीर फिर से लॉक अप में गया और अमरीक से बोला, 'देख भाई सच सच बता दे वरना मैं तुझे लॉक अप से बाहर निकाल दूंगा। वहाँ क्राई और मूनस्टोन नामक दो गिद्ध तेरा इंतज़ार कर रहे है।'

'हाहा आपने सही बोला। मेरा दो गिद्ध इंतज़ार कर रहे है।' अमरीक हस्ते हुए बोला।

'तुझे डर नहीं लगता क्या।' राजवीर बोला।

'नहीं। पहले आप ये बताओ कि आप इन दोनों गिद्धों में से किस गिद्ध के लिए काम करते है।' अमरीक बोला।

'किसी के लिए नहीं।' राजवीर गुस्से में बोला।

'और आपके ACP लगता है दोनों के लिए काम करते है।' अमरीक मुस्कुराते हुए बोला।

ये कटाक्ष राजवीर को बहुत चुभा परन्तु वो शांत ही रहा।

राजवीर समझ गया था कि अमरीक कोई इंटर्न वगैरह नहीं है अपितु एक शातिर खिलाडी था। वो किसी बहुत ही खतरनाक मिशन पर निकला था और सिर्फ सत्या को मार कर ही ये मौत का सिलसिला रुकेगा नहीं। ये तो बस शुरुआत है। अमरीक का इरादा बहुत ही खतरनाक था।

ये क्यों और क्या चाहता था?

अध्याय 8

‘तुम्हें तुम्हारा फोन कुछ दिनों में मिल जायेगा। मैं तुम्हें फिलहाल छोड़ रहा हूँ। परन्तु याद रखना तुम मेरे राडार पर रहोगे।’ राजवीर ने अमरीक को लॉक अप से निकालते हुए बोला।

‘वैसे आप बहुत ही ईमानदार इंस्पेक्टर लग रहे है।‘ अमरीक बोला।

‘मैं बहुत ही बुरा भी हूँ ख़ास कर अपराधियों के लिए, परन्तु तुम अपना ध्यान रखो तुम्हारे पीछे न सिर्फ क्राई अपितु मूनस्टोन भी लगा हुआ है।’ राजवीर बोला।

‘मुझे पता है, वैसे मैं यह ही चाहता था।’ अमरीक बोला और वहाँ से निकल गया।

राजवीर आश्चर्यचकित था कि ये अमरीक क्या आदमी है। राजवीर को पता था कि यदि उसे इस केस को सुलझाना है तो इस शातिर इंटर्न को अपने राडार से बाहर नहीं जाने देना चाहिए। उसे अब अमरीक के फोन की फॉरेंसिक रिपोर्ट और कॉल डिटेल रिकाड्र्स का इंतज़ार था।

अमरीक पुलिस स्टेशन से निकला और अपने घर जाने के लिए पैदल ही निकल गया। उसके पास पैसे नहीं थे क्योंकि उसका पर्स राजवीर के पास ही था और अमरीक उसे लेना भूल गया था। या फिर जानबूझ कर

अमरीक उस पर्स को राजवीर के ही पास रखना चाहता था। ये वक्त ही बताएगा।

अमरीक दोपहर की कड़क गर्मी में इंद्रा पूरी पुलिस स्टेशन से अपने घर की ओर पैदल ही जा रहा था। वो तकरीबन पांच किलो मीटर का रास्ता था। अमरीक ने आधा रास्ता तय कर लिया था जब एक काली मर्सीडीज़ उसके सामने आकर रुकी और उस कार का दरवाजा खुला और किसी ने अमरीक को कार के अंदर खींच लिया था।

'कौन है तू' उस मर्सेडीस के पीछे की सीट पर बैठे आदमी ने अमरीक की गर्दन दबोचते हुए पूछा।

'मैं अमरीक हूँ क्राई में इंटर्न' अमरीक बोला। 'परन्तु तुम कौन हो और मेरे से क्या चाहते हो।'

'मैं सिर्फ सच जानना चाहता हूँ तुम्हारी कोई कहानी नहीं।' अभिषेक गुर्राया।

'मैं तो सच ही बोल रहा हूँ। मेरे साथ चलो क्राई के ऑफिस तुम्हें सच्चाई मालूम पड़ जाएगी।' अमरीक बोला।

अभिषेक का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। अमरीक के चेहरे पर कोई भी भाव नहीं था, और अभिषेक का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

अमरीक के चेहरे पर एक अलग सा सुकून था जो अभिषेक को और भी ज्यादा परेशान कर रहा था। अभिषेक के मन में एक अजीब सा ही डर था। हालाँकि अमरीक उसकी कैद में था परन्तु अभिषेक को ऐसा लग

रहा था जैसे अमरीक जानबूझ कर उसके कब्जे में आया था। अमरीक इसलिए धीरे धीरे चलते हुए जा रहा था उसे पता था कि कोई न कोई उसे ढूंढता हुआ आएगा।

'तुम कौन हो सच सच बताओ।' अभिषेक ने खूंखार स्वर में पूछा।

'सारी बातें गाड़ी में ही करोगे या मेरी खातिरदारी करने का कोई विशेष प्रबंध किया हुआ है।' अमरीक सहज स्वर में बोला।

अभिषेक को अमरीक का ये बिंदास अंदाज बहुत ही खटक रहा था। अभिषेक ने अपनी पिस्तौल निकाली और उसके बट्ट से बहुत ही ज़ोर से अमरीक के चेहरे पर वार किया।

अमरीक का होंठ कट गया और उसमे से हल्का सा खून आने लगा।

'तुम्हें पता नहीं कि तुम किससे उलझ रहे हो।' अभिषेक बोला।

'यदि मुझे नहीं पता होता तो...' अमरीक फिर कुछ बोलने लगा और इससे पहले वो अपना वाक्य पूरा करता अभिषेक ने उसे फिर पिस्तौल की बट से जोर से मारा।

'ये ऐसे नहीं मानेगा। इसने ठीक ही कहा है इसकी खातिरदारी करनी ही पड़ेगी' अभिषेक चीखा और अपने ड्राइवर को इशारा किया और उसने गाडी चला दी।

अमरीक को पता था कि मूनस्टोन फार्मा और क्राई में से कोई न कोई उसे जल्द ही ढूंढ लेगा। उन्होंने उसे राजवीर की कैद से छुड़ाया ही इसलिए था।

अभिषेक भी सोच में पड़ गया था कि ये अमरीक किस बला का नाम है। अभिषेक ने आज तक इतना ढीठ और दुस्साहसी आदमी नहीं देखा था। कौन है ये अमरीक और आखिर चाहता क्या है। कहीं ये वास्को का ही तो आदमी नहीं या फिर वास्को की ही चाल तो नहीं है।

अभिषेक विस्मित था, परन्तु वो फिर भी अमरीक को अपने घर पर लेकर चला गया था। अमरीक ने बिना किसी विरोध के चुपचाप लिफ्ट से होते हुए अभिषेक के पन्द्रवें माले पर मकान में चला गया। अभिषेक ने अमरीक को एक कमरे में बंद कर दिया और सीधे प्रथमेश को फोन कर दिया।

‘मैंने इस अमरीक को अपने घर में बंद किया है।’ अभिषेक बोला।

‘तुम्हारे घर में, परन्तु तुम्हारी बीबी और बेटा?’ प्रथमेश ने पूछा।

‘वो अभी अपने मायके गयी हुई है। मैं अकेला हूँ।’ अभिषेक ने जवाब दिया।

‘परन्तु तुम्हें इसे अपने घर लाने की क्या जरुरत थी।’ प्रथमेश ने गुस्से से पूछा।

‘ये कुछ गड़बड़ आदमी है। ये बहुत ही शातिर है। आप मिलोगे तो समझ जाओगे।’ अभिषेक बोला।

‘परन्तु इसे घर लाने के बदले गाडी में पूछताछ करते और इसे कहीं फेक आते।’ प्रथमेश बोला।

‘मैंने कोशिश की थी परन्तु ये बहुत ही शातिर है, और ओरिएट ओबिलिस्क का राज़ जानता है।’ अभिषेक बोला।

‘इसने पुलिस को कुछ बताया।’ प्रथमेश ने पूछा।

‘कहना मुश्किल है। परन्तु जितनी जल्दी हमने इसे छुड़ा लिया है मुझे नहीं लगता की इसे पुलिस को कुछ भी बताने का मौका मिला होगा। वैसे भी ये बहुत टेढ़ा आदमी है पुलिस इससे इतनी जल्दी कुछ उगलवा नहीं पायी होगी।’ अभिषेक बोला।

‘समझा। परन्तु यदि ये इतना खतरनाक आदमी है तो इसे मेरे फार्म हाउस पर शिफ्ट कर दो। इसकी खातिरदारी वहीं करनी पड़ेगी।’ प्रथमेश बोला।

‘ठीक है। वैसे यदि ये वास्को की कोई चाल है तो इसे मैं यहाँ रख भी नहीं सकता।’ अभिषेक बोला।

‘हाँ और यदि ये ओरिएट ओबिलिस्क के बारे में जानता है तो हमें उससे वो राज़ निकलवाना पड़ेगा, क्योंकि उस राज को उससे जानना बहुत ही जरुरी है।’ प्रथमेश बोला।

अभिषेक फिर नीचे अपने ड्राइवर के पास गया और उसे कुछ कहा और जल्द ही पन्द्रवें माले के अपने अपार्टमेंट में आ गया। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और दरवाजा खोला। परन्तु इससे पहले वो कुछ समझ

पाता अभिषेक के सर पर किसी मेटल के फ्लावर वास का प्रहार हुआ और अभिषेक दर्द से कराह उठा।

अभिषेक को समझ ही नहीं आया कि आखिर हुआ क्या। अभिषेक पर किसने प्रहार किया वो देख नहीं पाया और इससे पहले कि वो कुछ समझता उस पर एक और प्रहार हुआ और वो जमीन पर गिर गया था। अभिषेक को लगा था कि वो अमरीक को पकड़ कर लाया था परन्तु उसे नहीं पता था कि वो जिसे एक साधारण सा आदमी समझ रहा था वो असल में था कौन।

कुछ ही पलो में पूरा खेल पलट गया था। अभिषेक ने अमरीक को पकड़ा था और अपने घर लेकर आ गया था। उसका ड्राइवर अभी भी नीचे गाड़ी में उसका इंतज़ार कर रहा था, परन्तु उसके ड्राइवर को नहीं पता था कि उसका इंतज़ार अब कभी ख़तम नहीं होने वाला था। अभिषेक ने अमरीक को बहुत हल्के में लिया था और यहीं उसने अपनी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी गलती कर दी थी और उसे इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।

अध्याय 9

राजवीर को यकीन ही नहीं हो रहा था कि ये क्या हो गया। एक और खून वो भी दो दिनों के अंदर ही। मून स्टोन फार्मा का प्रेजिडेंट अभिषेक कुमार अपने ही घर में मृत पाया गया। आखिर ये सब हो क्या रहा था।

राजवीर फॉरेन अभिषेक कुमार के घर पहुँच गया। उसने अभिषेक की मृत लाश उसके बैडरूम में देखी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अभिषेक की गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी। वो कमरा पूरी तरह से बिखरा हुआ था। अभिषेक की लाश का मुआयना करने से राजवीर को समझ आ गया था कि अभिषेक के सर पर पहले किसी ने जोर से कोई मोटे कांच की स्टेचू या वास वगैरह मारा फिर उसे गोली मार दी। परन्तु यदि गोली ही मारनी थी तो पहले कांच की उस मोटी चीज से सर पर क्यों मारा।

और फिर उस बैडरूम में वो कातिल क्या ढूंढ रहा था। राजवीर ने पूरा कमरा अच्छे से देखा। बैडरूम की अलमीरा में से ऐसा लगता था कि पैसे और कीमती चीजे गायब है। राजवीर की तीव्र निगाहों ने देख लिया था कि वहाँ मैकबुक का चार्जर चार्जिंग पॉइंट पर लगा हुआ था। इसका मतलब अभिषेक के पास मैकबुक था परन्तु वो मैकबुक उस घर में अब नहीं था।

राजवीर को कुछ ख़ास समझ नहीं आ रहा था कि ये किसी लूट के मकसद से की गई हत्या है या कोई और साज़िश।

इतनी ही देर में फॉरेंसिक टीम आ गयी थी और पड़ोसियों ने शायद मृतक अभिषेक के परिवार को खबर कर दी थी। अभिषेक की पत्नी वहाँ पहुँच चुकी थी।

वो बेतहाशा रो रही थी। अभिषेक कुछ चालीस वर्षीय व्यक्ति होगा और उसकी पत्नी को यकीन ही नहीं हो रहा था कि इतनी भरपूर जवानी में उसका पति उससे छीन लिया जायेगा।

वो अभी कुछ भी कहने या सुनाने के काबिल नहीं लग रही थी। राजवीर को हालाँकि उससे बात करनी ही होगी।

मून स्टोन फार्मा भी हिंदुस्तान की बड़ी कंपनियों में शामिल थी और इतनी बड़ी कंपनी के प्रेजिडेंट की उसके ही घर में निर्मम हत्या इससे बढ़िया मसालेदार खबर मीडिया को और क्या मिलेगी।

राजवीर मृतक अभिषेक की पत्नी के पास पंहुचा और पूछा, 'मैं आपका दर्द समझ सकता हूँ परन्तु आपके पति के कातिल तक पहुँचने के लिए मुझे आप से कुछ प्रश्न पूछने होंगे।'

अभिषेक की पत्नी ने हामी में सर हिला दिया।

'क्या आप के पति की किसी से दुश्मनी थी।'

'नहीं' अभिषेक की पत्नी बोली।

'क्या आपको किसी पर भी शक है।'

'नहीं। परन्तु आप सोसाइटी के CCTV चेक कर लीजिये।' अभिषेक की पत्नी बोली।

'मैंने वो मंगवा लिए है। क्या आपके घर पर भी कोई CCTV कैमरा है।' राजवीर बोला।

'नहीं घर पर तो नहीं है।'

'क्या आप बता सकती है की कितना पैसा या कीमती सामान या लैपटॉप आदि लेकर वो कातिल गया होगा।'

'मेरे ख्याल से कुछ ज्यादा पैसे तो नहीं होंगे और हाँ अभिषेक का मैकबुक गायब है और बस वो किताब गायब है जो अभिषेक इस तिजोरी में रखते थे।'

'किताब' राजवीर ने अनायास ही बोला। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

'हाँ। अजीब सा नाम था कुछ ओबिलिस्क जैसा।' अभिषेक की पत्नी बोली।

'ओबिलिस्क ' राजवीर के दिमाग में कुछ तार गूंजे। उसने ये शब्द पहले भी सुना था जब नरेश ठक्कर इस शब्द से चौंक गया था।

'हाँ। पता नहीं उस किताब में ऐसा क्या था कि अभिषेक उसे लॉकर में रखते थे। कहते थे की ये किताब नहीं चाबी है।'

'चाबी है, किस चीज की ' राजवीर ने जोर देकर पूछा।

'पता नहीं। मैंने कभी पूछा नहीं।'

'आपको और कुछ ऐसा लगा जो संदेहास्पद था।' राजवीर बोला।

'नहीं। हम घर पर ज्यादा पैसे नहीं रखते थे।'

‘आप आज कहाँ से आ रही है और क्यों आप अभिषेक के साथ नहीं थी।’ राजवीर ने पूछा।

‘मैं अपनी मम्मी के पास ठाणे गयी थी। परन्तु जैसे ही मुझे हमारे पडोसी का फोन आया मेरा तो संसार ही हिल गया। मैं फॉरेन आ गयी।’ अभिषेक की पत्नी जोर जोर से रोने लग गई।

राजवीर ने वहाँ खड़ी औरतो को इशारा किया और वो उसे सँभालने आ गयी।

राजवीर समझ गया था कि ये ओबिलिस्क नामक किताब कुछ बहुत बड़ा राज़ अपने अंदर समेटे हुए थी।

इधर राजवीर का कांस्टेबल उसके पास आया और बोला,

‘सर ये लीजिये पेन ड्राइव पिछले चौबीस घंटे की CCTV फुटेज इसमें मौजूद है।’

‘ठीक है।’

राजवीर बोला और वो पेन ड्राइव लेकर वो अपनी जीप में आ गया। उसके जीप में उसका लैपटॉप था और उसने वो पेन ड्राइव अपनी लैपटॉप पर लगा ली। धीरे धीरे उसने फॉरवर्ड कर कर के पूरी फुटेज देखी और उसकी आँखे फटी की फटी रह गयी।

उसने देखा की अमरीक आगे आगे चल रहा था और मृतक अभिषेक उसके साथ साथ चिपका हुआ चल रहा था। राजवीर की निगाहें बहुत ही तीव्र थी। उसने देख लिया की अभिषेक ने सब कॉम्पैक्ट पिस्तौल

अमरीक के पीठ पर चिपका रखी थी और अमरीक को लेकर वो अपने घर में आ गया था।

अमरीक का और अभिषेक का क्या सम्बन्ध था। राजवीर को समझ आ गया था कि मूनस्टोन फार्मा कोई तो राज़ छिपा रहा था इसलिए उन्होंने अमरीक को आज़ाद कराने का दबाव बनाया और फिर अभिषेक उसे गन पॉइंट पर लेकर अपने घर आ गया।

राजवीर ने आगे देखा की खाली अभिषेक और अमरीक ही उसके घर में घुसे और अभिषेक का ड्राइवर उन्हें रूम में छोड़ने के बाद चला गया।

राजवीर ने आगे देखा की तकरीबन आधे घंटे बाद अमरीक वहाँ से बाहर निकला और बेतहाशा तेजी से सीढ़ियों के रास्ते भाग गया।

क्या अमरीक ने अभिषेक को मार डाला था ?

अमरीक ने दो दिनों में ये दूसरा क़त्ल किया था।

राजवीर फॉरेन अभिषेक की पत्नी से मिलने उस पन्द्रवें माले के अपार्टमेंट पर गया। अभिषेक की पत्नी गमगीन अवस्था में बैठी हुई थी।

'मैडम एक बात बताईये क्या अभिषेक के पास कोई पिस्तौल थी।'

'मुझे नहीं पता।' अभिषेक की पत्नी ने ना में सर हिलाया।

'आपके ड्राइवर का नाम क्या है।'

'कौन ड्राइवर। अभिषेक तो खुद ड्राइव करते थे।' अभिषेक की पत्नी बोली।

राजवीर का माथा ठनक गया। फिर वो ड्राइवर की ड्रेस में कौन था जिसे उसने CCTV में देखा था।

राजवीर ने अपना लैपटॉप खोला और CCTV फुटेज अभिषेक की पत्नी को दिखाया।

उसमे एक ड्राइवर की ड्रेस में व्यक्ति और अभिषेक अमरीक को पिस्तौल की नौक पर अभिषेक के घर में लेकर घुसे थे और वो ड्राइवर अभिषेक और अमरीक को छोड़ कर वापस नीचे चला गया। आधे घंटे के बाद खाली अमरीक अभिषेक के घर से बाहर निकला था। उसके पास एक छोटा सा बैग था।

'ये बैग तो हमारे बेटे का स्कूल बैग है।' अभिषेक की पत्नी बोली।

'इसमें लगता है अमरीक लैपटॉप पैसा और वो किताब लेकर भागा होगा।' राजवीर बोला।

'परन्तु ये ड्राइवर कौन है मुझे नहीं पता और वैसे भी उस ड्राइवर का चेहरा कुछ साफ़ नज़र नहीं आ रहा है। न ही इस बन्दुक का मुझे पता है।' अभिषेक की पत्नी बोली।

ये गुत्थी बहुत ही उलझी हुई थी। अभिषेक अमरीक को गन पॉइंट पर क्यों अपने घर में लेकर आया। अभिषेक का अमरीक से क्या कनेक्शन। फिर अमरीक ने अभिषेक को मार डाला और वहाँ से भाग गया। वो ड्राइवर कौन था और वो कहाँ गया।

परन्तु सबसे मुख्य था अमरीक। वो जहाँ भी रहता है वहाँ मर्डर हो जाता है।

राजवीर ने फॉरेन उस साइबर सेल के जूनियर अफसर को फोन लगाया।

‘तुम्हें उस फोन की जन्म कुंडली निकालने के लिए कहा था।’

‘सर मैंने सब कुछ निकाल लिया है परन्तु कुछ भी ख़ास नहीं है।’ जूनियर अफसर बोला।

‘हम्म इसका एक ही मतलब है ये अमरीक बहुत शातिर है।’ राजवीर बोला।

‘हाँ बस एक बात अजीब है इसने एक फोन नंबर से बार बार बात की है। और वो नंबर दिल्ली में किसी महिला के नाम पर रजिस्टर्ड है।’ जूनियर अफसर बोला।

‘कौनसी महिला ‘ राजवीर अनायास बोला।

‘कोई मिसेस श्रद्धा सैनी है।’ जूनियर अफसर बोला।

‘कितनी बार बात की है अमरीक ने उससे।’ राजवीर ने पूछा।

‘कई बार, तकरीबन रोज़। कई व्हाट्सप्प मैसेज भी किये है, ऐसा लगता है वो उन्हें बहुत पसंद करता है।’ जूनियर अफसर बोला।

‘ठीक है तुम मुझे इस मिसेस श्रद्धा सैनी की डिटेल्स भेज दो।’ राजवीर बोला।

राजवीर को समझ आ गया था कि ये अमरीक कोई बहुत ही शातिर खिलाडी है। उसने जानबूझ कर दोनों बड़ी फार्मा कंपनी को अपने पीछे लगा लिया है और वो क़त्ल पर क़त्ल कर रहा था।

राजवीर को अब जल्द ही उस अमरीक को पकड़ना पड़ेगा। उसे अब दुःख हो रहा था कि क्यों उसने अमरीक को इतनी आसानी से छोड़ दिया। राजवीर के मन में आया की वो अपने ACP को फोन करे और उसे बोले की अभिषेक कुमार की हत्या के जिम्मेदार वो भी है।

फिर राजवीर ने सोचा की अमरीक को अभिषेक स्वयं अपने घर पर लेकर आया था। परन्तु ऐसा क्यों। राजवीर को एक बार मूनस्टोन फार्मा जाकर भी पता लगाना होगा।

राजवीर का ध्यान अब तक इस बात पर नहीं गया था परन्तु अभी उसे समझ आया कि अभिषेक कुमार का मोबाइल फोन भी गायब था। अमरीक राजवीर का लैपटॉप ही नहीं उसका मोबाइल भी लेकर चला गया था। ये कहानी उलझ रही थी और अमरीक बहुत ही शातिर और खूंखार व्यक्ति था। वो इंटर्न एक ट्रेंड कातिल था।

अध्याय 10

वास्को ने ब्लैक डैनिएल्स का एक बड़ा पेग बनाया और धीरे धीरे अपने सोफे पर जाकर बैठ गया। वो धीरे धीरे उस शानदार व्हिस्की का आनंद उठा रहा था। नरेश अपनी कुर्सी पर बैठे बैठे करवट बदल रहा था।

‘आप को टेंशन नहीं हो रही।’ नरेश बोला। वो वास्को के इतने शांत भाव का आदि नहीं था।

‘ये अमरीक कौन है।’ वास्को बोला। उसकी आवाज़ में गंभीरता और पैनापन था।

‘पता नहीं। परन्तु ये पक्का है उसने पहले सत्या को मारा और फिर अब अभिषेक को।’ नरेश बोला। उसकी आवाज़ में भारीपन था।

‘अभिषेक की गलती थी। उसने अमरीक को हल्के में लिया। परन्तु अच्छा है उस अमरीक ने प्रथमेश का दायां हाथ ही काट दिया।’ वास्को बोला।

‘हाँ वो तो है परन्तु ये अमरीक चाहता क्या है और किसके इशारे पर काम कर रहा है।’ नरेश बोला।

‘तुम अपनी उस सेक्रेटरी को बोलो वो क्या कर रही है। बोलो काम पर लग जाये।’ वास्को बोला।

‘ठीक है। परन्तु जितना मुझे अभिषेक की पत्नी से मालूम पड़ा है वो ये कि अभिषेक की हत्या करने के बाद वो अमरीक उस ओबिलिस्क किताब को लेकर चला गया है।’ नरेश बोला।

‘तुम्हें कैसे पता।’ वास्को ने अपनी व्हिस्की का सिप लेते हुए पूछा।

‘जब वो इंस्पेक्टर राजवीर अभिषेक की पत्नी से पूछताछ कर रहा था तब मेरा एक खबरी वही था।’ नरेश बोला।

‘गुड जॉब। और क्या पता चला।’ वास्को ने पूछा।

‘और ये किअभिषेक का कोई ड्राइवर नहीं था फिर भी जिस दिन वो अमरीक को लेकर अपने घर आया उस दिन कोई ड्राइवर उसके साथ था।’ नरेश बोला।

‘तुम भी उस बिल्डिंग का CCTV निकलवाओ। चेक करते है।’ वास्को बोला।

‘ठीक है।’ नरेश बोला।

‘एक बात बताओ ये राजन की रिसर्च पूरी हो चुकी थी, उसकी डिटेल्स कहाँ है।’ वास्को बोला।

‘डिटेल्स तो है मेरे पास परन्तु वो रिसर्च तब तक अधूरी है जब तक हमें ओरिएट ओबिलिस्क नहीं मिल जाती और हम उसमे से रिलेवेंट कोड नहीं निकाल लेते।’ नरेश बोला।

‘परन्तु अभिषेक के पास तो वो किताब थी तो उसने क्यों नहीं निकल ली डिटेल्स।’ वास्को ने गंभीर स्वर में पूछा।

‘क्योंकि उस राजन ने उस किताब के किन्ही लिमिटेड फ्रेज को ही यूज़ किया है। अब वो फ्रेज कौन से है ये केवल राजन जानता था।’ नरेश बोला।

‘परन्तु राजन को तो मार डाला गया है। ‘वास्को बोला।

‘हाँ और ये राज़ भी राजन के साथ ही चला गया की ओबिलिस्क का इस्तेमाल कैसे करना है।’ नरेश बोला।

‘परन्तु मुझे वो रिसर्च और ओबिलिस्क दोनों चाहिए। यदि प्रथमेश ने वो कोड ढूंढ लिया तो दिक्कत हो जाएगी।’ वास्को बोला।

‘पर आपको इस अमरीक की चिंता नहीं है क्या।’ नरेश बोला।

‘है। वो क्राई में आया और बहुत ही संदेहास्पद था। उसने हमारे एक आदमी को मारा और फिर प्रथमेश के दाएं हाथ को ख़त्म कर दिया। उसने हमसे ज्यादा प्रथमेश को नुक्सान पहुँचाया। पता नहीं क्यो।’ वास्को बोला।

‘हाँ। एक बार वो हाथ लग जाये तो फिर ….’ नरेश बोला परन्तु इससे पहले वो अपना वाक्य कम्पलीट करता वास्को बोला,

‘तुम उस इंटर्न को बोलो अपनी दो महीने की इंटर्नशिप पूरी करे।’ वास्को बोला।

‘क्या, आप उसे अब भी क्राई आने देंगे।’ नरेश का चेहरे का रंग उड़ गया।

‘बिलकुल नरेश। वो क्राई का इंटर्न है। पुलिस ने उसे छोड़ दिया और कोई सबूत नहीं है की उसने अभिषेक को मारा है, केवल शक है। हम उसे बोलेंगे की वो अपनी इंटर्नशिप पूरी करे।’ वास्को बोला।

वास्को के दिमाग में कुछ बहुत बड़ा षड़यंत्र चल रहा था। उसे वो पुराने दिन याद आ गए जब राजन से वो पहली बार मिला था। राजन को उसने ही कन्विंस किया था कि वो अपनी कैंसर क्योर की ड्रग्स पर रिसर्च करे और राजन ने वो रिसर्च पूरी कर ली थी। परन्तु इससे पहले राजन वो रिसर्च वास्को के साथ शेयर कर पाता राजन गायब हो गया था।

वास्को को पता था कि राजन की रिसर्च क्राई एवं मूनस्टोन दोनों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थी। उस रिसर्च से कैंसर का परमानेंट इलाज मिल जायेगा और जो भी कंपनी इस ड्रग को पेटेंट करा लेगी वो इस दुनिया की नंबर वन कंपनी बन जाएगी। वास्को को पता था कि प्रथमेश एक शातिर खिलाडी है और वो आसानी से हार नहीं मानेगा। वो अपनी एड़ी चोटी का ज़ोर लगा देगा और कैंसर क्योर ड्रग्स का पेटेंट करा लेगा।

इसलिए वास्को ने ही राजन को बोला था कि वो अपनी रिसर्च के कीय फीचर्स (key features) को मास्क कर दे। परन्तु राजन ने न सिर्फ अपनी रिसर्च के कीय फीचर्स (key features) को मास्क कर दिया परन्तु एक किताब ओरिएट ओबिलिस्क की कुछ लाइनों को उसका कोड बना दिया। परन्तु वो लाइन कौनसी थी ये केवल राजन को पता था। जिसने भी राजन को मारा था उसे ये नहीं पता था कि राजन की रिसर्च को बिना

ओरिएट ओबिलिस्क की उन लाइन के कोड के नहीं समझा जा सकता था। वो रिसर्च उस किताब के बिना बेकार थी।

‘तुम उस ब्यूटी क्वीन को अभी फोन करो।’

वास्को बोला।

नरेश ने फॉरेन कोई नंबर डायल किया और एक लड़की ने फोन उठाया।

‘तुम ने अच्छा काम किया।’ वास्को ने बिना लड़की की तरफ से कोई जवाब सुने बोला।

‘थैंक्स चीफ‘ लड़की बोली।

‘परन्तु तुम्हारा काम ख़त्म नहीं हुआ है।’ वास्को बोला।

‘मुझे पता है चीफ।’ लड़की बोली।

‘मतलब‘ वास्को ने संशय भरी आवाज़ में कहा।

‘आप का वो प्यारा इंटर्न आपको दुखी कर रहा है।’ लड़की बोली।

‘मुझे बहुत अच्छा लगा की तुम पूरी खबर रखती हो।’ वास्को बोला।

‘चीफ आप को कच्चे लोग पसंद नहीं, इसलिए मुझे अपना काम बहुत सिंसियरली (sincerely) करना पड़ता है।’ लड़की मधुर आवाज़ में बोली।

‘देटस व्हाई आई लाइक यू सो मच‘ वास्को बोला।

‘आपका इंटर्न क्या करे आपके लिए।’ लड़की बोली।

'अपनी इंटर्नशिप पूरी करे और ' वास्को कुछ बोलते बोलते रुका।

'और वो किताब - क्या नाम है - ओबिलिस्क आपको दे दे।' लड़की थोड़ा शरारती अंदाज़ में बोली।

'तुम बहुत ही समझदार हो' वास्को बोला।

'चीफ आपने बोला तो समझो हो जायेगा। इंटर्न कल नरेश को वो किताब दे देगा।' लड़की बोली और उसने फोन काट दिया।

नरेश को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

'वास्को ये लड़की अपने आप को क्या समझती है।' नरेश बोला।

'वो जो बोल रही है वो कर देगी। तुम अपनी पेटी कस लो। उस इंटर्न से काम कराओ और ऐसा दिखाओ की तुम उसके साथ हो।' वास्को बोला।

नरेश को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि कैसे वो लड़की उस इंटर्न को ढूंढ कर उसे क्राई आने के लिए राजी कर लेगी। वो इंटर्न क्यों दो महीने क्राई में काम करेगा। नरेश को अब लगने लगा था कि वास्को की पहेलियाँ कोई नहीं सुलझा सकता था। नरेश भी नहीं।

परन्तु नरेश के मन में शक हो चुका था कि वो इंटर्न कोई बहुत खतरनाक मकसद लेकर आया था और यदि उसे जल्दी ही रास्ते से नहीं हटाया गया तो वो बहुत ही खतरनाक साबित हो सकता था।

अध्याय 11

‘आप मुंबई कैसे आ गयी।’ अमरीक ने आश्चर्य से पूछा।

‘बस तुम्हारी चर्चा कुछ ज्यादा ही हो रही है इसलिए मैंने सोचा तुमसे मिल ही लिया जाए।’ श्रद्धा बोली।

‘हाहा। आपका नेटवर्क बिलकुल पक्का है। सारी ख़बरें रखती है आप।’ अमरीक बोला।

‘मैं तुम्हें ये कहने आयी थी की तुम अपनी इंटर्नशिप पर लोट जाओ।’ श्रद्धा बोली।

‘परन्तु‘ अमरीक कुछ बोलने लगा, पर उसके कुछ भी बोलने से पहले श्रद्धा ने उसे कस कर पकड़ा और एक भरपूर किस किया। श्रध्दा फिर उसे बहुत मोहक अंदाज़ में देखते हुए बोली, ‘जितना बोला उतना करो।’

अमरीक ने बिना कुछ बोले हामी में सर हिलाया।

श्रध्दा अपने शर्ट के बटन खोलने लगी, तभी अमरीक ने उसे रोक दिया।

'क्यों हर बार की तरह कीमत नहीं चाहिए' श्रध्दा बहुत ही मोहक अंदाज़ में बोली।

‘आपने पहले ही बहुत ज्यादा कीमत दे रखी है।' अमरीक श्रध्दा को आँख मारते हुए बोला।

अमरीक ऐसा मौका सामान्यतः छोड़ता नहीं और उसे श्रृध्दा जैसे सुन्दर लड़की शायद मिलती भी नहीं परन्तु वहाँ कोई था जिससे अमरीक डर रहा था। कौन था वहाँ ?

श्रद्धा ने अमरीक को बहुत ही कातिलाना निगाहों से देखा और बोली, 'ठीक है परन्तु ये इंटर्न अपनी इंटर्नशिप पूरी करेगा।'

'बिलकुल। मैं क्राई में कल रिपोर्ट करता हूँ।' अमरीक ने श्रृद्धा को हग करते हुए बोला।

'और वो किताब कहाँ है जो तुम अभिषेक के घर से लाये थे।' श्रद्धा ने पूछा।

'वो मेरे पास ही है।' अमरीक बोला।

'वो तुम मुझे दे दो।' श्रद्धा बोली।

अमरीक ने उस किताब ओरिएट ओबिलिस्क को अपने बिस्तर में गद्दे के नीचे से निकाला।

अमरीक ने उस किताब को एक बार अच्छे से देखा। वो एक हरे रंग की कवर वाली किताब थी जिसके कवर पर एक सुनहरा स्तम्भ बना हुआ था। यह किताब कुछ 300 पन्नो की होगी और इसका ऑथर था राजन शर्मा। अमरीक ने उस किताब को अच्छे से पढ़ लिया था और उसने उसे श्रद्धा को दिया।

'तुम्हें ये किताब अभिषेक के घर पर मिली थी।' श्रद्धा ने उस किताब को देखते हुए बोला।

‘हाँ’

‘फिर तो उसने शायद इस किताब का राज़ जान लिया होगा।’ श्रद्धा बोली।

‘मुझे नहीं लगता। क्योंकि यदि ऐसा होता तो ....’ अमरीक कुछ बोलते बोलते चुप हो गया।

‘हाँ मैं समझ गयी’ श्रद्धा बोली।

‘परन्तु अब इस किताब का भी वो ही हश्र करना होगा जो मैंने उस किताब का किया था जो मेरे पास थी।’ अमरीक बोला।

‘क्या किया था तुमने उस किताब का।’ श्रद्धा बोली।

अमरीक ने श्रद्धा के हाथ से वो किताब ली और वो फिर अपनी किचन में चला गया।

श्रद्धा भी अमरीक के पीछे पीछे किचन में चली गयी।

अमरीक ने उस किताब को किचन में रख दिया और केरोसीन का कैन निकाल कर उस पर केरोसिन उड़ेल दिया।

‘ये तुम क्या कर रहे हो। पागल हो गए हो क्या।’ श्रद्धा बोली।

अमरीक ने श्रद्धा की बात को अनसुनी करते हुए किचन के स्लैब से माचिस उठायी और श्रद्धा के देखते देखते माचिस की तीली जलाई और उस केरोसिन से भीगी किताब पर फेंक दिया।

‘नहीं’ श्रद्धा चिल्लाई।

परन्तु इससे पहले वो कुछ कर पाती वो किताब धु धु कर जल उठी।

‘ये तुमने क्या किया।’ श्रद्धा चीखी।

अमरीक चुपचाप उस किताब को जलता हुआ देख रहा था। उसे एक अजीब सी शैतानी ताकत ने घेर लिया था। वो उस आग को घूर रहा था और उसे पूरा यकीन था कि वो अपने मकसद को पूरा कर लेगा।

क्या था उस रहस्यमयी इंटर्न का मकसद।

श्रद्धा को यकीन ही नहीं हो रहा था कि ये अमरीक ऐसा भी कुछ कर सकता था। वो चीखी, ‘मुर्ख क्या तुमने प्रोफेसर राजन शर्मा के द्वारा लिखी दोनों किताबों को जला डाला है।’

अमरीक कुछ नहीं बोला। वो सिर्फ उस किताब को जलते हुए देख एक अजीब सी ख़ुशी महसूस कर रहा था।

‘तुम्हें पता है की प्रोफेसर शर्मा मर चुके है और इन दोनों किताबों में ही वो कोड था जिससे… ’ श्रद्धा कुछ बोलने लगी तभी अमरीक ने उसकी बात बीच में काटते हुए बोला,

‘अब वो कोड जो पहले इन दो किताबों में कैद था मैं खुद हूँ।’ अमरीक बोला।

‘मतलब‘ श्रध्दा थोड़ी सहज होती हुई बोली।

‘मैंने वो दोनो किताबें पढ़ ली है।’ अमरीक बोला।

'मुर्ख वो 300 पन्नो की दो किताब तुम याद रख सकते हो।' श्रद्धा ने अमरीक को कोसते हुए बोला।

'600 पन्ने तो याद नहीं रख सकता परन्तु यदि कुछ पंद्रह बीस लाइन ही हो तो याद कर सकता हूँ।' अमरीक बोला।

श्रद्धा की आँखे आश्चर्य से चौड़ी हो गयी।

'मतलब तुम्हें पता है की इन 600 पन्ने में से कौनसी वो पंद्रह बीस लाइने है जो कोड है।' श्रद्धा बोली।

'हाँ' अमरीक बोला।

'मुझे नहीं लगता तुम सच बोल रहे हो।' श्रद्धा बोली।

'यदि ऐसा नहीं होता तो क्या में इतनी आसानी से वो दोनों किताबें जला डालता।' अमरीक बोला।

श्रद्धा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। अमरीक कुछ ज्यादा ही खतरनाक था। उसने उसे बहुत कम आँका था।

'ठीक है मैं चलती हूँ।'

आप को लगता है उसकी मौत का यकीन नहीं है।

'तुम कुछ ज्यादा ही थ्रिलर फिल्मे देख रहे हो या ऐसे नावेल पढ़ रहे हो। चुपचाप अपनी इंटर्नशिप करो।'

'ठीक है। परन्तु यदि आप उसकी मदद कर रही है तो ....'

'तो क्या तुम मुझे धमका रहे हो।'

'नहीं नहीं बस बोल रहा था। परन्तु छोड़िये।'

‘अच्छा ही है कि छोड़ दें। बाय’

श्रद्धा ने अमरीक को हग किया और उस कमरे से निकल गयी।

उन दोनों ने अभी क्या वार्तालाप किया वो शायद उन दोनों को ही समझ आया होगा। कोई तीसरा वहाँ होता तो उसे समझ नहीं आता। हालाँकि वहाँ शायद कोई तीसरा था। श्रृद्धा शायद थोड़ी और शार्प होती तो वो उस तीसरे के आभास को पहचान लेती। परन्तु अफ़सोस वो अमरीक से बातों में ही उलझ कर रह गयी और वहाँ से चली गयी।

अमरीक अपने किराये के मकान में था। पुलिस ने उसे छोड़ तो दिया था परन्तु वो अब कभी भी गिरफ्तार हो सकता था। राजवीर अमरीक को अभिषेक के खून के सिलसिले में ढूंढ ही रहा था। उसका ये किराये का मकान इंद्रपुरी पुलिस स्टेशन के ही जूरिस्डिक्शन में आता था; जिसका इंचार्ज राजवीर था ।

अमरीक को समझ नहीं आया कि श्रद्धा दिल्ली से मुंबई सिर्फ उसे वापस क्राई में जाकर अपनी इंटर्नशिप पूरी करने के लिए कहने आयी थी। वैसे अमरीक का फोन उसके पास नहीं था इसलिए उससे किसी भी प्रकार का संपर्क मुश्किल था। परन्तु फिर भी श्रद्धा का इस प्रकार उसके पास आकर उसे मिलना अमरीक को थोड़ा खटक रहा था।

अमरीक ने अपने जीवन में इतना कुछ झेला था कि उसे अब सभी लोगों पर शक होने लगा था। अमरीक को नहीं पता था कि वो किन लोगों के विरुद्ध जा रहा था।

अमरीक ने श्रद्धा से अपना ध्यान हटाया और अभिषेक का लैपटॉप खोला और उसने उसे अपने ही थंब प्रिंट से अनलॉक कर लिया था। अभिषेक का लैपटॉप अमरीक के थंब प्रिंट से कैसे खुल गया था। अमरीक ने ये कैसे कर लिया था। शायद वो कोई कंप्यूटर जीनियस भी था। अमरीक न सिर्फ एक रहस्यमयी इंटर्न था अपितु बहुत ही शातिर व्यक्ति भी था। अमरीक को अपने घर ले जाकर अभिषेक ने अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती कर दी थी, और उसका भुगतान उसे अपनी जान दे कर करना पड़ा था।

अमरीक ने अभिषेक के लैपटॉप को अच्छे से खंगाला और धीरे धीरे उसकी आँखे फटी की फटी रह गयी। आखिर अभिषेक के लैपटॉप में वो क्या देख रहा था।

अमरीक ने फिर अभिषेक का मोबाइल फोन को अपने फेस आई डी (id) से खोला और उसके सारे मैसेज पढ़ने लग गया। अमरीक इतनी आसानी से कैसे अभिषेक का मैकबुक और आईफोन को खोल पा रहा था। आखिर कौन था ये अमरीक?

अमरीक के मन में कुछ बहुत शातिर प्लान बन रहा था। अमरीक धीरे धीरे उस फोन और लैपटॉप के सारे कंटेंट को अच्छे से समझ रहा था। वो उसी लैपटॉप और मोबाइल में पूरी तरह से डूबा हुआ था।

वो इस कदर उस लैपटॉप और मोबाइल का मुआयना करता हुआ अपने ही ख्यालों में डूबा हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला की कब एक

साया चुपचाप उसके घर की बालकनी में घुस आया था। वो शातिर खिलाडी बिना आवाज़ किये उस बालकनी की जाली के दरवाजे को चाकू से काट चुका था। वो खुनी दरिंदा धीरे धीरे अमरीक की ओर बढ़ रहा था। अमरीक अभिषेक के लैपटॉप और आईफोन में पूरी तरह खोया हुआ था।

उस रात एक और खून हो गया था। इंस्पेक्टर राजवीर अचंभित था कि ये क्या हो रहा था। अगले दिन सुबह वो अमरीक के उस किराये के मकान में आ गया था क्योंकि किसी ने पुलिस को खबर दी थी कि वहाँ एक लाश पड़ी है। इंस्पेक्टर राजवीर ने उस लाश का मुआयना किया और वो लाश उस साये की थी जो पिछली रात अमरीक को मारने आया था।

इंस्पेक्टर राजवीर को जब पता चला कि इस मकान का किरायदार अमरीक है तो उसके होश उड़ गए। कौन है ये अमरीक और कैसे वो पिछले दो दिन में तीन खून कर चुका था।

क्राई के स्टोर मैनेजर, मूनस्टोन फार्मा का प्रेजिडेंट और अब ये अनजान व्यक्ति। राजवीर ने अपने जीवन में एक साथ इतने क़त्ल इतनी जल्दी होते हुए नहीं देखे थे।

ये अमरीक कोई इंटर्न नहीं था अपितु ट्रैनड कातिल था। उसने स्टोर मैनेजर का खून एक रस्सी से गला घोंट कर किया था, अभिषेक को उसी की पिस्तौल से गोली मार दी थी और इस व्यक्ति के सीने में खंजर घोप दिया था। परन्तु जब अमरीक के पास अभिषेक की सब कॉम्पैक्ट

पिस्तौल थी तो उसने इस आदमी को चाकू से क्यों मारा, गोली भी मार सकता था।

और उसके किचन में उसने क्या जलाया था। राजवीर पूरी तरह से विस्मित हो चुका था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो अब क्या करे। उसे इस अमरीक को जल्द ही गिरफ्तार करना होगा वरना ऐसे कत्ल होते रहेंगे।

अध्याय 12

वास्को खुश था, उसका वो इंटर्न आज जॉब पर लौट आया था। उस इंटर्न को वास्को ने अपने ख़ास चैम्बर में बुलाया था जो क्राई की बिल्डिंग के अठाईसवें माले पर था। नरेश भी वहाँ बैठा हुआ था।

‘तुम कल कहाँ थे।’ वास्को ने पूछा।

‘जैसे ही मैं जेल से छूटा, मुझे अभिषेक उठा कर ले गया था।‘ अमरीक बोला। उसको कोई भी ग्लानि, पछतावा या डर नहीं था।

वास्को और नरेश को अमरीक के हाव भाव से लग रहा था कि वो बिलकुल ही सामान्य है। उसके अभिषेक का खून कर दिया और शायद सत्या का भी और अब वो एक तरह से वास्को की कैद में है, फिर भी इतना सामान्य।

‘सच सच बताओ कौन हो तुम। तुमने दो- दो खून कर दिए हैं।’ वास्को गुर्राया। उसकी आवाज़ में इतनी तल्खी थी की उसके गाड्र्स ने अपनी अपनी पिस्तौल निकाल ली थी। उन्हें लगा था कि शायद अमरीक कोई हिसांत्मक प्रतिक्रिया नहीं दिखा दे।

‘मैंने कोई खून नहीं किये।’ अमरीक सामान्य रुप से बोला।

‘तो क्या सत्या और अभिषेक को भूत ने मार दिया।’ नरेश बोला। उसकी आँखों में अमरीक के लिए सिर्फ नफरत थी।

‘मैंने आपको बताया ना की सत्या को एक काले मास्कधारी ने मारा।’ अमरीक बोला।

‘और अभिषेक को‘ वास्को ने तल्ख़ अंदाज़ में पूछा।

‘अभिषेक ने मुझे अपने घर में बंद कर रखा था जैसे ही उसने दरवाजा खोला मैं उसके सर पर वास मार कर भाग गया। फिर मुझे नहीं पता उसे किसने मारा।’ अमरीक बोला।

‘तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने अभिषेक के घर से ओरिएंट ओबिलिस्क किताब का पार्ट टू चुराया, उसका लैपटॉप, मोबाइल और उसकी गन।’ नरेश बोला। उसे वो सब पता था जो राजवीर ने अभिषेक के घर पर मृतक अभिषेक की पत्नी सावित्री से पूछा था। परन्तु कैसे ?

‘नहीं नरेश सर।’ अमरीक शांत स्वभाव में बोला।

‘सच बोलो अमरीक‘ वास्को बोला। इस बार वो थोड़ा शांत और गंभीर था।

‘सच बोल रहा हूँ, मैंने लैपटॉप, मोबाइल और वो किताब जरूर ली थी परन्तु वो गन नहीं। मैंने तो अभिषेक को मेटल फ्लावर वास जो उसके बैडरूम में था उससे मारा और भाग गया।’ अमरीक बोला।

‘वो लैपटॉप, मोबाइल और किताब कहाँ है।’ नरेश ने पूछा।

‘आ..’ अमरीक थोड़ा सोच में पड़ गया।

‘सच बोलो वरना तुम्हें मंहगा पड़ेगा।’ वास्को गुस्से में लाल होते हुए बोला।

'वो लैपटॉप और मोबाइल तो मेरे घर पर है और वो किताब।' अमरीक बोला।

'वो किताब' वास्को ने पूछा।

'श्रद्धा ले गयी।' अमरीक बोला।

वास्को ने अमरीक को गुस्से से देखा और उसके पास आकर जोर से तमाचा जड़ दिया। अमरीक को पता नहीं चला की वास्को इतने गुस्से में क्यों था।

वास्को ने अपना फोन निकाला और श्रद्धा को वीडियो कॉल किया। जल्द ही श्रद्धा ने वीडियो कॉल आंसर कर दिया। सामान्यता वास्को श्रद्धा को अपने फोन से कॉल नहीं करता था परन्तु अमरीक ने उसे इतना ज्यादा उत्तेजित कर दिया था कि उसने ये छोटी सी भूल कर दी थी। उसे नहीं पता था कि इंस्पेक्टर राजवीर अत्यधिक शातिर था और ये भूल इंस्पेक्टर राजवीर के राडार पर वास्को को ला खड़ा करेगी।

श्रद्धा ने फोन पर अमरीक को वास्को के केबिन में देखा और समझ गयी कि अमरीक ने उसकी बात मान कर क्राई में रिपोर्ट कर दिया है। वास्को उससे यही करवाना चाहता था।

'यस सर' श्रद्धा बोली।

'वो किताब कहाँ है' वास्को ने पूछा।

'इसने वो किताब जला दी' श्रद्धा बोली।

‘क्या‘ वास्को के आश्चर्य की सीमा न रही। वास्को पूरी तरह से विचलित हो गया। उसने अपने एक गार्ड की बन्दुक ली और अमरीक पर गोली चला दी।

अमरीक के पेट में वो गोली लगी और वो नीचे गिर गया।

‘वास्को सर ये क्या किया‘ श्रद्धा फोन पर चिल्लाई। ‘रुकिए यदि अमरीक मर गया तो ओरिएट ओबिलिस्क का राज़ राज ही रह जायेगा‘

‘मतलब‘ वास्को अमरीक को दूसरी गोली मारने ही वाला था कि वो अचानक रुक गया।

‘इसको फॉरेन डॉक्टर के पास लेकर जाइये।’ श्रद्धा बोली।

वास्को ने नरेश को इशारा किया और नरेश ने फॉरेन ही अमरीक के पेट पर एक कपडा बाँध दिया। नरेश ने इशारा किया और सिक्योरिटी गार्डस फॉरेन अमरीक को लेकर क्राई के अठारहवें फ्लोर पर चले गए और क्राई की मेडिकल टीम अमरीक का इलाज करने लग गयी।

इधर वास्को और नरेश वीडियो कॉल पर श्रद्धा से बात कर रहे थे।

‘अमरीक ने किताब को जला दिया और कह रहा था कि उसने वो कोड याद कर लिया है।’ श्रद्धा बोली।

‘संभव ही नहीं है इतने पन्ने याद करना‘ वास्को बोला।

‘वो कह रहा था कि उसे वो रिलेवेंट फ्रेज पता है जो कोड है‘ श्रद्धा बोली।

'ये कैसे संभव है।' वास्को बोला।

'प्रोफेसर राजन शर्मा ने ओरिएट ओबिलिस्क के दो अलग अलग वर्जन लिखे थे। दोनों के किन्ही फ़्रेसेस को मिलाकर वो कोड बनेगा जिसे हम अपने स्पेशल सॉफ्टवेयर में डालेंगे तो ही वो उनकी रिसर्च की एपीआई को कम्पलीट करेगा। किसी के लिए पहले तो ये जानना की वो फ्रेस कौन से हैं और फिर उन्हें बिना किसी सन्दर्भ के याद करना आसान कहाँ है।' वास्को अपने आप से बोल उठा।

वो शायद अपने आप को ही समझाने की कोशिश कर रहा था कि ये अमरीक - ये इंटर्न कैसे वो कोड याद कर सकता था।

श्रद्धा और नरेश दोनों ही चुप थे।

वास्को फिर अनायास ही बोल उठा 'कहीं वो कोई खेल तो नहीं खेल रहा।'

नरेश वास्को को देख रहा था। श्रृद्धा भी वीडियो कॉल पर चुपचाप वास्को को ही निहार रही थी। वो अपने आप से ही बातें कर रहा था। वास्को बहुत ज्यादा शातिर था। उसने कुछ सोच लिया था उसके चेहरे के भाव गंभीर हो चुके थे।

'इस अमरीक की कुंडली निकालो' वास्को ने श्रद्धा को बोला।

'मैं उसके साथ बहुत समय से हूँ। मुझे उसके बारे में सब पता है।' श्रद्धा बोली।

'नहीं उसने तुम्हें गुमराह किया है।' वास्को बोला।

'ये आपको कैसे पता' श्रद्धा बोली।

'क्योंकि मुझे लगा कि मैं तुम्हें इस इंटर्न के पीछे छोड़ रहा हूँ परन्तु सच यह है की वो तुम्हारा इस्तेमाल मुझ तक झूठी ख़बरें फ़ैलाने में कर रहा था।' वास्को बोला।

नरेश को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा था। परन्तु वो चुप रहा।

'ठीक है। मैं आपके इस इंटर्न की कुंडली निकालती हूँ।' श्रद्धा बोली और उसने फोन काट दिया।

वास्को कुछ गंभीर विचार में चला गया।

'सर एक बात पूंछू' नरेश बोला।

वास्को को पता था कि वो क्या पूछेगा।

'जब ये इंटर्न पांच लाख रुपए के बदले दो महीने हमारे यहाँ बिना पैसे के ही काम करने को राज़ी हुआ तो मुझे कुछ शक हुआ। इसलिए मैंने श्रद्धा को इससे मिलने के लिए बोला। श्रद्धा उस इंटर्न से मिली और उससे फ्रेंडशिप कर ली। ताकि उसकी जानकारी मुझे दे सके । परन्तु श्रद्धा को इस अमरीक ने बेवकूफ बना दिया ' वास्को बोला।

'समझ गया अमरीक ने श्रद्धा को कन्विंस किया और उसने आपको ताकि आप उसे इंटर्न रख लो' नरेश बोला।

नरेश भी सोच में पड़ गया की उस अमरीक को कैसे पता की वास्को जितना पावरफुल और सक्सेसफुल आदमी एक इंटर्न के लिए

इतना पेन लेगा। अमरीक बहुत ही शातिर खिलाडी था और अब नरेश को उससे डर लग रहा था।

‘एक बात और पूछनी थी।’ नरेश बोला।

‘बोलो‘ वास्को बोला और अपने ब्लैक डेनियल की बोतल से एक पेग बनाते हुए सोफे पर बैठ गया। इस अमरीक ने उसका बीपी बढ़ा दिया था।

‘राजन शर्मा ने दो किताब में दो अलग कोड लिखे थे। यदि अमरीक ने अभिषेक के घर से एक किताब उठा भी ली और उसने वो कोड याद कर भी लिया तो वो दूसरी किताब‘ नरेश बोला।

‘हाँ। ये सोचने का विषय है।’ वास्को बोला।

‘राजन शर्मा ने ये दोनों किताबें ही कहीं छुपा रखी थी। श्रद्धा को आपने राजन की सेक्रेटरी बना के रखा था। परन्तु वो भी राजन शर्मा से ये नहीं जान पायी थी की वे दोनों किताबें कहाँ है।’

‘हाँ‘ वास्को ने हामी में सर हिलाया। उसका सर ब्लैक डेनियल की सिप लेने के बाद भी घूम रहा था। अमरीक ने कुछ ऐसा कर दिया था कि वास्को को ये खेल उसके हाथो से फिसलता हुआ नज़र आ रहा था।

‘अभिषेक को वो किताब कैसे मिली‘ वास्को बोला।

‘ये भी अपने आप में एक राज़ है।’ नरेश बोला।

‘तुम उस ACP को बोलो फॉरेन मेरे पास आये‘ वास्को कुछ देर सोच कर बोला और गहरी सोच में पड़ गया।

अध्याय 13

इंस्पेक्टर राजवीर क्राई की उस बिल्डिंग के बाहर खड़ा था। उसे पता चल गया था कि अमरीक क्राई में आया है। वो फॉरेन ही क्राई की बिल्डिंग में घुस गया और उसने रेनू से बोला,

‘मैं उस अमरीक को गिरफ्तार करने आया हूँ। उसने एक और खून कर दिया है।’

रेनू आश्चर्यचकित रह गयी। ‘किसका‘ वो अनायास ही पूछ उठी।

‘अभिषेक कुमार, प्रेजिडेंट मूनस्टोन का‘ राजवीर बोला।

‘क्या‘ रेनू बोली। हालाँकि उसने अख़बार और मीडिया में ये खबर सुन ली थी।

‘परन्तु उसके साथ साथ अभी मैं अमरीक के घर से ही आ रहा हूँ। वहाँ उसने एक और आदमी को मारा है।’ राजवीर बोला।

‘क्या‘ इस बार रेनू वास्तव में चौंक गयी थी।

‘यह अमरीक कोई बहुत खतरनाक ट्रेंड मर्डरर है। इसका यूँ खुले में घूमना बहुत ही ज्यादा खतरनाक है। तुम फॉरेन मुझे चौदहवें फ्लोर में जाने का कार्ड दो।’ राजवीर बोला।

‘सर पर आपको किसने बताया की अमरीक यहाँ आया है।’ रेनू ने पूछा।

‘तुमको क्या लगता है मुंबई पुलिस घास खाती है। अमरीक क्राई की बिल्डिंग की तरफ ही आया है। और यदि वो यहाँ आया है तो जरूर क्राई की बिल्डिंग में ही आया होगा।’ राजवीर गुस्से से बोला।

‘सर मुझे दो मिनिट दीजिये मैं पूछ लेती हूँ।’ रेनू बोली।

‘नहीं तुम मेरे साथ आओ 14th फ्लोर पर।’ राजवीर बोला।

रेनू न चाहते हुए भी राजवीर के साथ लिफ्ट तक गयी और राजवीर ने रेनू को इशारा किया अपना कार्ड tap करके 14th फ्लोर पर जाने के लिए।

राजवीर और रेनू 14th फ्लोर पर पहुँच गए थे। वहाँ का बुलेट प्रूफ ग्लास डोर भी रेनू ने अपने कार्ड से खोल दिया था। ऋतू भी वहाँ थी और इंस्पेक्टर राजवीर को देखकर उसके पास आ गयी।

‘इंस्पेक्टर आप यहाँ’ ऋतू बोली।

‘अमरीक ने अभिषेक के साथ साथ किसी और का भी खून कर दिया है’ रेनू बीच में बोली।

राजवीर ने नज़र भर रेनू को देखा।

‘अमरीक कहाँ है’ राजवीर बोला। वो उस 14th फ्लोर को चारो और से देख रहा था।

‘आज अमरीक... ’ ऋतू कुछ बोलने वाली थी, तभी पीछे से नरेश खट्टर भी आ गया और उसने ऋतू के कंधे पर हाथ रखते हुए उसे रुकने के

लिए कहा। नरेश ने ऋतू की बात पूरी की और बोला,’अमरीक आया था परन्तु हमने उसे पुलिस स्टेशन में जाकर सरेंडर करने के लिए बोल दिया‘

राजवीर को कुछ शक हो गया था। यदि ऐसा था तो रेनू और ऋतू पहले ही उसे बता देती थी।

राजवीर को समझ आ गया की नरेश कुछ छुपा रहा था। राजवीर बोला, ‘ऐसा था तो आप लोगों ने उसे छुड़वाया क्यों। दो खून होने से बच जाते।’

राजवीर की आँखों में गुस्सा था।

‘हमने उसे छुड़ाया।’ नरेश थोड़ा अपनी टोन को उग्र करते हुए बोला।

‘खैर छोड़िये‘ राजवीर बोला।

‘आप प्लीज जाकर अमरीक को पकड़िए। वो पुलिस स्टेशन नहीं गया तो पता नहीं कहाँ होगा।’ नरेश बोला।

‘क्या मैं आज का CCTV फुटेज देख सकता हूँ।’ राजवीर बोला।

रेनू कुछ बोलने वाली थी परन्तु उससे पहले नरेश बोला, ‘हमारा CCTV काम नहीं कर रहा है।’

‘हाउ कनविनिएंट (how convenient)‘ राजवीर सरकास्टिकली (sarcastically) बोला।

‘ठीक है आप अपना CCTV ठीक करवाईये मैं फिलहाल चलता हूँ।’

राजवीर ने ऋतू और रेनू को जी भर के देखा और साथ ही नरेश को भी। फिर उसने चौदहवें फ्लोर को नज़र भर देखा और रेनू के साथ ग्राउंड फ्लोर पर आ गया और चुपचाप क्राई की बिल्डिंग से बाहर निकल गया।

राजवीर को समझ आ गया था कि ये लोग कोई बहुत बड़ी साजिश कर रहे थे।

वो फॉरेन अपने ACP के ऑफिस चला गया।

'सर मुझे क्राई बिल्डिंग को सर्च करने की परमिशन और वारंट चाहिए।' राजवीर बोला।

'क्या तुम पागल हो गए हो।' ACP बोला। वो अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था और उसके उस बड़े केबिन में राजवीर खड़ा हुआ था। ACP माधव एक सुडोल व्यक्तित्व का मालिक था और तक़रीबन पचास वर्ष का था।

'सर आपने ही मुझे इस केस की स्पेशल परमिशन दी थी। वर्ली मेरे जूरिस्डिक्शन में नहीं आता था।' राजवीर बोला।

'और अब मैं ही कह रहा हूँ क्राई को सर्च करने की जरुरत क्या है।' ACP माधव उग्रता भरे स्वर में बोला।

'सर वो अमरीक - वो इंटर्न कोई साधारण आदमी नहीं है अपितु बहुत ही ट्रेंड किलर है।' राजवीर बोला।

ACP माधव कुछ ज्यादा इंटरेस्टेड नहीं लग रहा था।

फिर भी राजवीर आगे बोला। ‘सर पहला खून उसने एक छोटी सी रस्सी से गाला घोंट के कर दिया। कोई भी अनट्रेंड आदमी इतनी आसानी से ये कारनामा नहीं कर सकता। फिर अभिषेक को सब कॉम्पैक्ट पिस्तौल से गोली मारी। मैं शर्त लगा सकता हूँ की आपके कांस्टेबल भी उस गन को इस्तेमाल करने का तरीका नहीं जानते होंगे। और तीसरा...‘

‘तीसरा...‘ ACP माधव आश्चर्य से बोला।

‘हाँ आज सुबह मुझे फोन आया की खड्डा बस्ती की गली नंबर 20 में एक मकान में लाश पड़ी है। जब मैं वहाँ गया तो पता चला उस मकान को अमरीक ने किराये पर लिया हुआ है‘ राजवीर बोला।

‘इससे ये कैसे साबित हुआ की अमरीक ने उसे मारा है।’ ACP माधव बोला।

‘सर वो आदमी कालिया गैंग का शार्प शूटर एंड मर्डर है।’ राजवीर बोला।

‘मैं कुछ समझा नहीं’ ACP माधव बोला।

‘कालिया गैंग कॉन्ट्रैक्ट किलर है, पैसे लेकर लोगों को मारता है‘ राजवीर बोला।

‘वो मुझे पता है‘ ACP माधव झिल्ला कर बोला।

‘तो सर ऐसे प्रोफेशनल मर्डरर को कौन कराटे चोप मार कर गिरा सकता है और फिर उसी के खंजर से उसके दिल के आर पार कर सकता है।’ राजवीर बोला।

‘तो वो कातिल अमरीक को मारने गया था और उसे अमरीक ने मार डाला‘ ACP माधव बोला।

‘हाँ सर और अब आप बताईये की अमरीक को पकड़ा नहीं गया तो क्या क्या हो सकता है‘ राजवीर बोला।

‘परन्तु इसका क्राई से क्या सम्बन्ध है‘ ACP माधव बोला।

‘सर क्राई या तो अमरीक से मिला हुआ है या कुछ और बात है।’ राजवीर बोला।

‘क्या बकवास कर रहे हो‘ ACP माधव बोला।

‘हाँ सर सोचिये अमरीक आज क्राई गया था। मेरे कांस्टेबल ने मुझे खबर दी थी। मैं जब क्राई गया तो रेनू और ऋतू दोनों ने ही कुछ नहीं बोला परन्तु नरेश के अनुसार अमरीक को उन्होंने पुलिस स्टेशन जाने के लिए कहा था।‘ राजवीर बोला।

‘समझ गया। यदि ऐसा था तो रिसेप्शनिस्ट तुम्हें पहले ही बोल देती‘ ACP माधव बोला।

‘बिलकुल‘

ACP माधव को पता था कि राजवीर बहुत ही शातिर और चालाक अफसर है। यदि उसने ठान ली तो इस केस की पूरी तफ्तीश करेगा। उसके पास अभी वास्को का फोन आया था और वास्को नहीं चाहता था कि इस केस की ज्यादा तफ्तीश हो। ACP माधव को किसी भी तरीके से राजवीर को इस केस से हटाना था।

‘देखो राजवीर मैं समझ सकता हूँ‘ ACP माधव बोला। ‘परन्तु ये केस तुम्हारा नहीं है। तुमने उस लाश का पता लगाया जो गायब हो गयी थी। तुम उस केस को क्लोज करो। ये क्राई का मैं देखता हूँ।’

राजवीर को समझ आ गया था कि ACP माधव राजवीर को क्राई का सर्च वारंट नहीं देगा। राजवीर को अब पुलिस में बहुत समय हो गया था और वो उन बातों को भी अच्छे से समझ लेता था जो कही नहीं जाती थी।

‘ठीक है सर मैं उस लाश की तफ्तीश करता हूँ। वो किसी प्रोफेसर की है, प्रोफेसर‘ इससे पहले राजवीर आगे बोलता, ACP माधव बोला, ‘बिलकुल ठीक है तुम उसकी तफ्तीश करो और अमरीक को ढूंढो, क्राई को मुझ पर छोड़ दो।‘

राजवीर ने हामी में सर हिलाया और ACP माधव को सैलूट मारते हुए बाहर आ गया।

राजवीर गुस्से से तमतमा रहा था। उसे पता नहीं क्यों लग रहा था कि अमरीक क्राई में ही है। वो ACP माधव के ऑफिस से बाहर आ गया और तभी उसे किसी ने जोर से सैलूट किया। ‘सलाम साहेब‘

राजवीर ने देखा एक पैंतालीस वर्षीया आदमी हेड कांस्टेबल की ड्रेस में उसके सामने था। ‘अरे रामलाल तुम‘ राजवीर बोला।

‘जी सर।‘ रामलाल बोला।

‘तुम यहाँ कैसे‘ राजवीर बोला।

‘सर मैं ACP माधव साहेब का ड्राइवर हूँ। वो मुझे उतना ही ट्रस्ट करते है जितना आप‘ रामलाल बोला।

‘क्या बात है। वैसे तुम हो ही इतने ईमानदार की कोई भी तुम्हारे काम से इम्प्रेस हो जायेगा।’ राजवीर बोला।

‘थैंक्स सर, वैसे सर सच बताऊँ तो आपके साथ काम करने का जो मजा था वो ACP साहब के साथ नहीं।’ रामलाल बोला।

‘हाहा। मैं समझ सकता हूँ। तुम बहुत ही सच्चे और ईमानदार आदमी हो।’ राजवीर बोला।

‘अरे यह ही नहीं सर कल रात तो ACP साहेब कोई रेड मारने भी गए थे। परन्तु शायद जिसकी तलाश थी वो पहले ही वहाँ से गायब हो गया था। एक वो हैं और एक आप रेड मारते थे। बिलकुल सटीक। कोई नहीं बच के भाग पाता था।‘ रामलाल बहुत ही भाव विभोर स्वर में बोला।

‘हा हा। धन्यवाद हौसला अफजाई के लिए। परन्तु ACP साहेब अकेले क्यों रेड मारेंगे। टीम लेकर जायेंगे।‘ राजवीर हस्ते हुए बोला।

'अब साहेब ये तो पता नहीं। ACP साहेब आजकल थोड़ा अजीब सा ही व्यवहार करते हैं।‘

'फिर तो रामलाल तुम्हें आल दी बेस्ट' राजवीर मुस्कुराते हुए बोला।

‘ठीक है सर मैं चलता हूँ। कभी आपके काम आ सकू तो बताना। आपने मेरी एक बार जान बचाई थी जब हम कालिया गैंग के एक आदमी

को पकड़ने के लिए रेड करने गए थे। मैं आज भी भुला नहीं हूँ की आप ने कैसे अपनी जान जोखिम में डाली थी।' रामलाल बोला।

'कोई नहीं' राजवीर ने रामलाल को हग किया।

रामलाल जा ही रहा था कि राजवीर ने उसका हाथ पकड़ा और बोला 'तुम मेरा एक काम करोगे क्या'

'क्या सर' रामलाल बोला।

राजवीर ने फिर कुछ रामलाल के कान में बोला। रामलाल ने आश्चर्य से राजवीर की ओर देखा और हामी में सर हिलाते हुए वहाँ से चला गया।

इंस्पेक्टर राजवीर ने कुछ बहुत खतरनाक सोच लिया था। वो इस प्रकार से तीन तीन खून करने वाले कातिल को आसानी से नहीं छोड़ सकता था।

अध्याय 14

‘तुमने यहाँ आने का खतरा क्यों उठाया‘ प्रथमेश बोला।

‘सर मैं भी अभिषेक और सत्या की मौत का बदला लेना चाहती हूँ।’ रेनू बोली।

वो दोनों प्रथमेश के आलिशान मकान में बैठे हुए थे। इस समय रात के ग्यारह बज रहे थे और रेनू बहुत ही चौकन्ना होकर वहाँ आयी थी।

‘मैं ये बोलने आयी थी की अमरीक आज क्राई आया था परन्तु वापस नहीं गया।’ रेनू बोली।

‘क्या‘ प्रथमेश ने चौंकते हुए बोला।

‘हाँ। उसको ढूंढने वो इंस्पेक्टर राजवीर भी आया था परन्तु उसे नरेश ने भागा दिया।’ रेनू बोली।

‘समझा। परन्तु अमरीक क्राई में कहाँ है।’ प्रथमेश बोला।

‘वो पता नहीं कहाँ है। वो आया तो था परन्तु वापस नहीं गया। कम से कम रात के नो बजे तक तो नहीं गया, क्योंकि मैं ऑफिस में ही थी।

रेनू बोली।

‘वास्को उसे लेकर चला गया होगा।’ प्रथमेश बोला।

‘नहीं वास्को भी तो ग्राउंड फ्लोर से ही जायेगा। मैं अमरीक के इंतज़ार में वही बैठी हुई थी।‘ रेनू बोली।

‘वैसे ये अमरीक बहुत ही खतरनाक आदमी है। इसने अभिषेक को मारा, सत्या को मारा और वो किताब लेकर गायब हो गया।‘, प्रथमेश बोला।

‘इतना ही नहीं उसने एक और आदमी को भी मारा है।’ रेनू बोली।

‘कालिया गैंग का किलर‘ प्रथमेश बोला।

‘हाँ। आपको कैसे पता।’ रेनू बोली।

‘मैंने ही भेजा था उसे ताकि वो अमरीक को मार कर वो किताब और अभिषेक का लैपटॉप और मोबाइल मेरे पास ले आये।’ प्रथमेश बोला।

‘अच्छा। परन्तु ये अमरीक कोई बहुत ही ट्रेंड किलर है। कहीं वो किसी मिलिट्री वगैरह से तो नहीं है। ऋतू की तरह।’ रेनू बोली।

‘पता नहीं। प्रथमेश बोला। ‘ऋतू की तरह‘ प्रथमेश ने एक पल रुक कर आश्चर्य से पूछा।

‘हाँ। ऋतू एक ट्रेंड फाइटर है। मिलिट्री लेवल। उसके पिता मिलिट्री में थे। ऋतू को हर टाइप का हथियार चलाना आता है और मार्शल आर्ट में तो वो परफेक्ट है।’ रेनू बोली।

‘क्या बात है। तो तुम ऋतू से पूछो की अमरीक का कुछ पता लगा सकती है क्या। वो तो तुम्हारी ख़ास है।’ प्रथमेश बोला।

‘ठीक है मैं ऋतू से पूछती हूँ। वैसे ऋतू को भी इस अमरीक पर पहले ही दिन शक हो गया था।’ रेनू बोली।

‘क्या अमरीक आज कोई लैपटॉप वगैरह लेकर ऑफिस आया था।’ प्रथमेश बोला।

‘हाँ अपना बैग लेकर तो आया था। उसमे लैपटॉप हो सकता है। क्यों?’ रेनू बोली।

‘क्योंकि अभिषेक के लैपटॉप और मोबाइल को लेना बहुत जरुरी है। उसमे ही वो सॉफ्टवेयर है जो उस राजन शर्मा के फॉर्मूले को रन कर सकता है।’ प्रथमेश बोला।

‘मैं समझी नहीं।’ रेनू बोली।

‘अरे यार। प्रोफेसर राजन ने जो फार्मूला बनाया था, जिससे कैंसर का क्योर हो सकता था, वो बहुत ही कॉम्प्लिकेटेड सॉफ्टवेयर (complicated software) पर बनाया था और उसका कोड उसने ओरिएट ओबिलिस्क (aureate obelisk) नामक किताब जिसके दो अलग अलग भाग है, भाग एक और भाग दो, उन किताबों में छिपा दिया था। अब यदि किसी भी फार्मा कंपनी को कैंसर की दवाई बनानी है तो उसे वो सॉफ्टवेयर चाहिए, फिर राजन की रिसर्च चाहिए और वो दो किताबें चाहिए।’ प्रथमेश बोला।

‘इतनी सिक्योरिटी‘ रेनू बोली।

‘हाँ क्योंकि राजन ने जब कैंसर का टेम्पररी क्योर (temporary cure) ढूंढ लिया था तो हमने और क्राई दोनों ने उसे पैसे दिए थे परन्तु क्राई

ने हमसे ज्यादा पैसे दे दिए थे। राजन सिर्फ पैसे के लिए काम करता था।' प्रथमेश बोला।

'तो उस फॉर्मूले में इतनी सिक्योरिटी नहीं थी।' रेनू बोली।

'नहीं। परन्तु राजन को समझ आ गया की क्राई ने तो कई हजार करोड़ बनाये परन्तु उसे दो करोड़ रुपए ही मिले।' प्रथमेश बोला।

'समझ गयी। तो जब उसने कैंसर को जड़ मूल से ख़तम करने का फार्मूला बना लिया तो उसने इसे हाईड (hide) कर दिया।' रेनू बोली।

'हाँ जब जब उस फॉर्मूले से दवाई बनायीं जाएगी एक अलग कोड यूज़ करना पड़ेगा जो केवल राजन को पता होगा। वो उन 300 पन्नो की दोनों किताबों के मिले जुले कॉम्बिनेशन होंगे, ताकि राजन को हर बार पैसे मिले।' प्रथमेश बोला।

'क्या बात है।' रेनू बोली।

'तभी मैंने राजन से संपर्क किया और मैंने कहा पिछली बार तो वास्को बाज़ी मार गया था परन्तु इस बार यदि वो मुझे कोड बेचेगा तो मैं उसे हमारे प्रॉफिट में से परसेंटेज दे दूंगा' प्रथमेश बोला।

'फिर वो राज़ी हो गया।' रेनू ने पूछा।

इससे पहले प्रथमेश कुछ बोलता प्रथमेश का फोन बजा।

'हेलो' प्रथमेश ने फोन उठाया। वो किसी प्राइवेट नंबर से आया था।

‘तुमने हमसे झूठ बोला था और तुम्हें इसकी सजा मिलेगी।’ फोन पर किसी ने खूंखार स्वर में बोला।

‘कौन बोल रहा है, क्या बकवास है।’ प्रथमेश गुस्से में बोला।

‘कालिया बोल रहा हूँ। तूने बताया नहीं की तू जिसे मरवाना चाहता है वो मिलिटरी लेवल ट्रेंड आदमी है।’

‘सॉरी कालिया भाई। मुझे खुद नहीं पता था।’ प्रथमेश बोला।

‘परन्तु अब तुझे इसका खामियाजा तो भुगतना पड़ेगा।’ कालिया बोला। उसके स्वर खूंखार थे और किसी के भी रूह को कंपा सकते थे।

‘भाई आप बताये आपको कितने पैसे भेजू।’ प्रथमेश बोला।

‘पैसे नहीं मुझे सिर्फ उस आदमी का पता बता।’ कालिया बोला।

‘वो क्राई की बिल्डिंग में आज गया था परन्तु अब तक वहाँ से वापस नहीं आया है।’ प्रथमेश बोला।

‘यदि तेरी यह खबर गलत निकली तो समझ ले ये तेरा आखरी झूठ था।’ कालिया बोला और उसने फोन काट दिया।

प्रथमेश के माथे पर बल आ चुके थे। उसने रेनू को देखा।

रेनू ने दोनों आँखे बंद करके अपना सर धीरे से झुकाया। मानो कह रही हो की अमरीक क्राई की बिल्डिंग में ही है।

रेनू को बेतहाशा डर लग रहा था, उसने अपने आप को कहाँ फसा लिया था। प्रथमेश ने कालिया गैंग को इन्वॉल्व करके बहुत बड़ी गलती

कर दी थी, क्योंकि कालिया गैंग अपने किसी भी आदमी की मौत को यूँ आसानी से जाने नहीं देगा।

प्रथमेश को समझ नहीं आ रहा था कि अमरीक ने कैसे कालिया गैंग के आदमी को मार डाला था। कौन था ये अमरीक और क्या चाहता था ? उसका इरादा क्या था ? उसने पहले सत्या को मारा और फिर अभिषेक को।

इसका मतलब कहीं ये तो नहीं की अमरीक वास्को का आदमी है जो चुन चुन कर प्रथमेश के लोगों को मार रहा था। कहने को वो क्राई का इंटर्न था परन्तु वो नुक्सान प्रथमेश को पहुंचा रहा था।

कहीं वो अब रेनू को नुक्सान नहीं पहुंचा दे। और उसे न सिर्फ उस किताब के बारे में पता है अपितु काले मास्कधारी का राज़ भी जानता था। उसे कैसे पता था काले मास्कधारी के बारे में। उसका उस मृतक प्रोफेसर राजन से क्या कनेक्शन था।

'रेनू तुम एक काम करो' प्रथमेश ने रेनू की और देखते हुए बोला।

'बोलिये' रेनू ने पूछा।

'तुम प्रोफेसर राजन के बारे में जो भी जानकारी जुटा सकती हो जुटाओ। कौन कौन था उसकी फॅमिली में' प्रथमेश बोला।

'प्रोफेसर राजन की लाइफ बहुत ही पर्सनल थी।' रेनू बोली।

‘कोई बात नहीं। तुम किसी डिटेक्टिव को हायर करना चाहती हो तो कर लो, परन्तु मुझे प्रोफेसर राजन की एक एक डिटेल चाहिए। मुझे अमरीक और राजन का कनेक्शन जानना है।’ प्रथमेश बोला।

‘परन्तु आपको कैसे पता उन दोनों में कनेक्शन है।’ रेनू बोली।

‘रेनू ये तो बिलकुल क्लियर है। अमरीक ने काले मास्कधारी के बारे में बोला जो की केवल राजन को पता था। अमरीक को राजन की दोनों ओरिएट ओबिलिस्क किताबों का पता था और उसने अभिषेक का लैपटॉप भी इसलिए गायब किया। अमरीक उस राजन से कनेक्टेड है। क्या कनेक्शन है बस यह ही पता लगाना है।‘ प्रथमेश बोला।

‘ठीक है।’ रेनू बोली।

‘परन्तु ये अमरीक कुछ बहुत खतरनाक है। तुम उस ऋतू के साथ ही काम करो।’ प्रथमेश बोला।

‘ऋतू के साथ। क्या वो आपके लिए काम करती है।’ रेनू ने पूछा।

‘नहीं ऋतू को मैं नहीं जानता परन्तु यदि उसको भी कराटे वगैरह आता है तो तुम उसके साथ सुरक्षित हो।’ प्रथमेश बोला।

‘परन्तु वो ऋतू कहीं वास्को को कुछ बता नहीं दे।’ रेनू बोली।

‘वो मुझे तुम पर पूरा भरोसा है तुम ऋतू को वो ही बताओगी जो बताने लायक बात होगी।’ प्रथमेश बोला और धीरे से रेनू के कंधे पर अपने हाथ से मारा।

प्रथमेश नार्मल लगने की कोशिश कर रहा था परन्तु रेनू को भी पता था कि वो अंदर तक हिल चुका था। उस इंटर्न से उसे अब डर लग रहा था। वो इंटर्न वाकई में बहुत ही खतरनाक था। रेनू को हमेशा से ही वास्को, प्रथमेश आदि खतरनाक लगते थे परन्तु उस इंटर्न ने इतने शातिर और ताकतवर लोगों की नींदे उड़ा दी थी। कौन था वो इंटर्न और क्या मकसद था उसका? वो इतनी आसानी से खून कैसे कर रहा था। रेनू को बहुत ही ज्यादा डर लगने लग गया था।

अध्याय 15

इंस्पेक्टर राजवीर ने श्रद्धा के कॉल डिटेल्स निकलवा लिए थे। श्रद्धा ही एक मात्र ऐसे लड़की थी जिससे वो इंटर्न सम्पर्क में था। उस इंटर्न के फोन से कई बार श्रद्धा को फोन किया गया था और कई बार श्रद्धा ने भी उसे फोन किया था। इससे ये तो साफ़ था कि श्रद्धा और वो इंटर्न एक दूसरे को पहले से जानते थे। उस इंटर्न के क्राई को ज्वाइन करने से पहले से। परन्तु श्रद्धा के फोन पर वास्को के पर्सनल नंबर से फोन आना हैरान कर देने वाला था। श्रद्धा को क्राई का मालिक फोन कर रहा था। इसका मतलब साफ़ था कि क्राई का मालिक, श्रद्धा और वो इंटर्न आपस में मिले हुए थे। आखिर क्या राज था इसका ?

राजवीर ने अपने मातहत सब इंस्पेक्टर कुंवर सिंह को बुलाया। कुंवर सिंह तीस वर्षीया हट्टा कट्टा नौजवान था और राजवीर का सबसे भरोसे मंद साथी।

'कुंवर मैं तुम्हें एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम दे रहा हूँ।' राजवीर बोला।

'हाँ सर बोलिये।' कुंवर बोला।

'तुम्हें इस श्रद्धा की जन्म कुंडली निकालनी है।' राजवीर बोला। उसने वो कॉल डिटेल्स रिकॉर्ड के पन्ने कुंवर को दे दिए।

'बिलकुल सर। हो जायेगा।' कुंवर बोला।

'मुझे ये पता लगाना है की श्रद्धा, अमरीक और वास्को के बीच क्या कनेक्शन है।' राजवीर बोला।

'वास्को - वो क्राई कंपनी का मालिक' कुंवर बोला।

'हाँ' राजवीर ने जवाब दिया।

'सर आप बहुत ऊँचा हाथ मार रहे है। होप की आपने ACP साहब से परमिशन ले ली है।' कुंवर बोला।

'मुझे ACP ने इस केस पर काम करने से मना कर दिया है।' राजवीर बोला।

'क्या' कुंवर आश्चर्य से बोला। 'फिर आप...'

राजवीर ने कुंवर के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, 'अमरीक एक शातिर और खूंखार हत्यारा है, वो शायद वास्को के लिए काम कर रहा है और अपने ACP साहब को वास्को ने शायद इन्फ्लुएंस कर दिया है।'

'तो सर आप क्यों इन सब में... ' कुंवर बीच में बोला परन्तु राजवीर ने उसकी बात काट दी और बोला,

'क्या मैं किसी खतरनाक कातिल को ऐसे ही मुंबई की सड़कों पर घूमने के लिए छोड़ दूँ। '

कुंवर को समझ आ गया था कि राजवीर भावुक हो रहा था।

'ठीक है सर मैं आपका काम कर दूंगा।' कुंवर बोला। 'मैं आपको चौबीस घंटो में ही इस श्रद्धा की पूरी डिटेल्स देता हूँ।

कुंवर ने राजवीर को सैलूट किया और उसके केबिन से निकल गया।

राजवीर को अब थोड़ी चैन की सांस आयी थी। उसे पता था कि कुंवर अपने काम में बहुत ही सिंसियर है और जल्द ही वो उस श्रद्धा की पूरी जानकारी निकाल लेगा। राजवीर अभी अपने इन्ही ख्यालो में उलझा हुआ था कि उसे साइबर सेल से जूनियर अफसर का फोन आया।

‘सर वो लाश - वो प्रोफेसर राजन - आपने मुझे कहा था कि उनकी डिटेल्स का पता लगाओ।’

‘हाँ तुमने बताया था कि किसी कैंसर रिसर्च पर काम कर रहे थे ‘ राजवीर ने पूछा।

‘हाँ सर, मैंने उनकी पूरी डिटेल्स निकाल ली है। उनको किसी ने बहुत सारा पैसा कैश में दिया था।’

‘कैश में पैसे दिए थे, तुम्हें कैसे पता।’

‘मैंने उनके बैंक रिकाड्र्स निकाले। कुछ डेढ़ साल पहले उन्होंने अपने अकाउंट में बहुत से पैसे कैश में जमा करवाए थे। एक महीने में कुछ पांच एंट्रीज है कुल मिला कर पचास - बावन लाख रुपये है।’

‘इतना पैसे एक रिटायर्ड प्रोफेसर के पास।’ राजवीर ने अनायास ही बोला।

'साथ ही उन्होंने ये पैसे अपने बेटे के अकाउंट में ट्रांसफर किये थे। जयेश शर्मा जो दिल्ली में इंजीनियरिंग की पढाई कर रहा है।' जूनियर अफसर बोला।

'तो फिर उसके बेटे से मिलना पड़ेगा।' राजवीर बोला।

'बिलकुल मिलिए सर। एक बात और, राजन ने श्रद्धा सैनी को भी महीने के महीने पचास हजार रुपये ट्रांसफर किये है।' जूनियर अफसर बोला।

'क्या। श्रद्धा सैनी को राजन शर्मा पैसे ट्रांसफर कर रहा था। ये क्या गुत्थी है।' राजवीर आश्चर्य से बोला।

'हाँ सर। और ये वो ही है जो पिछले कुछ दिनों से अमरीक से भी टच में थी।' जूनियर अफसर बोला।

'वैरी गुड तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है। तुम्हारे पास इस जयेश शर्मा की तस्वीर हो तो भेज दो।' राजवीर बोला।

'सर उसकी तस्वीर, उसका एड्रेस उसका फोन नंबर सब कुछ मैं आपको भेज रहा हूँ।' जूनियर अफसर बोला और उसने फोन काट दिया।

राजवीर की आँखों में एक अजीब सी चमक आ गयी थी।

श्रद्धा सैनी अमरीक से भी टच में थी, उसको वास्को भी फोन कर रहा था और वो राजन शर्मा से भी महीने के महीने पैसे ले रही थी। इसका मतलब राजन शर्मा की मौत और अमरीक के द्वारा किये गए खून में कुछ तो कनेक्शन था। ACP माधव, राजवीर को इस केस से हटाना चाहता था

परन्तु ACP माधव को नहीं पता था कि ये सब कनेक्टेड केस है। राजवीर को जाने अनजाने में उसने अमरीक के केस पर ही लगा दिया था। राजवीर अब ये बात ACP को तब तक नहीं बताएगा जब तक वो इस केस को सुलझा नहीं लेता।

राजवीर को अब इस श्रध्दा को गिरफ्तार करना होगा। ये केस अब बहुत ही उलझ गया था। राजन शर्मा श्रध्दा को पैसे क्यों दे रहा था। राजन शर्मा के पास इतना पैसा कैश में कहाँ से आया और राजन शर्मा का बेटा अब तक पुलिस के पास क्यों नहीं आया। उसे तो पता चल गया होगा की उसके पिता की लाश मुंबई के हॉस्पिटल में है और यदि उसने वो खबर नहीं भी पढ़ी तो भी इतने दिनों से अपने पिता से बात नहीं हो रही थी तो उसने पता क्यों नहीं लगवाया।

इसका एक ही मतलब है की उसे पता था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। कहीं वो ही तो अमरीक नहीं है। जो अपने पिता की मौत का बदला ले रहा हो। इसका मतलब राजन की हत्या मून स्टोन और क्राई दोनों के कुछ कर्मचारियों ने की थी क्योंकि अमरीक ने क्राई के स्टोर मैनेजर को और मून स्टोन फार्मा के प्रेजिडेंट को मारा था। परन्तु उसने कालिया गैंग जैसे खतरनाक गैंगस्टर के आदमी को भी मार दिया था। किसने कालिया गैंग को एंगेज किया था। ये भी राजवीर के सामने एक बहुत बड़ी पहेली थी।

तभी जूनियर अफसर ने ईमेल पर जयेश शर्मा की पूरी डिटेल्स भेज दी थी। राजवीर ने अपने स्मार्ट फोन में सबसे पहले जयेश शर्मा की फोटो देखी। उसे यकीन था कि अमरीक ही जयेश शर्मा होगा।

परन्तु राजवीर की आँखे फटी की फटी रह गयी जब उसने देखा की जयेश शर्मा तो कोई और ही था। वो एक चौबीस पच्चीस वर्षीया नौजवान था जिसकी शक्ल मृतक राजन शर्मा से मिलती थी। इसका मतलब राजन शर्मा का बेटा दिल्ली में ही था और उसे पता ही नहीं था कि उसके पिता की हत्या को तकरीबन दस बारह दिन हो चुके थे।

राजवीर को समझ आ गया था कि उसे इस जयेश शर्मा से भी मिलना पड़ेगा, परन्तु उससे पहले उसे उस श्रद्धा मैडम से मिलना था। उसने तुरंत ही कुंवर को फोन लगाया, 'हेलो' कुंवर बोला।

'तुम श्रद्धा को अरेस्ट कर लो' राजवीर बोला।

'अरेस्ट?' कुंवर को आश्चर्य हुआ। इंस्पेक्टर राजवीर को क्या हो गया है, पहले ACP साहेब के मना करने पर भी इस केस पर काम कर रहे है और अब बोल रहे है अरेस्ट कर लो।

'किस जुर्म में' कुंवर ने पूछा।

'उसने अनेक क़त्ल करने मेंअमरीक की मदद की है।' राजवीर बोला।

'ये आप कैसे कह सकते है।' कुंवर ने काउंटर में प्रश्न किया।

‘जितना बोल रहा हूँ उतना करो।’ राजवीर ने बोला और फोन काट दिया।

कुंवर को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने कुछ देर सोचा और फिर ACP माधव का नंबर डायल कर दिया।

अध्याय 16

अमरीक को धीरे - धीरे होश आ रहा था। उसको पता ही नहीं चला था कि उसने एक पूरा दिन बेहोशी की हालत में निकाल दिया था। वास्को की गोली से घायल होने के कारण उसका काफी ब्लड लॉस (blood loss) हो गया था। परन्तु डॉक्टर्स ने उसका इलाज अच्छे से कर दिया था। उसके पेट में से गोली भी निकाल दी थी और वो अब जल्द ही ठीक हो जायेगा। अमरीक ने देखा की दोपहर का समय हो रहा होगा और सूरज की हल्की हल्की रोशनी उस कमरे में आ रही थी। वो कोई छोटा मोटा ICU जैसा रूम लग रहा था। तभी एक डॉक्टर की वेशभूषा पहने व्यक्ति उसके पास आ गया।

‘तुम कैसा फील कर रहे हो।’ उस डॉक्टर ने बहुत ही मृदु भाव से पूछा।

उस डॉक्टर के साथ साथ एक नर्स भी उसके पास आ गयी थी।

‘ठीक लग रहा है।’ अमरीक बोला ।

पर .... मैं हूँ कहाँ।’ अमरीक ने पूछा।

‘तुम क्राई की बिल्डिंग में ही हो। ये मेडिकल रूम है।’ डॉक्टर बोला।

‘ओह, यह ठीक है वास्को पहले गोली चलाता है फिर इलाज कराता है।’ अमरीक ने गुस्से से बोला। हालाँकि इस गुस्से के कारण उसके पेट में लगे स्टीट्चेस (stitches) पर जोर पड़ा और उसे दर्द हुआ।

‘तुम इतना टेंशन मत लो। आराम करो।’ डॉक्टर ने अमरीक के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला।

डॉक्टर फिर अमरीक की रिपोर्ट्स आदि देखने में बिजी हो गया। अमरीक अपने पेट को पकड़ कर लेट गया।

अमरीक के सामने पूरा का पूरा सीन आ गया, कैसे वास्को ने उसे गोली मार दी थी और उस श्रद्धा के कहने पर उसने अमरीक को बचाने की कोशिश की थी। अमरीक को पहले से ही श्रद्धा पर शक था और अब उसका शक यकीन में बदल गया था।

अमरीक अभी इन्ही सब ख्यालो में खोया हुआ था कि मेडिकल रूम का दरवाजा खुला और वास्को अपने बॉडी गार्ड और नरेश खट्टर के साथ उसके सामने आ गया था।

‘तू फॉरेन वो कोड लिख कर नरेश को दे दे।’ वास्को ने गुस्से से बोला।

अमरीक ने वास्को को नज़र भर देखा और उसके तमतमाते चेहरे को देख कर उसको हलकी सी हसी आ गयी।

‘अमरीक’ नरेश चीखा। ‘तू अपने आप को बहुत ही ओवर स्मार्ट समझता है। तुझे हमारे बारे में कुछ भी नहीं पता।’

'यदि नहीं पता होता तो मैं यहां आता।' अमरीक ने बहुत ही बेरुखी से बोला।

वास्को को बहुत ही ज्यादा गुस्सा आ गया था। उसने खेंच कर अमरीक को चांटा मारा।

अमरीक बहुत जोर से कराह उठा। डॉक्टर अमरीक की चीख सुनकर अमरीक के पास आ गया। वास्को ने हाथ के इशारा से डॉक्टर को रोक दिया।

'अमरीक तुझे नहीं पता मैं कौन हूँ । यदि तूने वो कोड नरेश को लिख कर नहीं दिए तो समझ लेना की तेरा पल पल जीना मुश्किल हो जायेगा।' वास्को खूंखार स्वर में बोला।

'परन्तु मेरा क्या फायदा।' अमरीक बोला।

'मतलब' वास्को चौंकते हुए बोला।

'मुझे हर कोड चलाने के पचास लाख चाहिए।' अमरीक बोला।

'तुम्हारा दिमाग ख़राब हो गया है क्या।' नरेश बोला।

'सोच लो।' अमरीक बोला।

वास्को सोच में पड़ गया था। नरेश ने वास्को को देखा फिर अमरीक को देखते हुए बोला, 'तू शायद पागल हो गया है।'

अमरीक ने वास्को को देखा और बोला, 'आपका ये चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर इतना दिमाग से पैदल है।'

नरेश गुस्से से तमतमा उठा।

वास्को ने डॉक्टर को देखा और बोला ‘तुम इस अमरीक का इलाज जल्दी करो।’ फिर उसने अमरीक को देखा और बोला ‘मैं तुझसे जल्दी मिलूंगा फिर हम इस बात को आगे कंटिन्यू करेंगे।’

वास्को एक झटके से मुड़ा और तेज कदमो से वहाँ से बाहर निकल गया। उसके पीछे पीछे उसका बॉडी गार्ड भी चला गया। नरेश खट्टर अभी वही खड़ा हुआ था और अमरीक को देख रहा था। उसको समझ नहीं आ रहा था कि कैसे कोई इतना दुस्साहसी हो सकता है। ये इंटर्न कोई बहुत ही शातिर खिलाडी है।

अमरीक ने नरेश की तरफ देखा और बोला, ‘मुझे तो यहाँ तक पता है की राजन शर्मा से तुम्हारी डील कितने में हुई थी‘

नरेश के होश उड़ गए। इस इंटर्न को राजन शर्मा के बारे में पता था।

‘क्या बक रहे हो‘ नरेश ने गुस्से में बोला। वो अंदर से हिला हुआ था।

‘वही जो तू सुन रहा है। तू निरह मुर्ख है। तू नौकर है और नौकर ही रहेगा।’ अमरीक अपना पेट पकड़ते हुए बोला। वास्को के चांटे से उसके स्टीट्चेस (stitches) पर जोर पड़ गया था और वो दर्द कर रहे थे।

‘क्या बकवास कर रहा है।’ नरेश चीखा।

‘हाँ। तू सिर्फ नौकरी कर सकता है। वास्को की तरह कभी बड़ा आदमी नहीं बन सकता।’ अमरीक बोला।

नरेश का चेहरा गुस्से से तमतमा गया। उसको समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या बोले। ये अमरीक कहना क्या चाहता था।

अमरीक नरेश को एक टक देख रहा था। उसके चेहरे पर ऐसा भाव था जैसे वो नरेश के अंतर्द्वंद्व को अच्छे से समझ चुका था। नरेश को समझ नहीं आ रहा था कि वो अब क्या करे।

नरेश की बांहे झुक गयी जैसे वो कोई बाज़ी हार गया हो और वो धीमे कदमो से जाने लगा। तभी अमरीक चिल्लाया 'यदि तुम्हें कभी भी लगे की तुम कुछ कर सकते हो तो मेरे से बात करना। मैं तुम्हारे काम आ सकता हूँ।'

नरेश रुका परन्तु बिना पीछे मुड़े ही उसने अमरीक की बात सुनी। वो डॉक्टर और नर्स भी वहीँ थे और उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि नरेश और अमरीक क्या बात कर रहे है। नरेश फिर तुरंत ही वहाँ से चला गया।

अमरीक चुपचाप अपना पेट पकड़ कर अपने बेड पर लेट गया। नर्स ने उसके स्टीट्चेस (stitches) देखे और कुछ दवाई अमरीक को दे दी।

डॉक्टर भी वहाँ से निकल गया था। उसने नर्स को इशारे से समझा दिया था कि वो इस अमरीक के पास ही रहे।

अमरीक अकेले बिस्तर पर बैठे बैठे अपनी पुरानी यादों में खो गया।

उसे याद आ गया कि कैसे उसने श्रद्धा को मुर्ख बनाया था। जब उसने क्राई की क्विज को टॉप किया और उसने इंटर्नशिप की मांग की, तब एक लड़की उससे अचानक से मिलने आ गयी थी। वो दिखने में बला कि सुन्दर थी और वो उसे रिझाने की कोशिश करने लगी थी। वो लड़की श्रद्धा थी। श्रद्धा के पास कोई कारण नहीं था कि वो अमरीक से मिले और उसे इम्प्रेस करने की कोशिश करे। अमरीक एक बेरोज़गार गरीब आदमी था। उसे तभी समझ आ गया था कि श्रद्धा को क्राई ने भेजा होगा। वास्को की शातिरता के बारे में अमरीक जानता था।

अमरीक ने श्रद्धा को पूरा यकीन दिलाया कि वो उसके लटके झटके में फस गया था। हालाँकि उसने श्रद्धा के पूरे मजे भी लिए। श्रद्धा को भी ज्यादा कुछ ऐतराज नहीं था। वो बहुत ही स्वछंद विचारों की लड़की थी। श्रद्धा को यह ही लगा कि अमरीक उसके हुस्न का दीवाना हो चुका था।

अमरीक ने श्रद्धा को वो सब कुछ बताया जो उसे क्राई में इंटर्नशिप करने में मदद करेगा और क्राई को समझने में मदद मिलेगी। श्रद्धा ने कुछ दिन तक तो अमरीक से खूब बात की परन्तु जब उसको ये यकीन हो गया कि अमरीक वाकई में एक इंटर्न ही है तो उसने काम होने का बहाना बना लिया और धीरे धीरे अमरीक से दूर हो गयी।

परन्तु जैसे ही अमरीक को पुलिस ने गिरफ्तार किया वो फिर अमरीक के पास आ गयी। तब अमरीक का शक यकीन में बदल गया कि श्रद्धा वास्को की एजेंट है।

वास्को ने अमरीक को बहुत कम आँका था। परन्तु अब वो जान गया था कि अमरीक शातिर खिलाडी है और उसने अपने पत्ते अच्छे से खेले थे।

अमरीक ने देखा नर्स दूर बैठी हुई है और कुछ पढ़ रही है। अमरीक ने उसे इशारे से अपने पास बुलाया। उस मेडिकल रुम में अब बस वो दो ही थे।

‘मुझे तुम्हारा मोबाइल फोन चाहिए। मुझे रेनू को फोन करना है।’ अमरीक बोला।

‘नहीं।’ नर्स ने मना कर दिया।

‘प्लीज’ अमरीक बोला।

‘नहीं। मैं तुम्हें अपना फोन नहीं दे सकती।’ नर्स बोली।

‘अच्छा तुम खुद मुझे रेनू रिसेप्शनिस्ट का नंबर मिला कर दे दो। वो क्राई में ही काम करती है।’ अमरीक बोला।

नर्स ने थोड़ी देर सोचा। फिर बोली ‘उसको मेरे फोन से क्यों फोन करना है। यहाँ इण्टरकॉम है, तुम उससे बात कर लो।’

‘ठीक है।’ अमरीक बोला। उसने अपने बेड से उठने की कोशिश की और वो नर्स उसके पास आ गयी और उसे सहारा देकर बेड से उठा

लिया। नर्स फिर अमरीक को धीरे धीरे चला कर इण्टरकॉम के पास लेकर आ गयी। अमरीक की चोट गहरी थी और स्टीट्चेस (stitches) में दर्द भी था परन्तु वो धीरे धीरे इण्टरकॉम तक आ गया था।

अमरीक ने इण्टरकॉम के सामने लगे नंबर्स को देखा और रिसेप्शन का नंबर मिलाया।

‘हेलो’ रेनू बोली।

‘मैं अमरीक बोल रहा हूँ। मेडिकल रूम से।’ अमरीक बोला।

‘क्या’ रेनू आश्चर्य से बोली। हालाँकि उसे पूरा शक था कि अमरीक क्राई की बिल्डिंग में ही है। परन्तु अमरीक ने रेनू को क्यों फोन किया था।

‘तुम फॉरेन मेडिकल रूम में आ जाओ।’ अमरीक बोला।

‘क्या तुम पागल हो। मैं मेडिकल रूम में क्यों आऊं।’ रेनू गुस्से से बोली।

‘क्योंकि मुझे मृतक अभिषेक ने अपने घर में बंद किया था और मैंने उसके मोबाइल फोन को चुरा लिया था...’ अमरीक बहुत ही शातिराना अंदाज में बोला।

रेनू के होश उड़ गए थे। वो खामोश हो गयी थी। उसे समझ आ गया था कि अमरीक क्या धमकी दे रहा था। अभिषेक के फोन से अमरीक को मालूम पड़ गया होगा कि रेनू मूनस्टोन के लिए काम करती थी। उसने बहुत सी जानकारी और इनफार्मेशन मूनस्टोन को दी थी। वो अभिषेक और प्रथमेश के निरंतर टच में थी।

'मैं आ रही हूँ।' रेनू बोली और उसने फोन काट दिया।

नर्स को कुछ समझ नहीं आया परन्तु उसको ये समझ आ चुका था कि अमरीक बहुत ही खतरनाक व्यक्ति था। नर्स ने कुछ ही देर पहले होश में आये अपने पेशेंट के द्वारा वास्को, नरेश और अब रेनू तीनो को अपने सामने बेबस और मजबूर करते देखा था। कौन था उसका ये पेशेंट जो इतना ज्यादा दुस्साहसी और खतरनाक था। नर्स को अब जल्द से जल्द वहाँ से निकलना था। उसे किसी खतरे का अहसास हो रहा था। वो इस पेशेंट के साथ अकेले इस मेडिकल रुम में नहीं रह सकती थी।

रेनू ने तुरंत ही ऋतू को फोन किया।

'ऋतू मुझे तुमसे एक हेल्प चाहिए।' रेनू बोली।

'हाँ बोलो।' ऋतू अपने लैपटॉप पर कुछ काम कर रही थी। वो काम करते हुए रुक गई।

'मुझे अमरीक ने मेडिकल रुम में बुलाया है।' रेनू बोली।

'अमरीक ...' ऋतू के आश्चर्य की सीमा न रही।

'हाँ' रेनू बोली।

'मैं समझी नहीं।' ऋतू बोली।

'अमरीक को वास्को ने शायद मेडिकल रुम में बंद किया हुआ है।' रेनू बोली।

'क्या ?' ऋतू ने आश्चर्य से पूछा।

'ऋतू वो सब छोडो। अमरीक ने मुझे मेडिकल रुम में बुलाया है।'

'तो तुम मत जाओ। तुम्हें उससे क्या' ऋतू बोली।

'नहीं तुम समझ नहीं रही हो। मेरी कुछ मजबूरी है।' रेनू फुसफुसाते हुए अपने मोबाइल पर बोल रही थी।

'क्या कहना चाहती हो। कैसी मज़बूरी' ऋतू बोली।

'तुम को बाद में बताउंगी। क्या तुम CCTV कैमरा बंद कर सकती हो। मैं नहीं चाहती किसी को पता चले मैं मेडिकल रुम में गई थी।' रेनू बोली।

'वो मैं कर सकती हूँ। परन्तु मेडिकल रुम का एक्सेस कार्ड।' ऋतू बोली।

'मेरे पास मास्टर कार्ड है। मैं वास्को के फ्लोर को छोड़ कर कहीं भी जा सकती हूँ।' रेनू बोली।

'ठीक है। अभी छह बज रहे है। तुम सात बजे तक निकलो मैं CCTV बंद कर दूंगी।' ऋतू बोली।

'थैंक्स ए लॉट (Thanks a lot)' रेनू बोली। उसके सांस में सांस आ गयी थी।

सात बज चुके थे। ऋतू ने CCTV बंद कर दिया था। ऋतू को इतने अच्छे से हैकिंग आती थी कि वो किसी भी कंप्यूटर कोड और आईटी सिस्टम का तोड़ निकाल सकती थी। क्राई का कोड तोड़ने में तो वो एक्सपर्ट थी। केवल रेनू जानती थी कि ऋतू इतनी मल्टी-टैलेंटेड है। उसको न सिर्फ अपना काम अच्छे से आता था बल्कि वो कराटे आदि में एक्सपर्ट

थी, फायर आर्म में एक्सपर्ट थी और साइबर एक्सपर्ट भी थी। उसका कोई जवाब ही नहीं था।

रेनू ऋतू की तारीफ मन में करते हुए कब मेडिकल रूम पहुँच गयी उसे खुद पता नहीं चला।

रेनू जैसे ही मेडिकल रूम का गेट खोल कर अंदर आने लगी, वो नर्स मौका पाते ही भाग गयी। चूँकि CCTV बंद था तो नर्स का भागना भी कैमरे में कैप्चर नहीं हुआ।

अब मेडिकल रूम में केवल अमरीक और रेनू ही थे।

'तुम क्या चाहते हो।' रेनू ने बहुत ही घबराते हुए पूछा।

अमरीक अपने बेड पर ही लेटा हुआ था।

'कुछ ख़ास नहीं। मेरा एक सन्देश प्रथमेश तक पहुंचा दो।' अमरीक बोला।

'क्या' रेनू डरते हुए बोली।

'मुझे यदि हर बार कोड रन करने के पचास लाख मिलेंगे तो मैं प्रथमेश को वो कोड दे दूंगा जो प्रोफेसर राजन शर्मा ने बनाया था।' अमरीक बोला।

'क्या? कौन राजन शर्मा।' रेनू बोली।

अमरीक गुस्से से खड़ा हो गया। उसके स्टीट्चेस (stitches) बहुत ज्यादा दर्द कर रहे थे। वो फिर भी धीरे धीरे रेनू के पास पहुँच ही गया।

रेनू उसको देख कर घबरा गयी थी। अमरीक ने अनेकों खून किये थे। उसने कालिया गैंग के खतरनाक अपराधी को भी मार डाला था। रेनू की तो अमरीक के सामने बिसात ही क्या थी।

अमरीक ने रेनू को कस के चांटा मारा। रेनू रोने लगी। ’अब कुछ याद आया, या और याद कराऊँ।’ अमरीक गुस्से में बोला।

रेनू अपना गाल मसलते हुए हामी में सर हिलाने लगी।

‘तो जितना बोला जाये बस तुम उतना ही करो।’ अमरीक बोला।

रेनू ने अमरीक की ओर देखा और चीखी। अमरीक के पीछे कालिया गैंग का एक और कातिल खड़ा था। वो कब चुपचाप उस मेडिकल रुम में आ गया किसी को पता ही नहीं चला।

रेनू वहाँ से भाग गयी। उसने ये भी नहीं देखा की उस कालिया गैंग के प्रोफेशनल किलर ने अमरीक को मारा या नहीं। वो जितनी जल्दी हो सके वहाँ से भाग गयी थी।

वहाँ उस समय एक और खून हो गया था।

थोड़ी देर में वास्को उसके गार्ड के साथ मेडिकल रुम में आ गया था। क्योंकि रेनू ने वास्को को खबर कर दी थी। नरेश भी वहाँ पर आ गया था। वास्को, नरेश और उसका गार्ड सभी की आँखे फटी की फटी रह गयी थी।

कालिया गैंग का प्रोफेशनल किलर वहाँ मरा पड़ा था और अमरीक गायब हो गया था।

अमरीक ने इतना चोटिल होने के बावजूद इस किलर को इतनी आसानी से मार डाला था। वास्को ने अमरीक को बहुत ही हल्के में लिया था। जो कालिया गैंग के लोगों को इतनी आसानी से मार सकता था उससे पन्गा लेना बेवकूफी थी।

कौन था ये अमरीक? आखिर वो क्या चाहता था? वास्को जैसे शक्तिशाली आदमी भी अब पूरी तरह से घबरा गया था।

अध्याय 17

ACP माधव क्राई की बिल्डिंग के मेडिकल रुम में था। रात के दस बज रहे थे और फॉरेंसिक टीम के लोग सबूत इकठ्ठा कर रहे थे।

‘एक बात समझ नहीं आ रही, ये CCTV काम क्यों नहीं कर रहे थे।’ ACP माधव बोला।

वास्को, नरेश, ऋतू, रेनू के साथ साथ वहाँ क्राई के बहुत से लोग उपस्थित थे। जब से इंटर्न अमरीक ने क्राई को ज्वाइन किया था तब से क्राई का भाग्य बदल गया था। अब वहाँ खून पर खून हो रहे थे।

रेनू और ऋतू की घबराहट की कोई सीमा नहीं थी। परन्तु ACP माधव इंस्पेक्टर राजवीर जैसा शातिर नहीं था। वो नहीं भांप पाया की रेनू और ऋतू बाकि लोगों से ज्यादा घबरा रहे थे।

‘हम अपने आईटी से चेक कर रहे है। आखिर हमारे CCTV बार बार ख़राब हो रहे है। पहले जब उस अमरीक ने सत्या को मारा तब भी CCTV नहीं चल रहा था।’ नरेश ने बहुत ही सरकास्टिकली (sarcastically) बोला।

‘ये अमरीक जब भी खून करता है CCTV ख़राब हो जाता है।’ ACP माधव बोला।

‘थोड़ा अजीब इत्तिफाक है, परन्तु हाँ।’ नरेश बोला।

‘एक बात और ये कालिया गैंग अमरीक के पीछे क्यों पड़ा है। अमरीक के घर में भी उस पर हमला हुआ था और उसने उस कालिया गैंग के किलर को मार दिया था। और अब ये एक और कालिया गैंग के खूंखार किलर को अमरीक ने मार दिया।’ ACP माधव बोला।

‘ये तुम पता लगाओ। अमरीक किसी खतरनाक गैंग का मेंबर है।’ वास्को खूंखार स्वर में बोला।

‘परन्तु क्राई जैसे नामी कंपनी में इतना खतरनाक कातिल इंटर्न कैसे बन गया।’ माधव ने पूछा।

‘इंटर्न का इतना ज्यादा वेरिफिकेशन नहीं होता है।‘ नरेश बोला।

‘इसलिए ये अमरीक इंटर्न बन कर आया।’ माधव बोला।

‘माधव तुम्हें जो चाहिए वो करो, मुझे इस इंटर्न से मुक्ति दिलाओ।’ वास्को बोला।

माधव को समझ आ गया था कि उस इंटर्न ने वास्को को हिला कर रख दिया था। इसलिए वास्को ने माधव को बुलाया था। वास्को ने माधव को बता दिया था कि उसने उस इंटर्न को गोली मारी थी। इसलिए माधव खुद इस केस का इन्वेस्टीगेशन कर रहा था।

‘आप चिंता मत करो, उस कातिल को मैं पकड़ लूंगा।’ माधव बोला।

माधव ने फिर सब लोगों को हाथ से जाने का इशारा किया।'आप सब चलिए अपने अपने घर निकालिये। पुलिस को अपना काम करने दीजिये।' माधव बोला।

'फिर माधव ने वास्को से पूछा, 'यह इंटर्न कब से मेडिकल रूम में था।'

'दो दिन से' वास्को बोला।

'और ये कालिया गैंग का कातिल यहाँ कैसे आ गया।' माधव बोला।

'समझ नहीं आ रहा। ये कालिया गैंग इन सब मैं कैसे इन्वॉल्व हो गया।' वास्को बोला।

'क्या आपने' माधव कुछ बोलने लगा।

'नहीं बिलकुल नहीं। मैंने कालिया गैंग को इन्वॉल्व नहीं किया।' वास्को बोला।

'कहीं ...' माधव अपने आप से बोल उठा।

'हो सकता है प्रथमेश' वास्को बोला।

'हम्म' माधव बोला।

'तुम पता करो माधव की कौन है ये इंटर्न और क्या है कालिया गैंग का एंगल और इस इंटर्न की कहानी को ख़तम करो।' वास्को बोला और वहाँ से चला गया।

माधव ने अपनी टीम को हाथ से ईशारा किया की वो काम करे और वो भी वहाँ से चला गया।

इधर रेनू और ऋतू बाकि लोगों की तरह ही बाहर आ गए और रेनू ऋतू से बोली, ‘क्या में तुम्हारे साथ कुछ दिन रह सकती हूँ’

‘क्यों’ ऋतू बोली।

‘मुझे उस इंटर्न ने अपने पास बुलाया था परन्तु इससे पहले में उससे कुछ बात कर पाती वो कातिल वहाँ था और मैं वहाँ से भाग गयी। मुझे नहीं पता उस अमरीक को मुझसे क्या चाहिए। परन्तु वो बहुत ही खतरनाक और डरावना है। तुम्हारे पास, मैं सेफ रहूंगी। प्लीज’ रेनू बोली। वो हाथ जोड़े ऋतू के आगे खड़ी थी। उसके चेहरे पर मासूमियत थी।

‘ठीक है’ ऋतू बोली।

रेनू की थोड़ी सांस में सांस आयी। वो अपने घर नहीं रहना चाहती थी। क्योंकि वो अमरीक अब क्राई से भाग गया था। वो बहुत ही खतरनाक था। वो कुछ भी कर सकता था।

ऋतू ने अपना कुछ काम ख़तम किया और रेनू को बोली, ‘आज मुझे थोड़ा लेट होगा तुम ऐसा करो की मेरे घर चली जाओ, मैं आ जाउंगी।’

‘नहीं’ रेनू बोली।‘तुम चाहो तो काम कर लो मैं रिसेप्शन पर ही बैठी हूँ।’

‘ठीक है।’ ऋतू बोली। ’तुम रिसेप्शन पर रुको मैं कुछ देर बाद आकर तुम्हें ले जाउंगी।’

‘ठीक है‘

रेनू को रिसेप्शन पर छोड़ कर ऋतू चली गयी। रेनू ने फॉरेन अपने फोन से प्रथमेश को फोन लगाया और प्रथमेश ने तुरंत ही फोन उठा लिया।

‘उस अमरीक ने कालिया गैंग के एक आदमी को और मार दिया है।’ रेनू बोली। उसके स्वर में डर और उतावलापन दोनों था।

‘क्या‘ प्रथमेश के पैरो तले जमीन निकल गयी।

कालिया गैंग मुंबई का सबसे खतरनाक गैंग था जिससे मुंबई पुलिस तक घबराती थी। उसके गैंग के दो दो लोगों को इस अमरीक ने मार डाला था। क्या ये अमरीक किसी बड़े गैंग का आदमी है।

प्रथमेश को चुप देख, रेनू फोन पर बोली, ‘सर उस अमरीक ने आपको एक मैसेज देने के लिए बोला है।’

‘क्या मैसेज‘ प्रथमेश बोला।

‘पचास लाख में वो आपको कोड बेच देगा। राजन शर्मा वाला‘ रेनू बोली।

‘क्या‘ प्रथमेश ने आश्चर्य से पूछा।

‘हाँ उसने मुझसे इतना ही बोला‘ रेनू बोली और उसने फोन काट दिया।

प्रथमेश को कुछ सूझ नहीं रहा था। कौन था ये इंटर्न?

इधर थोड़ी देर बाद ऋतू रेनू के पास आ गयी थी और उसे अपने घर लेकर चली गयी। रेनू को ऋतू ने कुछ घंटो का समय दे दिया था और

रेनू ने प्रथमेश से बात कर ली थी। उसने उस खतरनाक इंटर्न अमरीक का मैसेज प्रथमेश तक पहुंचा दिया था।

रेनू और ऋतू ने टैक्सी की और ऋतू के घर की तरफ चली गयी।

‘परन्तु एक बात समझ नहीं आयी‘ ऋतू बोली।

‘क्या‘ रेनू ने पूछा।

‘ये अमरीक मेडिकल रूम में क्या कर रहा था और तुम्हें क्यों बुलाया‘ ऋतू बोली।

‘पता नहीं ऋतू‘ रेनू बोली।

‘तुम मुझसे कुछ छुपा रही हो।’ ऋतू बोली।

‘नहीं नहीं‘ रेनू सकपका गयी।

‘नहीं बताना तो मत बताओ।’ ऋतू बोली।

फिर ऋतू टैक्सी की खिड़की से बाहर देखते हुए अपने आप से ही बोली, ‘यदि ये अमरीक घायल था और मेडिकल रूम में था, मतलब वो बहुत ज्यादा गंभीर अवस्था में होगा और वास्को को पता था तो वास्को ने अमरीक को किसी दूसरे हॉस्पिटल में क्यों नहीं भेज दिया।’

रेनू को लग गया था कि ऋतू को धीरे धीरे सब मालूम पड़ जायेगा। वो चुप ही रही।

ऋतू अपने आप से ही बाते कर रही थी। वो आगे बोली ‘और अमरीक घायल था तो उसने कैसे कालिया गैंग के आदमी को मार डाला। और।’

ऋतू बोलते बोलते रुकी फिर उसने रेनू की तरफ देखा और बोली,

‘एक बात बताओ रेनू तुमने कहा की तुम अमरीक के पास गयी और वो कालिया गैंग का आदमी वहाँ था और तुम भाग कर नीचे आ गयी और नीचे आकर तुमने कितनी देर बाद वास्को को खबर की‘ ऋतू बोली।

‘मैं नीचे आई और पहले तो आपको बोला की CCTV ठीक कर दो‘

‘हाँ तुम्हारा फोन तो आया था और मैंने CCTV ठीक कर दिया था।’ ऋतू बोली

‘बस आपको शायद पंद्रह बीस मिनट लगे CCTV ठीक करने में और मैंने उसके बाद वास्को को फोन पर बता दिया था।’ रेनू बोली।

‘समझी‘ ऋतू बोली।

रेनू के चेहरे पर असमंजस के भाव थे।

ऋतू ने रेनू को देखा और बोली, ‘मतलब ये अमरीक पंद्रह बीस मिनट में न सिर्फ कालिया गैंग के आदमी को मार डालता है परन्तु वहाँ से भाग भी जाता है। ये कुछ ज्यादा ही तेज आदमी है।’

‘वो भी बेहद घायल होने के बावजूद‘ रेनू बोली।

‘तुम्हें कैसे पता वो बहुत ज्यादा घायल था‘ ऋतू बोली।

रेनू थोड़ा सकपकाई फिर बोली अरे अब मेडिकल रुम में था तो गंभीर रुम से घायल ही होगा।’

ऋतू को रेनू और वास्को पर शक होने लगा था और रेनू इसको समझ गयी थी। परन्तु वो कुछ नहीं बोली। वो जल्द ही ऋतू के घर पहुँच गए। उसका अपार्टमेंट पन्द्रहवें फ्लोर पर था और एक दो BHK अपार्टमेंट था। हालाँकि उसकी सोसाइटी में अधिकतर मकान तीन BHK के थे। रेनू ने इस बात पर ज्यादा गौर नहीं किया था। वो चुपचाप ऋतू में मकान में चली गयी। आज की शाम बहुत ज्यादा भयावह थी।

रेनू और ऋतू ने रात ऋतू के अपार्टमेंट में ही बितायी।

रेनू को रात भर नींद ही नहीं आयी और वो अभी भी अमरीक के बारे में ही सोच रही थी। उसने अमरीक से ज्यादा खतरनाक आदमी नहीं देखा था।

ऋतू भी वास्को, रेनू, अमरीक आदि के बारे में सोचते सोचते ही सो गयी थी। दोनों ने कुछ खाया भी नहीं था और भूखे ही सो गई थी।

जीवन में इतना कुछ एक साथ कभी भी उनके साथ नहीं घटा था।

अध्याय 18

इंस्पेक्टर राजवीर को ACP माधव ने अपने केबिन में बुलवाया था। सुबह के दस बज रहे थे और ACP माधव रात को ही क्राई की बिल्डिंग से आया था जहाँ कालिया गैंग के एक और शूटर की हत्या हो गयी थी।

'तुमने कुंवर को श्रद्धा को अरेस्ट करने के लिए बोला।' माधव ने गंभीर स्वर में बोला।

'जी' इंस्पेक्टर राजवीर बोला।

'क्या तुम पागल हो' माधव चिल्लाया।

'सर मैं सिर्फ अपनी ड्यूटी कर रहा हूँ' राजवीर बोला।

'हम्म' माधव बोला।

माधव कुछ सोच में पड़ गया था। इससे पहले माधव कुछ बोलता, राजवीर बोल उठा। 'सर आप कल रात क्राई की बिल्डिंग में गए थे'

'तुम्हें कैसे पता' माधव ने आश्चर्य से पूछा।

माधव को नहीं पता था कि उसका ड्राइवर माधव की मूवमेंट की खबर राजवीर को दे रहा था।

'मुझे तो ये भी पता है कि क्राई में कालिया गैंग के एक और मेंबर का खून हो गया है।' राजवीर बोला।

‘क्या‘ माधव बोला। उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। राजवीर को कैसे पता। ये घटना तो कल रात की ही थी। और माधव ने अभी तक ये बात किसी को नहीं बताई। उसके टीम के लोग राजवीर को ये खबर देंगे इसकी सम्भावना नहीं थी क्योंकि वो लोग राजवीर को जानते ही नहीं थे।

‘यदि आप मुझे बोले तो मैं मदद कर सकता हूँ।’ राजवीर बोला।

माधव ने राजवीर को नज़र भर देखा। वो उसकी क़ाबलियत से अनजान नहीं था।

‘कैसे‘ माधव बोला।

‘बहुत सिंपल है सर। CCTV ऐन मौके पर ख़राब हो गया इसका मतलब ये काम किसी इनसाइडर का है।’

‘हम्म’ माधव सुन रहा था। राजवीर बहुत ही ज्यादा तेज तर्रार पुलिस वाला था। मुंबई पुलिस के कुछ गिने चुने अफसरों में से एक।

‘साथ ही अमरीक वहाँ से घायल होने के बाद भी निकल गया मतलब वास्को की टीम में कोई था जो अमरीक की मदद कर रहा था।’

माधव के आश्चर्य की सीमा न रही। राजवीर को इतनी महीन ख़बरें कौन दे रहा था।

‘सर और एक बात जो सबसे महत्वपूर्ण है।’

‘वो क्या‘ माधव ने उत्सुकता से पूछा।

‘किसने कालिया गैंग को खबर दी की वो इंटर्न क्राई में मौजूद है।’

‘वास्को ने तो नहीं इन्वॉल्व किया उस कालिया गैंग को शायद प्रथमेश.... ’ माधव अपने आप से अनायास ही बोल उठा।

‘और प्रथमेश को किसने खबर की। मतलब साफ़ है वास्को का कोई आदमी है जो प्रथमेश से मिला हुआ है और साथ ही वो ही आदमी या कोई और उस इंटर्न से भी मिला हुआ है।’ राजवीर बोला।

राजवीर एक पल के लिए रुका और फिर बोला, ‘सर साथ ही पुरे घटना क्रम को नोट करे, अमरीक का वापस से क्राई जाना जबकि वो जानता था कि क्राई के लोग उसे या तो पुलिस को दे देंगे या फिर उसे टार्चर करेंगे। परन्तु वो फिर भी अपने आप से क्राई गया। मतलब साफ़ था वो वास्को से कोई डील करना चाहता था।’

माधव राजवीर को एक टक सुन रहा था।

राजवीर ने आगे बोला, ‘अमरीक पर क्राई में किसी ने इतना घातक हमला किया की उसको मेडिकल रूम में रखा गया। और फिर कालिया गैंग का आदमी क्राई की बिल्डिंग में घुस कर अमरीक को मेडिकल रूम में मारने जाता है। अमरीक न सिर्फ CCTV कैमरा बंद करवा देता है अपितु उस कालिया गैंग के आदमी को मार डालता है। क्राई के किसी भी व्यक्ति ने इस घटना को होते हुए नहीं देखा। ये सब कुछ संदेहास्पद है।’

माधव को समझ नहीं आ रहा था कि राजवीर को ये सब बाते इतनी डिटेल्स में कैसे मालूम पड़ गयी। राजवीर तो वहाँ था ही नहीं। या फिर राजवीर वहाँ पर आ गया था।

‘तुम्हें ये सब कैसे पता।’ माधव बोला।

‘सर मुझसे क्राईं की कोई बात छिपी नहीं है।’ राजवीर बोला। राजवीर को माधव के ड्राइवर रामलाल ने बता दिया था कि क्राईं में खून हुआ है और माधव वहाँ जा रहा था। इसलिए राजवीर भी वहाँ आ गया था और दूर से सब घटना क्रम पर नज़र रखे हुए था। बाकि रामलाल की मदद से राजवीर ने एक माइक्रोफोन माधव की जेब में डाल दिया था और वो सब कुछ सुन रहा था जो माधव सुन रहा था। बाद में रामलाल की ही मदद से उसने वो माइक्रोफोन माधव की जेब से निकलवा लिया था।

हालाँकि माधव को ये सब फिलहाल नहीं पता था। परन्तु उसे राजवीर इसलिए बहुत ज्यादा पसंद था। राजवीर कैसे भी ख़बरें निकलवा लेता था और वो उन सब बातों पर गौर कर लेता था जो बाकि लोगों से मिस हो जाती थी। माधव को राजवीर को ही इस केस पर लगाना होगा।

‘सर और एक बात और‘ राजवीर बोला। उसके अंदाज़ में एक अलग सा कॉन्फिडेंस था।

‘क्या‘ माधव ने पूछा।

‘उस लड़की श्रद्धा जिसे आप अरेस्ट करने के लिए मना कर रहे हैं वो न सिर्फ उस इंटर्न से बात करती थी परन्तु वास्को से भी टच में थी। मैंने

उसके कॉल रिकॉर्ड निकलवाए थे। उसने अभी कुछ दिनों पहले ही वास्को से बात की है।'

माधव के होश फाख्ता हो गए। वो अपने ही ख्यालो में घिर गया। राजवीर बहुत ही तेज़ और शातिर था।

राजवीर ने माधव को अपने ही खयालो में घिरा देखा। वो आगे बोला, 'सर वास्को ने उस इंटर्न को अपने यहाँ पनाह दी, और श्रद्धा उन दोनों के बीच कॉमन फैक्टर है, इससे साबित होता है की उन दोनों में कुछ कनेक्शन है ...।'

माधव बोला 'वो सब रहने दो। तुम्हें सिर्फ एक काम करना है।' माधव की आवाज़ में तल्खी थी।

'यस सर' राजवीर समझ गया था कि माधव नहीं चाहता था कि वास्को और इंटर्न के कनेक्शन के बारे में कोई भी खोज की जाये।

'तुम्हें उस इंटर्न को ढूंढना है और मेरे पास लाना है।' माधव बोला।

'मतलब अरेस्ट नहीं करना है, कोई पेपर वर्क नहीं।' राजवीर नटखट अंदाज़ में बोला।

माधव ने नज़र भर राजवीर को देखा। माधव को समझ आ गया था कि राजवीर क्या बोल रहा था। माधव फिर थोड़े मृदु भाव से बोला,

'राजवीर वो इंटर्न एक बेहद खतरनाक कातिल है। क्या तुम समझ रहे हो।'

‘हाँ सर समझ रहा हूँ। मुझे उस इंटर्न को पकड़ना है और और आपको दे देना है। अरेस्ट नहीं दिखानी। शायद उसका एनकाउंटर ही करना है।’ राजवीर बिना रुके एक सांस में बोल गया।

माधव को समझ आ गया था कि राजवीर उसकी बात शायद नहीं मानेगा। परन्तु राजवीर जैसे तेज तर्रार अफसर उसके पास बहुत कम ही थे। और इससे पहले वास्को का माधव पर से विश्वास उठ जाये उसे उस इंटर्न को पकड़ कर वास्को के हवालेकरना था।

‘ठीक है। तुम उस इंटर्न को अरेस्ट करो। देखते है। ’ माधव बोला।

‘ओके सर।’ राजवीर बोला और माधव को सैलूट मारते हुए माधव के केबिन से बाहर निकल गया।

फिर केबिन के दरवाजे पर रुकते हुए राजवीर पीछे मुड़ा और अपनी कुर्सी पर बैठे माधव को देखते हुए बोला, ‘सर पहले मैं उस श्रद्धा मैडम को अरेस्ट कर रहा हूँ।’

और राजवीर बिना माधव का जवाब सुने उसके कमरे से बाहर निकल गया।

माधव को समझ आ चुका था कि राजवीर वो ही करेगा जो उसे सही लगेगा।

माधव को अब जल्दी ही कोई प्लान बनाना पड़ेगा ताकि जैसे ही राजवीर उस इंटर्न तक पहुंचे वो उस इंटर्न को मरवा सके।

तभी माधव का ध्यान किसी बात की तरफ गया और उसने फॉरेन अपने ड्राइवर को बुलाया।

उसका ड्राइवर तुरंत ही आ गया।

'रामलाल तुमने राजवीर को क्या बताया' माधव ने बेहद तीखे अंदाज़ में पूछा।

रामलाल के होश उड़ गए थे। राजवीर तेज था परन्तु माधव भी इतना मुर्ख नहीं था कि समझ नहीं सके की कल रात की पूरी खबर राजवीर को इतनी जल्दी कौन दे सकता था। माधव को पता था कि रामलाल और राजवीर पहले काम कर चुके थे।

रामलाल ने माधव के पैर पकड़ लिए।

'साहब गलती हो गयी, माफ़ी' रामलाल गिड़गिड़ाने लगा।

'कुछ गलतियों की माफ़ी नहीं होती केवल सजा होती है।' माधव चीखा।

उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव था। कुछ संतोष का और कुछ क्रूरता का।

'साहब आप जो बोले में करूँगा। मुझे ये नौकरी चाहिए।' रामलाल गिड़गिड़ाते हुए बोला।

माधव मुस्कराते हुए उसके पैर पकडे उस बूढ़े रामलाल को देख रहा था। माधव के मन में कुछ खतरनाक ही चल रहा था। रामलाल को

खुद नहीं पता था कि वो किसका साथ देगा। उसे राजवीर पसंद था परन्तु माधव बहुत क्रूर था और राजवीर का बॉस भी।

अध्याय 19

श्रद्धा समझ ही नहीं पायी थी कि उसके होटल के कमरे पर इंस्पेक्टर राजवीर और सब-इंस्पेक्टर कुंवर क्यों खड़े हुए थे। उन दो पुलिस वालों को देख कर श्रद्धा घबरा गयी।

'कहाँ निकलने की तैयारी कर रही थी मैडम' राजवीर बोला। उसने नज़र भर के उस होटल के रूम को देखा और श्रद्धा के पैक्ड (packed) किये गए समान को देखा।

श्रद्धा ने कुछ जवाब नहीं दिया। वो विस्मय से उन पुलिस वालों को ही देख रही थी।

श्रद्धा को समझ आ गया था कि यह दोपहर सामान्य दोपहर नहीं है और उसके जीवन में कोई भूचाल आने वाला था।

'मैडम आपको हमारे साथ चलना है।' राजवीर बोला।

'क्या' श्रद्धा भयभीत स्वर में बोली।

राजवीर ने एक लेडी पुलिस को इशारा किया और वो फॉरेन श्रद्धा के पास आकर उसे हाथ से पकड़ कर चलने के लिए पुश करने लगी।

'परन्तु मेरा कुसूर क्या है।' श्रद्धा ने बोखलाहट भरे स्वर में पूछा।

'आपका कसूर ये है की आपने उस कातिल इंटर्न की मदद की है।' राजवीर बोला।

'क्या बकवास है। मैं उसे जानती भी नहीं हूँ।' श्रद्धा बोली।

‘आपका फोन कहाँ है।’ राजवीर बोला।

‘क्या ?’ श्रद्धा पूरी तरह से कंफ्यूज होते हुए बोली।

‘कोई बात नहीं हम आपकी मेमोरी रिफ्रेश कर देते है। आपने रेगुलरली उस इंटर्न से संपर्क साध रखा था।’ राजवीर बोला।

‘हाँ तो। वो क्राई का इंटर्न था उससे बात करने से ये कैसे साबित होता है की मैं उसकी मदद कर रही थी।’ श्रद्धा तपाक से बोली।

‘आप क्राई में काम करती है।’ राजवीर बोला।

‘नहीं’ श्रद्धा अनायास बोल उठी।

‘आप उस इंटर्न से क्यों टच में थी। और आप उसे कैसे जानती है।’ राजवीर बोला।

श्रद्धा के पास कोई जवाब नहीं था। वो समझ गयी थी की राजवीर उसे अरेस्ट किये बिना नहीं मानेगा। वो चुप रही।

राजवीर ने महिला पुलिस कांस्टेबल को इशारा किया और वो श्रद्धा को लेकर पुलिस वैन में चली गयी। साथ ही राजवीर ने श्रध्दा के उस होटल रूम की तलाशी ली जहाँ वो रह रही थी। उसने श्रध्दा के लैपटॉप और फ़ोन को भी अपनी कस्टडी में ले लिया।

जल्द ही राजवीर अपने पुलिस स्टेशन में श्रध्दा के साथ एक कमरे में बैठा हुआ था। साथ ही कुछ महिला पुलिस कर्मी भी थी।

‘तुम यदि कोआपरेट (cooperate) करोगी तो फायदे में रहोगी।’ राजवीर बोला।

श्रध्दा चुप ही रही।

'यदि तुम सोच रही हो की वास्को तुम्हें बचाएगा तो तुम गलत सोच रही हो।' राजवीर बोला।

श्रद्धा अभी भी चुप ही थी।

राजवीर ने अपने फोन पर जयेश, जो प्रोफेसर राजन शर्मा का बेटा था, उसकी फोटो निकाली और श्रद्धा को दिखाई।

'क्या तुम इसे जानती हो ' राजवीर बोला।

श्रध्दा ने उस फोटो को देखा परन्तु कुछ नहीं बोली।

हालाँकि राजवीर ने श्रद्धा के हाव भाव नोट कर लिए थे।

'देखिये मैडम यदि आप सच बोलेंगी तो आपके लिए और मेरे लिए दोनों के लिए अच्छा रहेगा।' राजवीर गंभीर स्वर में बोला।

श्रद्धा ने राजवीर को देखा और फिर कुछ देर सोचने के बाद बोली, 'मैंने प्रोफेसर राजन शर्मा के यहाँ नौकरी की थी। मैं उनकी सेक्रेटरी थी।'

'तो ...' राजवीर ने जानबूझ कर और जानकारी निकलवाने की कोशिश की।

श्रद्धा को समझ आ गया था कि राजवीर को पता चल चुका था कि श्रद्धा क्या कहना चाहती थी। परन्तु वो फिर भी उसी के मुँह से सुनना चाहता था।

'तो ये की, ये तस्वीर राजन शर्मा के बेटे की है।' श्रद्धा थोड़ा इर्रिटेट होते हुए बोली।

‘आप ने कितने दिन प्रोफेसर राजन शर्मा के यहाँ नौकरी की।’ राजवीर बोला।

‘तकरीबन एक साल ‘ श्रद्धा बोली।

‘उस समय जब वो कुछ कैंसर की ड्रग्स के बारे में रिसर्च कर रहे थे।’ राजवीर ने पूछा। राजवीर ने राजन शर्मा की पूरी डिटेल्स निकलवा ली थी। वो पूरी तरह से तैयार था।

‘हाँ ‘

‘तो तुम राजन शर्मा से पैसे क्यों लेती थी‘ राजवीर ने जोर दे कर पूछा।

‘अब क्या अपनी सैलरी लेना भी कोई अपराध है।’ श्रद्धा बोली।

‘इतनी सैलरी‘ राजवीर ने अपने फ़ोन पर रिकॉर्ड चेक करते हुए कहा।

‘मैं बहुत अच्छी सेक्रेटरी हूँ।’ श्रद्धा बोली।

‘ठीक है। फिर आपने राजन शर्मा के यहाँ नौकरी क्यों छोड़ दी।’ राजवीर ने अपने फ़ोन को वापस जेब में रखते हुए पूछा।

‘मैं एक फ्रीलांसर (free lancer) हूँ। कहीं भी बहुत दिनों तक नहीं रहती। राजन शर्मा ने मुझे अच्छे पैसे दिए परन्तु फिर मैं वहाँ बोर हो गयी और किसी और काम की तलाश में निकल गयी।’ श्रद्धा बोली।

‘और वो दूसरा काम वास्को ने दिया।’ राजवीर ने अनायास ही पूछा।

श्रद्धा अब चुप रही।

‘वास्को ने तुम्हें एंगेज किया ताकि तुम उस इंटर्न का पता लगाओ जो अचानक से क्राई में आ गया है। तुम उस इंटर्न के संपर्क में आयी और उसके बारे में पता लगाया परन्तु तुम्हें कुछ मालूम नहीं पड़ा।’ राजवीर बोला।

श्रद्धा के हाव भाव से राजवीर को मालूम पड़ रहा था कि वो सही बोल रहा है। श्रद्धा हालाँकि चुप ही थी।

‘परन्तु एक बात समझ नहीं आयी, तुमने उस इंटर्न को दुबारा मिलने की कोशिश क्यों की।’ राजवीर बोला।

श्रद्धा कुछ नहीं बोली।

राजवीर अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया। उसने एक लेडी कांस्टेबल को इशारा किया और वो फॉरेन श्रद्धा के पास आ गयी। उस कांस्टेबल ने श्रद्धा को ज़ोर से तमाचा मार दिया। श्रद्धा का गाल लाल हो गया। वो अपनी कुर्सी से भी गिर गयी।

‘श्रद्धा तुम्हारे पास दो ऑप्शन है, या तो मेरे सवालों का सच सच जवाब दो या फिर इन मैडम को झेलो।‘ राजवीर बोला। उसके स्वर में उग्रता और गुस्सा था।

श्रद्धा चुप ही रही। राजवीर को समझ आ गया था कि श्रद्धा वास्को के खिलाफ कुछ नहीं बोलेगी। उसे कुछ और रास्ता ही निकलना

पड़ेगा। क्योंकि यदि उसे अमरीक तक पहुंचना है तो श्रद्धा ही एक मात्र सहारा है।

श्रद्धा चुप ही थी। वो बहुत देर तक उस खूंखार कांस्टेबल के थप्पड़, लात, घुसे खाने के बाद भी चुप ही रही। उसे पता था उसे किसी तरह से ये रात निकालनी है। सुबह शायद वास्को उसे बचा ले।

वो रात श्रद्धा के लिए एक बहुत लम्बी रात थी। उसे जमीन पर ही सुलाया गया और रात भर उस पर अनेकों टार्चर किये गए। जैसे ही वो थोड़ा भी सोने की कोशिश करती उसे पैर पर इलेक्ट्रिक शॉक दिया जाता। उसे न तो कुछ खाने को दिया गया न ही पानी। उसे जितना टार्चर राजवीर कर सकता था वो करता गया। हालाँकि उसने इस बात का ध्यान रखा की कहीं उसके शरीर पर कोई ऐसा निशान नहीं हो जो उन्हें बाद में कोर्ट में परेशान कर सकता हो।

हालाँकि श्रद्धा के लिए वो टार्चर भी बहुत ज्यादा था। उसने वो रात कैसे उस पुलिस स्टेशन में निकाली सिर्फ वो ही जानती थी। जल्दी ही सुबह हो गयी और राजवीर रात भर पुलिस स्टेशन पर ही रहा। वो श्रद्धा के टूटने का इंतज़ार कर रहा था परन्तु श्रद्धा नहीं टूटी।

सुबह तकरीबन सात बजे श्रद्धा को राजवीर ने अपने केबिन में बुलाया। श्रद्धा जो रात भर से जगी हुई थी और बुरी तरह से थप्पड़, लात घूसों से पीटी गयी थी, लड़खड़ाती हुई राजवीर के केबिन में पहुंची और

वहाँ उसकी ख़ुशी की सीमा ही नहीं रही। उस पुलिस स्टेशन में एक वकील आ गया था। श्रद्धा को पता था कि वास्को उसे बचा ही लेगा।

‘आप जा सकती है।’ राजवीर बोला। उसने श्रद्धा को देखा और फिर उस वकील को।

श्रद्धा के चेहरे पर एक मुस्कान आ गयी।

‘इंस्पेक्टर राजवीर क्या आप ऐनस्यूर (ensure) कर सकते हैं कि कोई पेपर वर्क नहीं होगा। हम नहीं चाहते की श्रद्धा की अरेस्ट का कोई भी रिकॉर्ड हो।’ वकील बोला।

श्रद्धा की मुस्कराहट अब एक दम्भ भरी हंसी में बदल गयी थी। उसको समझ आ गया था कि वास्को न सिर्फ उसको बचा लेगा परन्तु उसके ऊपर कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड भी नहीं आने देगा।

‘बिलकुल। हमने वैसे भी कोई पेपर रिकॉर्ड नहीं बनाया है।’ राजवीर बोला।

‘वैरी गुड। और आपके पुलिस स्टेशन का cctv।’ वकील ने पूछा।

‘आप चिंता मत कीजिये, श्रद्धा मैडम यहाँ आयी या लायी गयी का कोई रिकॉर्ड नहीं है, न पेपर में न वीडियो में।’ राजवीर बोला।

‘गुड। इसका मतलब श्रद्धा कल रात से कहाँ है इसका कोई सबूत नहीं है ‘

'हाँ एस पर (as per) होटल रिकाड्र्स श्रद्धा मैडम चेक आउट कर चुकी है। होटल से उनके एग्जिट का CCTV भी है। फिर वो कहाँ गयी किसी को पता नहीं है।' राजवीर बोला।

श्रद्धा को ये सब कन्वर्सेशन अब थोड़ी गड़बड़ लग रही थी। ये वकील श्रद्धा को बचाने आया था या ...., इससे पहले श्रद्धा कुछ और सोच पाती एक कर्कश आवाज़ ने उसका ध्यान आकर्षित किया, 'तुम अब जा सकती हो, आज़ाद हो।' ये आवाज़ उस लेडी कांस्टेबल की थी जिसने रात भर श्रद्धा को टार्चर किया था।

श्रद्धा को उस चेहरे से इतनी नफरत हो गयी थी कि वो बिना कोई बात किये चुपचाप उस वकील के साथ चली गयी और उसकी टोयोटा इन्नोवा क्रिस्टा गाड़ी में बैठ गयी।

वकील ने फॉरेन ही गाड़ी दौड़ाई और कुछ ही देर में वो एक सुनसान रास्ते पर थे। सुबह के आठ बज रहे थे।

'आप कौन हैं और हम कहा जा रहे हैं ।' श्रद्धा ने वकील से पूछा।

वकील के चेहरे के हाव भाव एक दम से बदल गए।

'हम कहीं नहीं जा रहे, तुम जा रही हो एक बहुत लम्बे सफर पर।' वकील खूंखार स्वर में बोला।

श्रद्धा के होश फाख्ता हो गए। वास्को उसे मारना चाह रहा था। इसलिए वकील इस बात पर बहुत ज़ोर दे रहा था कि श्रद्धा को अरेस्ट

होते हुए और उस वकील के द्वारा उसे पुलिस स्टेशन से ले जाते हुए किसी ने देखा तो नहीं।

'प्लीज' श्रद्धा गिड़गिड़ाने लगी। उसे समझ आ गया था कि उसने राजवीर से कोआपरेट (cooperate) नहीं करके बहुत बड़ी गलती कर दी थी।

वकील ने गाडी रोकी। उसने श्रद्धा को गाड़ी से उतरने का इशारा किया।

श्रद्धा बेहद घबरा गयी थी। वो चुपचाप गाड़ी से उतर गयी। तभी वो वकील भी गाडी से उतर गया। वो सुनसान रास्ता था और हालाँकि सुबह के साढ़े आठ बज रहे थे परन्तु वहाँ कोई ख़ास ट्रैफिक नहीं था। वकील ने अपनी रिवाल्वर श्रद्धा पर तान दी। श्रद्धा बुरी तरह गिड़गिड़ाने लगी।

'मुझे माफ़ कर दो, मुझे जाने दो मैं किसी को कुछ भी नहीं बताउंगी।' श्रद्धा जोर जोर से रोने लगी।

'यह ही तो हम नहीं चाहते।' पीछे किसी अनजान आदमी की आवाज़ आयी। श्रद्धा को और भी ज्यादा घबरा गयी।

वो अनजान आदमी धीरे धीरे चलते हुए श्रद्धा के पास आया और श्रद्धा के होश उड़ गए वो आदमी था -- इंस्पेक्टर राजवीर।

'तुम क्या चाहते हो' श्रद्धा ने टूटी आवाज़ में पूछा।

'श्रद्धा मैडम, मेरे ऊपर उस इंटर्न को ढूंढने का बहुत प्रेशर है और मुझे कुछ भी करने की फ्रीडम है।' राजवीर क्रूर अंदाज़ में बोला।

'परन्तु मैं नहीं जानती वो इंटर्न कहाँ है।' श्रध्दा ने भरी आवाज़ में कहा। उसका गला प्यास और डर दोनों के कारण बैठा हुआ था।

'परन्तु जो तुम जानती हो वो बता नहीं रही हो। इसलिए यदि तुम कोआपरेट (cooperate) नहीं करोगी तो हम यहाँ बनाएंगे तुम्हारा हिट एंड रन केस और अननोन (unknown) वेहिकल डाल कर केस क्लोज।'

श्रद्धा को समझ आ गया था कि राजवीर किसी भी हद तक गुज़र सकता था।

'और हाँ वास्को ने बोला है कि उसे तुम नहीं चाहिए। वो तुम्हें एक बार फोन करके पछता रहा है। इसलिए तुम उसके लिए परेशानी ज्यादा हो' राजवीर ने बहुत ही शातिर अंदाज़ में कहा।

श्रद्धा अब पूरी तरह से टूट चुकी थी। वो रात भर के टार्चर से गुजरी थी और अपने आप को पुलिस स्टेशन में सेफ भी महसूस कर रही थी। परन्तु यहाँ इस अनजान जगह पर इन दो क्रूर लोगों के हाथो वो मज़बूर थी। श्रद्धा राजवीर को नहीं जानती थी, वरना वो समझ जाती की राजवीर कोई भी गैरकानूनी हरकत नहीं करेगा। इसलिए उसे डरने की आवश्यकता नहीं थी।

परन्तु पुलिस स्टेशन में वो सेफ थी और यहाँ इस सुनसान रास्ते पर कुछ भी हो सकता था।

'पूछो' श्रद्धा ने हारे हुए स्वर में कहा।

'तुम राजन शर्मा के पास क्यों गयी थी और फिर उस इंटर्न के पास ' राजवीर ने पूछा।

'मैं वास्को के लिए काम करती हूँ। राजन शर्मा ने वास्को की कंपनी से कैंसर का परमानेंट क्योर बनाने की डील की थी | परन्तु वास्को को शक था कि राजन शर्मा डबल क्रॉस कर सकता था। राजन शर्मा प्रथमेश - मूनस्टोन फार्मा कंपनी के मालिक के भी संपर्क में था। इसलिए वास्को ने मुझे राजन शर्मा के पास भेज दिया ताकि मैं उसके साथ रह कर उस पर नज़र रख सकूँ।'

'और राजन शर्मा ने तुम्हें बिना कुछ पूछे सेक्रेटरी रख लिया।' इंस्पेक्टर राजवीर ने शक भरे अंदाज़ में पूछा।

'वो मेरे रूप के माया जाल में ऐसा उलझा की न सिर्फ मुझे सेक्रेटरी रखा परन्तु मुझे सभी सीक्रेट बताये। उसी ने मुझे बताया की उसने कोड को एन्क्रिप्ट कर दिया है और दो किताबों में छिपा दिया है। एक किताब उसने मुझे दी और दूसरी अपने बेटे को।' श्रद्धा बोली।

'फिर वो किताब अभिषेक के घर कैसे पहुंची' इंस्पेक्टर राजवीर अनायास ही पूछ बैठा।

'मैंने ही वो किताब अभिषेक को बेच दी थी।' श्रद्धा बोली।

'क्या' इंस्पेक्टर राजवीर चौंक गया।

'हाँ। मुझे लगा था कि दोनों किताबें एक सी ही है। इसलिए पैसा कमाने के लिए मैंने अभिषेक को एक किताब बेचीं और वास्को को बताया की एक ही किताब है जो राजन शर्मा के बेटे के पास है।' श्रद्धा बोली।

'फिर' राजवीर ने जोर देकर पूछा। वो मन ही मन कुछ सोच रहा था।

'फिर राजन शर्मा का खून हो गया और मैं उसके बेटे से मिलने गयी क्योंकि वास्को को वो किताब चाहिए थी। परन्तु राजन शर्मा का बेटा गायब हो गया था। मुझे लगा शायद वास्को ने राजन शर्मा को मारा है परन्तु वास्को ने इंकार कर दिया।' श्रद्धा बोली।

'और बिना उन दोनों किताबों के राजन शर्मा का कोड यदि वास्को के हाथ लग भी जाता तो भी वो उसका फायदा नहीं उठा सकता था।' राजवीर बोला।

'हाँ। फिर राजन शर्मा की हत्या के कुछ दिनों बाद एक इंटर्न वास्को की कंपनी में अप्लाई करता है। वास्को को लगा था कि कहीं ये इंटर्न राजन शर्मा का बेटा तो नहीं।' श्रद्धा बोली।

'इसलिए वास्को ने तुम्हें उस इंटर्न से दोस्ती करने भेजा।' राजवीर बोला। फिर कुछ सोच कर वो आगे बोला, 'तुम समझ गयी थी की वो इंटर्न राजन शर्मा का बेटा नहीं है। क्योंकि तुमने राजन शर्मा के बेटे की तस्वीर देखी थी। फिर भी तुम उसके साथ रही ये जानने के लिए की वो इंटर्न कौन है। परन्तु तुम्हें कुछ भी संदेहास्पद नहीं लगा और वास्को को तुमने उस इंटर्न को क्राई में रखने के लिए कह दिया।' राजवीर बोला।

'हाँ। हालाँकि बाद में जब एक के बाद एक खून हुए तो वास्को समझ गया की वो इंटर्न बहुत कुछ जानता है। मैंने उससे बात की और उसने

मुझे कहा की अभिषेक के घर से वो उस ओरिएट ओबिलिस्क किताब को लेकर आ गया है।' श्रद्धा बोली।

'और फिर वास्को ने तुम्हें उस इंटर्न को पकड़ कर लाने के लिए कहा।' राजवीर बोला।

'हाँ उस इंटर्न को वापस क्राई आने के लिए कहना था। मुझे लगा था वो अमरीक मानेगा नहीं परन्तु वो बहुत आसानी से मान गया था।' श्रद्धा बोली।

'तुमने उससे वो किताब ली।' राजवीर बोला।

'नहीं उसने वो किताब जला दी।' श्रद्धा बोली।

'क्या' राजवीर के आश्चर्य की सीमा न रही।

'ये ही नहीं उसने कहा की उसने दोनों किताबें जला दी है और वो कोड याद कर लिया है।' श्रद्धा बोली।

'दोनों किताबें।' राजवीर सोच में पड़ गया।

'एक किताब तुमने कहा कि अभिषेक को बेच दी, दूसरी राजन शर्मा के बेटे के पास थी जो तुम्हारे हिसाब से गायब हो चुका है। वो दूसरी किताब अमरीक के पास कहाँ से आयी। हो सकता है वो झूठ बोल रहा हो।' राजवीर बोला।

'हाँ परन्तु उसके हाव भाव से लगा नहीं वो झूठ बोल रहा हो।' श्रद्धा बोली।

'फिर क्या हुआ।'

'फिर अमरीक - वो इंटर्न क्राई के दफ्तर गया और वास्को ने उसे गोली मार दी, परन्तु इससे पहले वो उसे मार डालता मैंने वास्को को बता दिया कि उस इंटर्न के पास ही वो कोड है। इसलिए वास्को ने अमरीक को अपने मेडिकल रूम में रखा था।' श्रद्धा बोली।

राजवीर अब बहुत ज्यादा उलझ गया था। इस इंटर्न को मारने के लिए कालिया गैंग के लोग उसके पीछे पड़े है और वो उनका ही एक के बाद एक कत्ल कर रहा है। वो भी गोली से घायल होने के बाद उसने कालिया गैंग के खूंखार गैंगस्टर को मार डाला। कुछ तो गड़बड़ थी।

इधर राजवीर अपने ही विचारों में खोया हुआ था, वो वकील इन्नोवा में बैठा हुआ था और दोनों ने ही ध्यान नहीं दिया की श्रद्धा उस हाई वे पर बेहोश हो गयी थी। इससे पहले राजवीर कुछ समझ पाता एक ट्रक बेहद तेजी से राजवीर की तरफ बढ़ा। राजवीर ने ऐन मौके पर ट्रक की आवाज़ सुन ली थी और वो एक तरफ कूद गया परन्तु बेहोश पड़ी श्रद्धा को मौका ही नहीं मिला और वो ट्रक उसे कुचलता हुआ तेजी से भाग गया।

राजवीर सकते में आ गया। उसने ट्रक का नंबर नोट करने की कोशिश की परन्तु उस ट्रक पर नंबर प्लेट नहीं थी। इसका मतलब शायद किसी ने जानबूझ कर श्रद्धा को मार डाला था। राजवीर के मुँह से अनायास ही निकल गया 'वास्को'।

वो वकील तेजी से राजवीर के पास भागते हुए आया और दोनों फिर श्रद्धा की कुचली लाश के पास पहुंचे।

राजवीर ने थोड़ी देर पहले जो धमकी श्रद्धा को दी थी वो कुदरत ने पूरी कर दी थी। श्रद्धा की इहलीला ख़तम कर दी गयी थी, वो भी एक अनजान ट्रक द्वारा - हिट एंड रन। काश राजवीर ने वो शब्द अपने मुँह से न निकाले होते तो शायद श्रद्धा जिन्दा होती। कभी कभी सरस्वती जबान पर बैठ जाती है और जो बोलो वो हो जाता है।

राजवीर के लिए ये पहेली और भी ज्यादा कठिन हो गयी थी। वो उस इंटर्न को कहाँ ढूंढे। उसको अब श्रद्धा के मोबाइल और लैपटॉप से ही कुछ जानकारी निकालनी पड़ेगी जो अभी भी उसके कब्जे में थे।

अध्याय 20

अमरीक ने आँखे खोली तो उसने अपने आप को एक बंद कमरे में पाया। उसके स्टीट्चेस (stitches) अब थोड़े ठीक हो गए थे। अमरीक की ड्रेसिंग भी कर दी गयी थी। उसकी दवाईआं भी वहाँ थी। वो जिसके भी पास था उसने उसका अच्छा ख्याल रखा था।

सुबह के शायद आठ या नो बज रहे होंगे। उस छोटे कमरे में एक रोशनदान था जहाँ से सूरज की रोशनी आ रही थी। अमरीक धीरे धीरे अपने बिस्तर से उठा और थोड़ा चलने फिरने की कोशिश करने लगा। वो धीरे धीरे कदमो से उस बंद कमरे में चहल कदमी कर रहा था। उसने उस कमरे में रखे एक छोटे से फ्रिज में से एक पानी की बोतल निकाली और थोड़ा पानी पिया। वो अब थोड़ा ठीक महसूस कर रहा था। अमरीक को पता था कि उसे जल्द ही बाहर निकलना होगा। वो बहुत देर तक यहाँ नहीं रह सकता। उसने अपने कान दिवार की तरफ लगाए ताकि वो दूसरी तरफ की बाते सुन सके परन्तु कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। इसका मतलब जो उसे यहाँ लाया था वो अब जा चुका था। अमरीक ने अपने कमरे का दरवाजा खोलने की कोशिश की परन्तु वो बंद था।

अमरीक ने पास ही पड़े हुए एक ब्लैक हेयर पिन को उठाया। जिसने भी उसे बंद किया था उसने किसी लड़की को भी वहाँ कभी बंद किया होगा क्योंकि सामान्यतः लड़कियां जो हेयर पिन लगाती हैं वो वहाँ

गिरी हुई थी। अमरीक ने उस हेयर पिन से किसी तरह उस दरवाजे का ताला खोलने की कोशिश की। अमरीक शायद कोई ट्रेंड व्यक्ति ही था क्योंकि उसने जल्दी ही वो दरवाजा खोल लिया था।

हालाँकि उस दरवाजे के दूसरी और शायद कोई बहुत बड़ी अलमारी रखी थी। अमरीक ने धीरे धीरे दम लगा कर वो अलमारी भी एक तरफ खिसका दी थी। उसके स्टीट्चेस (stitches) में अब दर्द होना चालू हो गया था। अमरीक ने कुछ ज्यादा ही फिजिकल एक्सरसाइज कर ली थी।

वो अपना पेट पकड़ कर बैठ गया। धीरे धीरे कुछ समय बीता और अमरीक को याद आया की वो कहाँ है। यहाँ ऐसे बैठना खतरे से खाली नहीं था। उसे बहुत कुछ करना था और उसे उठ खड़ा ही होना होगा। अमरीक का जो भी मकसद था उसने उसमे एक अलग ऊर्जा भर दी थी। वो उठा और उस अलमारी को पुनः अपने स्थान पर खिसका कर उस घर से बाहर निकल गया। अमरीक ने इस तरह पुनः उस अलमारी को अपनी जगह खिसका दिया था कि किसी को पता नहीं चलेगा की अलमारी अपनी जगह से हिली भी थी।

अमरीक ने घायल होने के बाद भी गजब की हिम्मत और साहस दिखाया था।

अमरीक किसी अपार्टमेंट में था। उसने जल्द ही मैन दरवाजा खोला और बाहर आ गया। लिफ्ट से होते हुए वो जल्दी ही उस सोसाइटी

से बाहर आ गया था। वो कोई साधारण सी ही सोसाइटी थी इसलिए वहाँ के गाड्र्स आदि ज्यादा एक्टिव नहीं थे। वैसे भी सुबह के नो दस बज रहे थे और वो समय बहुत लोगों के अपने अपने ऑफिस जाने का था। इसलिए किसी ने भी अमरीक को ज्यादा नोटिस नहीं किया था।

अमरीक उस बिल्डिंग से बाहर आ गया और धीरे धीरे सड़कों पर चलने लग गया। उसे नहीं पता था कि वो कहाँ जायेगा। परन्तु सबसे पहले उसे अपना हुलिया सुधारना था।

वो एक होटल में गया जो कि शायद बहुत ही थर्ड ग्रेड होटल होगा। उसने होटल में कमरा बुक किया।

‘सर एडवांस में 2000 रुपए देने होंगे।’ रिसेप्शनिस्ट बोला। उसे अमरीक को देख कर लग गया था कि इसके पास पैसे नहीं होंगे।

‘क्या तुम UPI लेते हो‘ अमरीक बोला।

‘हाँ सर मैं गूगल पे, फ़ोन पे, अमेज़न पे सब ले लेता हूँ।’ रिसेप्शनिस्ट बोला।

‘ठीक है एक फोन लगाओ।’ अमरीक बोला।

‘फोन‘ रिसेप्शनिस्ट झिझका।

‘अरे कॉल के दस रुपए और ले लेना। नंबर बोल रहा हूँ फोन लगाओ।’ अमरीक बोला।

रिसेप्शनिस्ट थोड़ा झिझका परन्तु उसने उस नंबर पर फोन लगा दिया जो अमरीक ने दिया था। वो नंबर रेनू का था। रेनू ने फोन उठा लिया।

‘मैं अमरीक बोल रहा हूँ’ अमरीक ने फोन उस रिसेप्शनिस्ट से लेते हुए बोला।

रेनू क्राई के ऑफिस में अभी अभी ही आयी थी। उसके पैरो तले जमीन खिसक गयी।

‘अरे घबराओ नहीं। ये आदमी तुम्हें एक नंबर बताएगा उस नंबर पर 2010 रुपए गूगल पे कर दो।’ अमरीक बोला।

रेनू अमरीक से कुछ पूछना या फोन डिसकनेक्ट कर देना चाहती थी, परन्तु वो दोनों में से कुछ नहीं कर पायी, वो चुप ही रही।

‘यदि अगले दो मिनट में पैसे नहीं आये तो मेरे पास वास्को का नंबर भी है।’ अमरीक ने बहुत ही शातिरता से कहा।

रेनू ने कुछ नहीं बोला। उसने उस होटल के रिसेप्शनिस्ट का नंबर नोट किया और उसे 2010 रुपए गूगल पे कर दिए।

अमरीक ने होटल के रिसेप्शनिस्ट को देखते हुए बोला ‘ये नंबर नोट कर लो। मेरे सारा खर्चा ये मैडम उठाएंगी’

होटल का रिसेप्शनिस्ट थोड़ा घबरा गया। परन्तु फिर भी उसने अमरीक को उसके कमरे की चाबी दी और अमरीक अपने कमरे में चला गया।

कुछ ही देर में अमरीक नहा धो कर उस होटल के रिसेप्शनिस्ट के पास आया।

‘मुझे एक टैक्सी करके दे दो।’ अमरीक ने रिसेप्शनिस्ट को बोला।

रिसेप्शनिस्ट ने हामी में सर हिला दिया और एक काली पीली टैक्सी अमरीक को करवा के दे दी। अमरीक उस टैक्सी में बैठ कर अपने घर चला गया।

ये वो ही मकान था जहाँ अमरीक श्रद्धा से मिला था और जहाँ उस कालिया गैंग के आदमी की हत्या हुई थी।

उसने वहाँ देखा एक पुलिस कांस्टेबल बाहर खड़ा था और उसके किराये के मकान के बाहर पुलिस ने बैरिकेड टेप चिपका रखी थी। अमरीक फिर भी किसी तरह बचते बचाते अपने घर में घुस गया और उसने अपना सारा सामान पैक कर लिया। वो एक बड़े सूटकेस के साथ वापस आया और टैक्सी में बैठ गया।

'चलो'

'वापस होटल' टैक्सी वाले ने पूछा।

'नहीं तुम रेलवे स्टेशन चलो' अमरीक बोला।

टैक्सी वाले को अमरीक कुछ गड़बड़ करैक्टर लग रहा था परन्तु वो चुपचाप उसे रेलवे स्टेशन ले गया। अमरीक ने टैक्सी वाले को कैश दे दिया। उसने अपने घर से कुछ पैसे ले लिए थे और ढंग के कपडे भी पहन लिए थे।

अमरीक रेलवे स्टेशन में उतर कर टैक्सी के जाने के बाद अंदर गया और लोकल ट्रैन स्टेशन की तरफ चला गया। उसने टिकट काउंटर से विरार की टिकट ली और चुपचाप विरार के लिए निकल गया।

अमरीक बहुत शातिर खिलाडी था। जिसने भी उसे पकड़ा था वो नहीं जानता था कि अमरीक ने विरार में भी एक किराये का मकान लिया हुआ था। उसने ऐसे और कितने मकान लिए थे ये कोई नहीं जानता था।

अमरीक जल्द ही विरार पहुँच गया और अपने दूसरे मकान में चला गया।

अमरीक का वो मकान एक छोटा सा एक BHK अपार्टमेंट था।

वो सोसाइटी भी कोई ख़ास सोसाइटी नहीं थी और बहुत ही मामूली सी थी।

अमरीक ने जल्द ही अपने बेड पर अपना बड़ा सूटकेस रखा और उसमे से एक पाउच में से एक सिम निकला और कुछ सोचने लग गया।

अमरीक तुरंत ही अपने घर से निकला और जल्द ही पास ही के मार्किट में पहुँच गया और एक फ़ोन की दुकान की तरफ चला गया। उसने एक नया नोकिआ का सस्ता फ़ोन लिया और उसमे वो सिम डाल दिया। अमरीक पुनः अपने घर आ गया और किसी को फ़ोन लगाया। उसने कुछ देर उस व्यक्ति से बात की और फिर उसने सिम अपने उस फ़ोन में से निकाल दिया था और उस नोकिआ फ़ोन और सिम को अपने बड़े बैग में रख दिया।

अमरीक घायल था और इस दिन भर की दौड़ धुप से बहुत थक गया था। उसे पता भी नहीं चला कब वो अपने बिस्तर पर लेटा और नींद के आगोश में चला गया था। उसे आराम की जरुरत भी थी।

अमरीक को पता भी नहीं चला, कब शाम हो चुकी थी और बहुत ज्यादा भूख और प्यास ने उसे उठा दिया था।

रात के आठ बज रहे थे और अमरीक को भूख भी लग रही थी। वो फॉरेन उठा और जल्द ही अपने आप को थोड़ा ठीक करके वापस से उसी मार्किट चला गया जहाँ वो पहले गया था। उसने एक रेस्टॉरेंट से बहुत सा खाना पैक कराया और एक दूसरी दुकान से एक और स्मार्ट फ़ोन खरीदा। अमरीक फॉरेन अपने घर आ गया।

उसने जल्दी जल्दी अपना खाना खाया और फिर उस स्मार्ट फ़ोन में एक दूसरी ही सिम डाल दी। अमरीक अपने साथ कई सिम लेकर घूम रहा था। उसका इरादा बेहद ही खतरनाक था।

इस बार अमरीक ने उस स्मार्ट फ़ोन से अपनी चिर परिचित सहेली रेनू को फ़ोन लगाया।

'हेलो' रेनू अननोन (unknown) नंबर से आये फ़ोन से घबरा जाती थी। परन्तु वो सारे फ़ोन उठाती थी। उसे पता था कि अमरीक उसे कभी भी किसी भी नंबर से फोन कर सकता था।

हालाँकि अमरीक नहीं जानता था कि रेनू इस वक़्त ऋतू के साथ उसके घर पर थी। रेनू ने ऋतू को बता दिया था कि उसने अमरीक को किसी होटल में ठहरने के लिए 2010 रुपए दिए हैं।

रेनू और ऋतू साथ में बैठे थे और ऋतू ने इशारे से रेनू को फ़ोन को स्पीकर मोड पर डालने के लिए कहा।

रेनू ने वैसे ही किया और अमरीक की आवाज़ उन दोनों को सुनाई दी‘ रेनू तुमने प्रथमेश तक मेरा सन्देश पहुंचा दिया‘

ऋतू एक दम शॉक में आ गयी। रेनू को भी समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या बोले।

‘कौनसा सन्देश‘ रेनू ने डरते हुए बोला।

‘तुम मज़ाक बहुत करती हो। यदि प्रथमेश मुझे अभी के अभी दो करोड़ दे देगा तो मैं उसे कोड लिख कर दे दूंगा‘ अमरीक बोला।

ऋतू सब समझ चुकी थी। रेनू क्राई में प्रथमेश की एजेंट थी। रेनू को इसी बात का डर था। ऋतू बहुत ही चालाक और शार्प थी। रेनू की हल्की सी भूल भी उसे फसा सकती थी, और वो गलती उससे हो चुकी थी। उसने अमरीक का फोन अनायास ही स्पीकर पर डाल दिया था।

उसने ऋतू पर से ध्यान हटाया और अमरीक को चीखते हुए फोन पर जवाब दिया, ‘क्या बकवास कर रहे हो‘

‘यदि तुम्हारा जवाब अगले एक घंटे में मेरे पास नहीं आया तो ...,‘ अमरीक चुप हो गया।

रेनू शॉक में थी। ऋतू सिर्फ रेनू को ही देखे जा रही थी। ऋतू को यकीन ही नहीं हो रहा था कि रेनू क्राई को डबल क्रॉस करेगी।

‘एक घंटे में इस नंबर पर मैसेज कर देना कि तुम्हारी प्रथमेश से बात हो गयी। पैसे कहाँ और कैसे पहुँचाने है मैं बता दूंगा।’ उस स्पीकर फोन पर अमरीक की आवाज़ आयी और फ़ोन कट गया।

रेनू ऋतू को देख रही थी जो कुछ नहीं बोली। ऋतू हालाँकि सब कुछ अच्छे से समझ चुकी थी।

‘मुझे माफ़ कर दो। प्लीज वास्को को कुछ मत बताना।’ रेनू ने बहुत ही मृदु स्वर में बोला।

‘तुम मेरा घर अभी के अभी छोड़ दो।’ ऋतू बोली। उसके लहजे में तल्खी थी।

‘क्या ‘ रेनू घबरा गयी।

ऋतू ने कुछ नहीं कहा और वहाँ से उठ कर चली गयी।

रेनू समझ गयी थी की ऋतू उसे अब वहाँ रहने नहीं देगी। रेनू की पोल खुल चुकी थी। प्रथमेश को भी यदि पता चल गया तो प्रथमेश कुछ भी कर सकता था। रेनू के माथे से पसीना टपकने लगा। वो बेहद ही घबरा चुकी थी।

वो फॉरेन उठी और ऋतू के पास गयी।

‘मुझे एक मौका दे दो प्लीज‘ रेनू रोते हुए बोली।

‘बिलकुल नहीं रेनू। मैं तुम्हारी जैसे पैसे के लालची लड़की का साथ नहीं दे सकती। हाँ मैं वादा करती हूँ मैं वास्को से कुछ नहीं कहूंगी। मुझे नहीं पता की तुम्हें अमरीक ने फोन किया है। बस तुम मेरे घर को फॉरेन छोड़ दो।’

ऋतू के लहजे में सख्ती थी। रेनू डरी हुई और विचलित थी।

‘तुम चिंता मत करो प्रथमेश को नहीं पता चलेगा की मुझे तुम्हारी सच्चाई पता है।’ ऋतू बोली।

रेनू को थोड़ी सांस में सांस आ गई। उसे नहीं पता था कि ऋतू इतनी अच्छी लड़की थी। रेनू घबराते हुए बोली,’परन्तु मुझे प्रथमेश ने ही तुम्हारे साथ रहने के लिए कहा है।’

‘क्या‘ ऋतू के आश्चर्य की सीमा न रही। ‘क्यों‘ ऋतू ने उत्सुकता से पूछा।

‘क्योंकि वो अमरीक इतना खतरनाक है उसे भी लगा मैं तुम्हारे साथ सेफ हूँ।’ रेनू बोली।

‘नहीं रेनू। अब जब मैं जान गयी हूँ कि तुम क्राई को डबल क्रॉस कर रही हो मैं तुम्हारे साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रख सकती। तुमसे मैं इतना वादा कर सकती हूँ कि मैं वास्को को नहीं बताउंगी और न ही किसी और को मेरे से यह बात पता चलेगी।‘ ऋतू ने बहुत ही गंभीरता से कहा।

‘ठीक है‘ रेनू बोली।

उसे समझ आ गया था कि उसे ऋतू के घर को छोड़ना ही होगा। रेनू धीरे धीरे उस अलमारी में से अपना सामान निकालने लगी। रेनू ने अपना सामान पैक कर लिया था। तभी रेनू का ध्यान अलमारी के पास ही गिरी खून की कुछ सुखी हुई बूंदी पर गया।

‘ऋतू ये क्या है’ रेनू ने ऋतू का ध्यान उन खून की बूंदो की तरफ किया।

‘तुम यहाँ से निकलो। ये मेरा घर है। मेरा ध्यान मत भटकाओ।’ ऋतू ने बहुत ही तल्खी और गुस्से में कहा।

‘पर’ रेनू कुछ बोलना चाह रही थी।

‘क्या मैं वास्को को फोन लगाऊं’ ऋतू ने शातिरता से बोला।

‘नहीं मैं जा रही हूँ। मुझे बस कुछ अजीब सा लगा।’ रेनू बोली और उस अलमारी के नीचे इशारा किया जहाँ खून में सना हुआ रुई का फुआ पड़ा हुआ था।

ऋतू ने हाथ से इशारा किया और रेनू को अपने घर से जाने के लिए कहा।

रेनू चुपचाप ऋतू के घर से निकल कर अपने घर चली गयी थी। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। तभी उसका ध्यान अमरीक की ओर गया। उस अमरीक ने कहा था कि एक घंटे में प्रथमेश से बात करके उसे बताना था।

रेनू अपने घर की बजाय सीधे प्रथमेश के घर ही चली गयी।

अध्याय 21

राजवीर को समझ आ गया था कि उसे अपनी इन्वेस्टीगेशन को एक नई दिशा देनी होगी। उसे उस प्रोफेसर राजन शर्मा के बेटे से मिलना पड़ेगा। राजवीर के पास हालाँकि कोई सबूत नहीं था परन्तु उसका मन कह रहा था कि प्रोफेसर राजन शर्मा के बेटे से मिलकर कई बाते क्लियर हो सकती है। राजवीर इसलिए दिल्ली जाने के लिए रवाना हो चुका था। उसने श्रद्धा के मोबाइल और लैपटॉप से काफी जानकारियां भी निकलवा ली थी।

उसमे उसे कुछ बहुत ही आश्चर्यजनक खुलासे भी हुए थे परन्तु वो सब अधूरे थे। इस पहेली को पूरा करने के लिए राजवीर को दिल्ली का सफर तय करना ही होगा।

राजवीर गहरी सोच में था। प्रोफेसर राजन शर्मा ने कैंसर की ड्रग्स का क्योर बनाया। फिर उसने मूनस्टोन फार्मा और क्राई दोनों से संपर्क किया ताकि जो भी उसे ज्यादा दाम दे दे उसको वो रिसर्च बेच देगा। उसने अपनी रिसर्च क्राई को बेचीं, शायद क्राई ने ज्यादा पैसे दिए होंगे। हो सकता है ये बात मूनस्टोन फार्मा को पसंद नहीं आयी होगी। परन्तु फिर राजन शर्मा का खून किसने किया और उसकी लाश को गायब किसने किया।

राजन शर्मा के बेटे ने अपने पिता की हत्या होने के बावजूद पुलिस से संपर्क नहीं किया, क्योंकि राजन शर्मा की लाश की खबर तो अखबार

में छपी थी। यक़ीनन राजन शर्मा के बेटे ने या तो वो खबर पढ़ी होगी या उस तक खबर पहुँच गयी होगी। राजन शर्मा की हत्या के बारे में आखिर श्रद्धा भी जानती थी। फिर जयेश - राजन शर्मा के बेटे ने पुलिस के पास आने के बजाये गुमनाम रहना क्यों स्वीकार कर लिया।

बहुत से तार थे जो जयेश तक पहुँचते थे। और ये अमरीक कौन है और क्या चाहता है ? ये क्राईं में आता है और अनेकों लोगों की हत्या हो जाती है।

इससे ये तो पक्का है कि जयेश और अमरीक के बीच कुछ न कुछ कनेक्शन जरूर है। काश श्रद्धा का क़त्ल नहीं हुआ होता तो वो उससे काफी सारी जानकारी निकलवा सकता था। तभी राजवीर कुछ सोच में पड़ गया और उसने फॉरेन कुंवर को फोन लगाया।

‘हेलो‘ कुंवर बोला।

‘हेलो कुंवर मैं राजवीर बोल रहा हूँ।’

‘यस सर‘ कुंवर ने गंभीरता से कहा।

‘मैं दिल्ली जा रहा हूँ और अभी प्लेन में बैठा हूँ। कुछ ही देर में टेक ऑफ करूँगा। शायद शाम तक दिल्ली पहुँच जाऊंगा।’

‘ओके सर। मेरे लिए क्या आदेश है।’

‘तुम श्रद्धा की लाश का पोस्ट मोर्टेम करा लो और उस ट्रक का पता लगाओ।’

‘ओके सर। परन्तु पोस्ट मोर्टेम में क्या ही आएगा। आपके सामने ही तो ट्रक ने उसको कुचला था।’ कुंवर कंफ्यूज़ होते हुए बोला।

‘कुंवर तुम प्रोटोकॉल नहीं जानते। यदि कोई हिट एंड रन में ऑन दी स्पॉट (on the spot) मर जाता है तो पोस्ट मोर्टेम अनिवार्य है।’ राजवीर ने गुस्से से बोला। उसे पता था कि उसकी टीम में इतनी बारीक प्रोसीज़रल जानकारियां किसी के पास नहीं है।

‘ओके सर‘

‘और हाँ कुंवर मुझे इस श्रद्धा और जयेश - राजन शर्मा के बेटे - के कॉल डिटेल्स, फाइनेंसियल ट्रांसक्शन आदि सब कुछ निकाल कर दो।’

‘ओके सर। मैं डिटेल्स भिजवाता हूँ।‘

‘एक बात और कुंवर, अमरीक वो इंटर्न जल्दी ही वास्को से मिलने की कोशिश करेगा। उसको अपनी डील पूरी करनी होगी। तुम चौकन्ने रहना और हो सके तो उस अमरीक को गिरफ्तार कर लेना। बट डोंट रिपोर्ट दी अरेस्ट (but don’t report the arrest)।’

‘ठीक है सर‘

राजवीर ने फोन काट दिया। वैसे भी उसके प्लेन ने टेक ऑफ कर लिया था और एयर होस्टेस उसके सामने ही बैठी थी और और उसे घूरे जा रही थी।

राजवीर ने एयर होस्टेस को इग्नोर कर दिया और एक तरफ मुँह करके सो गया।

तकरीबन शाम के सात बजे तक राजवीर मुंबई से दिल्ली पहुँच चुका था और वो जयेश के एड्रेस के लिए टैक्सी ले चुका था। जयेश इंजीनियरिंग की पढाई कर रहा था और हॉस्टल में ही रहता था। राजवीर उसके कॉलेज के हॉस्टल में पहुंच गया और जल्द ही वार्डन से मिला।

'सर मैं आपको कह रहा हूँ की जयेश पिछले एक महीने से किसी प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है। ही हेस गोट दी परमिशन फ्रॉम हिज प्रोफेसर (He has got permission from his professor) ' वार्डन बोला।

'मतलब पिछले एक महीने से जयेश आपके हॉस्टल में नहीं है। वो किसी प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है और आपको पता भी नहीं वो प्रोजेक्ट क्या है।' राजवीर ने संशय भरे स्वर में पूछा।

'आप समझ नहीं रहे है इंस्पेक्टर साहब। जयेश के प्रोफेसर ने उसे परमिशन दी किसी प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए। अब वो उस पर काम कर रहा है तो मैं कैसे मना कर सकता हूँ। '

राजवीर ने वार्डन को ज़ोर देकर बोला 'आपको पता ही नहीं कि वो प्रोजेक्ट क्या है।'

'नहीं। एस ए (as a) वार्डन मेरा इससे कोई सरोकार नहीं नहीं।' वार्डन बेरुखी से बोला।

'क्या जयेश अकेला काम कर रहा उस प्रोजेक्ट पर।'

'मुझे नहीं पता।'

राजवीर खिसिया उठा। वो बोला, 'किस प्रोफेसर ने परमिशन दी है।'

'प्रोफेसर नरेंद्र मीणा।' वार्डन बोला।

'ये प्रोफेसर मीणा कहा मिलेंगे।' राजवीर बोला।

'वो अब्रॉड गए हुए है। एक महीने बाद आएंगे।'

राजवीर का माथा ठनक गया। उसे किसी बहुत बड़े षड़यंत्र की बू आ रही थी। जयेश हॉस्टल से गायब है। जिस प्रोफेसर ने उसे परमिशन दी है वो अब्रॉड में है।

'मुझे प्रोफेसर मीणा का फ़ोन नंबर मिल सकता है।' राजवीर बोला।

'सर अब्रॉड का नंबर नहीं है मेरे पास, इंडिया का नंबर है। वो ले लीजिये उस पर बात हो जाये तो ठीक है।' वार्डन बोला। और फिर एक पर्ची पर उसने प्रोफेसर नरेंद्र मीणा का नंबर लिख कर दे दिया।

राजवीर को समझ आ चुका था कि उसे यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। जयेश ने बहुत शातिराना गेम खेला है। उसने एक तरफ अमरीक को क्राईम में भेज दिया और खुद गायब हो गया है।

परन्तु अमरीक और जयेश का क्या सम्बन्ध है।

राजवीर ने अपने फ़ोन की गैलरी से अमरीक का फोटो निकाला और वार्डन को अपना फोन दिया और बोला,'आप इस आदमी को जानते है, या पहले कभी देखा हो।'

वार्डन ने नज़र भर कर अमरीक की फोटो देखी और बोला,'ये तो जयेश का दोस्त है। कई बार हॉस्टल आया है और मैंने परमिशन भी दी है।'

राजवीर की नज़रे चौड़ी हो गयी। उसका शक सही निकला। अमरीक और जयेश दोस्त थे, उनमे कुछ कनेक्शन था।

'क्या आप इस अमरीक का कुछ पता ठिकाना बता सकते है।' राजवीर बोला।

'सर पता ठिकाना तो नहीं है परन्तु जब हम परमिशन देते है तो हम उस आदमी का एक बार आई डी (id) कार्ड ले लेते है। मैं आपको उसकी कॉपी दे सकता हूँ।'

'ठीक है।'

वार्डन ने फिर कंप्यूटर पर कुछ सर्च किया और जल्दी ही अमरीक के पैन कार्ड और आधार कार्ड की कॉपी राजवीर को दे दी।

'थैंक्स ये काफी हेल्पफुल था' राजवीर बोला और वहाँ से निकल गया।

राजवीर ने फॉरेन ही अपने फोन पर अमरीक के रिकॉर्ड चेक किये जो उसके पास थे। उसने जब उस को चेक किया तो उसे पता चला की अमरीक के पैन कार्ड और आधार कार्ड जो उसे उस वार्डन ने दिए थे वो अलग थे। इसका मतलब वो अमरीक के जेन्युइन डॉक्यूमेंट थे और अमरीक ने क्राई में जो सबमिट किये थे वो जाली थे।

जाने अनजाने में राजवीर को अमरीक का असली पता मालूम पड़ गया था। अब राजवीर अमरीक को मज़बूर कर सकता था। राजवीर फॉरेन उस पते पर पहुँच गया जो उस आधार कार्ड में था।

वो एक बहुत ही छोटी गली में जर्जर मकान का पता था। राजवीर जैसे तैसे वहाँ पहुंचा और उसे पता चला की वहाँ एक बूढ़े दंपत्ति रहते है। हालाँकि रात हो गयी थी फिर भी राजवीर ने उन्हें डिस्टर्ब करने की सोचा।

वो उनके मकान के बाहरी गेट को ज़ोर से बजाने लगा। एक बहुत बूढ़े इंसान ने जो शायद अस्सी बयासी वर्ष का होगा धीरे से दरवाजा खोला।

'नमस्कार सर' राजवीर ने बहुत ही पोलाइटली (politely) बोला।

'नमस्ते। आप कौन' बूढ़े आदमी ने कहा।

'मैं अमरीक का दोस्त हूँ।'

'मैंने कभी आपको अमरीक के साथ नहीं देखा। आपका नाम'

'मेरा नाम राजवीर है। आप अमरीक के पिता है।'

बूढ़ा आदमी धीरे से हँसा और उसने राजवीर को अंदर आने का इशारा किया।

राजवीर अंदर चला गया। उसने देखा उस बहुत ही पुराने मकान में वो बूढ़ा और बूढी रहते थे और दिवार पर एक तरफ अमरीक की तस्वीर लगी हुई थी।

'आइये बैठिये सर। '

राजवीर वही एक कुर्सी लेकर बैठ गया। वो बूढ़ा और बूढी भी उसके पास दो अलग कुर्सियों पर बैठ गए।

'पूछिए क्या पूछना है सर।'

राजवीर सकपका गया।

वो बोला, 'आपको कैसे पता मुझे कुछ पूछना है।'

'बेटा तुम्हें लगता होगा की बूढ़ा बूढी है क्या ही करेंगे, कितनी ही समझ होगी इनमे।' बूढ़ा आदमी बोला। उसकी बोली में ठहराव था हालाँकि बुढ़ापे के कारण आवाज़ लड़खड़ा रही थी।

'नहीं ऐसा नहीं है।' राजवीर सकपकाते हुए बोला।

'बेटा, तुम न तो अमरीक के दोस्त हो और न ही उसे जानते हो। तुम उसका पता ढूंढते हुए आये हो। शायद पुलिस हो या कोई गुंडे।' बूढ़ा आदमी हस्ते हुए बोला।

'जी' राजवीर एक दम चौंक गया।

'हाँ। क्योंकि पहली बात तो अमरीक का ऐसा कोई दोस्त या पहचान वाला नहीं जिसे मैं नहीं जानता। दूसरा मैं उसका दादा हूँ। अमरीक के माता पिता दोनों ही बहुत पहले मर चुके है। '

'सर मैं तो ये जानने आया था कि अमरीक क्राई में क्यों गया और वो मुंबई में लोगों की हत्या क्यों कर रहा है।' राजवीर बोला।

अमरीक के दादा ने कहा 'अब यदि तुम सच जानना चाहते तो सुनो, अमरीक क्राई में कोई अधूरा काम करने गया है। वो क्या है मुझे नहीं पता, और वो किसी की हत्या कर ही नहीं सकता। हाँ वो शातिर बहुत है और कुटिल भी। उससे कोई पार नहीं पा सकता।'

'आपको डर नहीं लगता।' राजवीर बोला।

'किस बात का'

'अब मैं जान गया हूँ आप दोनों यहाँ है, मैं अमरीक को ब्लैक मेल कर सकता हूँ।'

'क्या ब्लैक मेल करोगे।' दादा मुस्कुराते हुए बोला।

'यही की यदि अमरीक ने सरेंडर नहीं किया तो मैं आपको अरेस्ट कर लूंगा।'

'बेटा तुम काफी स्मार्ट हो, परन्तु तुम्हें पता नहीं अमरीक क्या चीज है।'

'आप बुज़ुर्ग है इसलिए मैं लिहाज कर रहा हूँ। वरना मैं आपको गिरफ्तार कर के ले जा सकता हूँ।' राजवीर अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए बोला।

'बेटा एक बात बोलू।'

'क्या'

‘तुम अच्छे इंसान लग रहे हो। शायद पुलिस वाले हो और ईमानदार हो। परन्तु अमरीक को ढूंढना है तो मुंबई में ही ढूंढो। हम लोगों में समय बर्बाद मत करो।’

‘मुझे पता है मुझे क्या करना है।’ राजवीर गुस्से में बोला।

‘तो फिर एक बात याद रखो। अमरीक ने सारे गुर मुझ से ही सीखे है।’

‘मतलब‘ राजवीर चौंकते हुए बोला।

बूढ़ा आदमी और वो बूढी औरत हसे, और तभी राजवीर के सर के पीछे एक ज़ोरदार वार हुआ। राजवीर ज़मीन पर गिर गया। उसे समझ ही नहीं आया की गेम कब पलट गया। वो उस बूढ़े बूढी को इंटररॉगटे (interrogate) नहीं कर रहा था परन्तु वो बूढ़ा बूढी उसका ध्यान भटका रहे थे।

अमरीक शातिर था परन्तु उसके दादा और दादी भी कुछ कम नहीं थे।

राजवीर ने अपनी गलती की सजा पायी थी। वो अकेला बिना सोचे समझे रात में अमरीक के गढ़ में घुसने की गलती कर चुका था।

अध्याय 22

प्रथमेश पूरी तरह से कंफ्यूज और विचलित था। रेनू अब ऋतू के घर से भाग कर आ गयी थी। रेनू का राज़ भी ऋतू के सामने खुल गया था। रेनू ने बहुत ही घबराये हुए स्वर में कहा,'प्रथमेश आई एम् सॉरी (I am sorry)। वो परिस्थितियां ही ऐसे बन गयी ...'

'कोई बात नहीं मुझे सोचने दो।' प्रथमेश ने रेनू को बीच में टोकते हुए बोला।

प्रथमेश जान चुका था कि उसे कुछ जल्दी ही करना होगा। रात के दस बज रहे थे और रेनू अपने सामान समेत प्रथमेश के घर पर थी। प्रथमेश की पत्नी फिलहाल मायके गयी हुई थी परन्तु उसे पसंद नहीं आएगा कि उसकी अनुपस्थिति में उसका पति किसी औरत के साथ घर पर रहे। परन्तु अभी वो रेनू को कहीं ओर भेज भी नहीं सकता था।

साथ ही वो अमरीक कभी भी कॉल कर सकता था। क्या वो वाकई प्रथमेश को कोड दे सकता था ? परन्तु कैसे ? अमरीक के पास कोड की जानकारी कहाँ से आयी। यदि अमरीक ने अभिषेक को मार कर उस ओरिएट ओबिलिस्क किताब को हासिल भी कर लिया था तो भी अमरीक को क्या पता था उस किताब में कौन कौन से पेज एंड पैराग्राफ (page and paragraph) कोड के लिए काम आएंगे।

मृतक अभिषेक और खुद प्रथमेश भी कई बार कोशिश कर चुके थे परन्तु उन्हें उस किताब से कोड नहीं मिला था।

प्रथमेश ये सब सोच ही रहा था कि रेनू के फोन की घंटी बजी।

‘उसी का फोन है।’ रेनू घबराते हुए बोली। उसे वो अननोन (unknown) नंबर याद हो गया था जिससे पिछली बार अमरीक का कॉल आया था।

प्रथमेश ने फोन उठाने का इशारा किया और उसे स्पीकर पर डालने के लिए कहा।

‘तुम प्रथमेश के घर पहुँच गयी अच्छा हुआ।’ अमरीक ने बहुत ही शातिराना अंदाज़ में कहा।

प्रथमेश और रेनू दोनों के चेहरे की रंगत उड़ गयी। अमरीक को कैसे पता अभी रेनू प्रथमेश के घर के ड्राइंग रूम में बैठी हुई थी।

‘क्या मतलब‘ रेनू ने हकलाते हुए कहा।

‘तुम ये सब छोडो। प्रथमेश से कहो डील मंज़ूर है या नहीं।’ अमरीक ने तेज़ आवाज में कहा और इससे पहले रेनू कोई उत्तर देती वो फिर बोला,

‘हाँ एक बात और मुझे पता है प्रथमेश वही है मेरी उससे डायरेक्ट बात कराओ।’

‘बोलो‘ प्रथमेश ने अपने आप को सँभालते हुए गंभीर स्वर में कहा।

‘क्या बात है। पास में ही बैठे थे। बड़ा याराना है।’

‘तुम मतलब की बात करो।’

‘बात क्या करनी है, बोलो कोड के बदले कितना दोगे’

‘तुम्हारे पास कोड है‘ प्रथमेश ने ज़ोर देकर कहा।

‘हाँ। कोई शक‘

‘बिलकुल शक है। क्योंकि वो कोड तुम्हरे पास हो ही नहीं सकता।’

‘प्रथमेश बाबू यदि ऐसी बात है तो फिर हम बात नहीं करते। मैं वास्को से डील कर लेता हूँ।’ अमरीक बोला और फोन रखने लगा।

‘अच्छा रुको एक मिनिट।’ प्रथमेश घबराते हुए बोला।

‘बोलिये‘

‘क्या हम मिल कर बात कर सकते है।’

‘मिलना क्या है प्रथमेश बाबू, मुझे रकम दीजिये मैं आपको कोड दे दूंगा। मेरे पास अभिषेक का लैपटॉप है। उसमे वो सॉफ्टवेयर भी है जिस पर राजन शर्मा काम कर रहा था। उसी पर चला कर दिखा दूंगा और समझा भी दूंगा।’

प्रथमेश एक दम से शौक में आ गया। ये अमरीक क्या चीज़ है। इतना कॉन्फिडेंटली झूठ बोल रहा है। प्रथमेश को पता था कि अमरीक के पास वो कोड नहीं हो सकता। क्योंकि राजन शर्मा ने वो कोड दो किताबों में छुपा दिया था। वो किसी को नहीं पता था कि कैसे उस कोड को

निकाला जा सकता था। राजन शर्मा की हत्या ने मामले को और उलझा दिया था।

‘ठीक है‘ प्रथमेश थोड़ी देर सोचने के बाद बोला। ‘तुम बताओ क्या दाम चाहिए‘

‘पहले तो मैं सोच रहा था हर कोड चलाने के पचास लाख लूँ, परन्तु हर बार कोड चलाने कौन आएगा, इसलिए एक ही बार में पचास करोड़ दे दो। तुम तो सेकड़ो करोड़ कमाओगे।’

‘पचास करोड़। तुम पागल हो गए हो अमरीक‘ प्रथमेश चिल्लाया।

‘प्रथमेश बाबू मैं राजन शर्मा नहीं हूँ जो कौड़ियों के दाम इस कोड को बेच दो। वो निरह मुर्ख था। उस श्रद्धा के लटक मटक में फस गया था।’

प्रथमेश को समझ नहीं आ रहा था कि अमरीक को प्रोफेसर राजन शर्मा की इतनी बारीक बातें कैसे पता थी।

‘ठीक है‘ प्रथमेश हारे हुए मन से बोला।’ तुम्हें पैसे मिल जायेंगे। परन्तु पहले कोड‘

‘नहीं प्रथमेश बाबू। पहले पच्चीस करोड़ यानि फिफ्टी पर्सेंट एडवांस फिर कोड और फिर बाकि का फिफ्टी पर्सेंट‘ अमरीक शातिराना ढंग से बोला।

‘पागल हो गए हो अमरीक, बिना ये जाने की तुम्हारे पास कोड है कि नहीं तुम्हें पच्चीस करोड़ दे दूँ‘

‘आपके पास कोई और चारा नहीं है। या तो फिर आप सोच लीजिये मैं वास्को से बात कर लेता हूँ।’

प्रथमेश इसी उधेड़ बुन में था कि वो क्या करे। इससे पहले वो कुछ बोलता अमरीक ज़ोर से चीखा‘ तुम्हारे पास कल सुबह 11 बजे तक का टाइम है। यदि मेरी शर्त मंज़ूर हो तो रेनू को कहना कि मुझे इसी नंबर पर फोन करे। हाँ 11 बजे तक फोन नहीं आया तो डील कैंसिल‘

अमरीक ने फोन काट दिया था।

प्रथमेश और रेनू एक दूसरे का चेहरा ही देख रहे थे।

‘क्या इस फोन को ट्रेस करवा कर उस अमरीक का एड्रेस का पता लगा ले ‘ रेनू बोली।

‘पागल हो क्या। फोन कौन ट्रेस करवाएगा और उस अमरीक को कौन पकड़ेगा। वो बेहद खतरनाक है। पहले ही वो कालिया गैंग वाला मेरे पीछे पड़ा है।’ प्रथमेश बोला।

दोनों फिर थोड़ी देर के लिए शांत बैठ गए। प्रथमेश गहरी सोच में चला गया।

इस अमरीक के पास कोड कैसे आ सकता था। प्रोफेसर राजन शर्मा ने वो कोड दो किताबों में छुपाया था। ये बात श्रद्धा ने जब अभिषेक को वो किताब बेच दी थी तब मालूम पड़ी थी। उसके कुछ ही दिनों में राजन शर्मा का खून हो गया था। हो सकता है वास्को ने खून कराया हो।

क्योंकि उस समय वास्को को भी नहीं पता था कि राजन शर्मा की रिसर्च बिना उन दोनों किताबों के बेकार थी।

वो दूसरी किताब कहाँ थी। राजन शर्मा ने श्रद्धा को कभी ये नहीं बताया। वो मुर्ख श्रद्धा भी ये ही सोचती रही कि दोनों किताबें एक जैसी ही हैं क्योंकि दोनों का नाम एक है।

इस अमरीक के पास किताब कहाँ से आयी। श्रृद्धा का भी क़त्ल हो चुका था। प्रथमेश को कुछ समय पहले ही मालूम पड़ा था कि सुबह श्रद्धा को किसी ट्रक ने कुचल कर मार दिया है। वास्को ने श्रद्धा को मरवा दिया - परन्तु क्यों।

श्रद्धा ऐसा क्या पुलिस को बता देती।

प्रथमेश पूरी तरह से उलझा हुआ था और रेनू उसे उसकी उधेड़ बुन में उलझे हुए देख रही थी।

‘तो फिर पच्चीस करोड़ का एक चांस ले लेते है’ रेनू बोली।

‘पैसे क्या पेड़ पर उगते है।’

‘नहीं’ रेनू सकपका गयी,’परन्तु और क्या करे‘

‘तुम से तो कुछ उम्मीद है नहीं, तुम्हें ऋतू के घर भेजा था कि आराम से रहो और तुम उसके सामने ही स्पीकर फोन पर अमरीक से बात कर रही थी‘

‘आई ऍम सॉरी’ रेनू उदास होकर बैठ गयी।

वो सोचने लगी ऋतू ने उसके साथ कुछ बहुत ही सख्ती की थी। वो तो आते आते भी उसे किसी खून सनी कॉटन के फुए के बारे में बता कर आयी थी।

तभी रेनू कुछ सोच में पड़ गयी।

'प्रथमेश' रेनू ने प्रथमेश की ओर देख कर बोला। प्रथमेश अपने ड्राइंग रूम में एक तरफ से दूसरी तरफ चहल-कदमी कर रहा था।

उसने रेनू की बात अनसुनी कर दी।

'प्रथमेश' रेनू जोर से बोली।

'क्या है रेनू' प्रथमेश झिल्लाते हुए बोला।

'ऋतू के घर पर खून सनी कॉटन थी और ऋतू को देख कर लगा वो जानती है वो कॉटन वहाँ क्यों है'

प्रथमेश अपने ही विचारो में खोया हुआ था। उसे अभी ऋतू में कोई दिलचस्पी नहीं थी। परन्तु खून लगी कॉटन की बात सुन कर उसे कुछ अजीब लगा। वो अपने विचारो से हटा और रेनू की तरफ ध्यान देने लगा।

'क्या बोल रही हो रेनू' प्रथमेश रेनू के पास आकर बैठते हुए बोला।

'यही की ऋतू की अलमारी के नीचे ताज़ा खून भरी कॉटन थी। अब न तो ऋतू को ना ही मुझे कोई चोट लगी थी। तो वो ताज़ा खून किसका था।'

'किसका' प्रथमेश चौंकते हुए बोला।

‘ये तो ऋतू के घर जाकर ही पता लगेगा‘ रेनू बहुत ही शातिराना अंदाज़ में बोली।

प्रथमेश रेनू की शकल देख रहा था। क्या ऋतू के घर पर कोई और भी था ? क्या वो अमरीक था ? ये प्रथमेश और रेनू दोनों को पता की अमरीक बहुत ज्यादा घायल है।

प्रथमेश ने फॉरेन कालिया गैंग के सरगना को फोन किया। ‘सर आपको जिस अमरीक की तलाश है वो कहाँ है शायद मुझे पता है’

‘उस अमरीक को तो मैं तड़पा तड़पा कर मारूंगा’ सामने से बहुत ही खूंखार स्वर में आवाज़ आयी। उस आवाज़ ने आगे बोला,

‘मैं खुद अपने गुर्गो के साथ आ रहा हूँ। तेरी पिछली टिप सही थी। वो क्राई की बिल्डिंग में ही था; उसने मेरे आदमी को इतनी आसानी से मार दिया, यकीन नहीं हो रहा।’

‘कोई बात नहीं सर, जब तक वो आपको नहीं मिल जाता मैं आपके साथ हूँ। आपको उसकी पल पल की खबर देता रहूँगा। उसका नंबर भी आप लिख लीजिये।’ प्रथमेश बोला।

प्रथमेश ने फिर वो नंबर जिससे रेनू को अमरीक का कॉल आया था वो दे दिया और सामने वाले ने नंबर भी नोट कर लिया और ऋतू के घर का एड्रेस भी।

प्रथमेश ने बहुत बड़ा गेम खेल दिया था। यदि अमरीक ऋतू के घर में था तो वो अब बच नहीं पायेगा। इसलिए ऋतू ने रेनू को जल्द ही

अपने घर से निकाल दिया था। परन्तु इस ऋतू का अमरीक से क्या कनेक्शन हो सकता था। या वो वास्को के कहने पर ये सब कर रही थी।

वास्को बहुत शातिर था और वो कुछ भी कर सकता था। उसके गेम को समझना बहुत ही मुश्किल था।

अध्याय 23

वास्को अपने बड़े से ऑफिस में सोफे पर बैठा हुआ अपनी जैक डेनियल्स व्हिस्की का मज़ा ले रहा था। उसके सामने नरेश थोड़ा चिंतित सा बैठा था। नरेश को समझ नहीं आ रहा था कि वास्को को किसी भी बात की टेंशन क्यों नहीं थी। वो अमरीक - वो हत्यारा खुला घूम रहा था और बहुत ही ज्यादा खतरनाक था।

'सर आपको टेंशन नहीं है' नरेश बोला। उससे अब रहा नहीं जा रहा था।

वास्को ने एक नज़र नरेश को देखा। वास्को समझ गया था कि नरेश को क्या सता रहा था।

'मैंने माधव को बोला है, वो अमरीक का बंदोबस्त कर देगा।' वास्को ने बहुत ही कैज़ुअलि (casually) बोला। उसके चेहरे पर न तो कोई शिकन थी न ही उसे किसी भी प्रकार की चिंता।

'सर क्या आप को लगता है कि माधव अमरीक को हैंडल कर पायेगा।'

'नहीं कर पायेगा तो हम कर लेंगे।' वास्को थोड़ा मुस्कुराया और अपनी व्हिस्की का एक और घूंट लगाने लगा।

'सर' नरेश कुछ बोलने वाला था जब वास्को ने उसकी बात काटते हुए बीच में बोला,

‘नरेश, तुम चिंता मत करो। वो अमरीक पैसे के पीछे है। वो जल्द ही हम से सम्पर्क करेगा। वो लालची आदमी है और उसका लालच ही उसे मरवाएगा।’

‘मैं कुछ समझा नहीं’ नरेश थोड़ा कंफ्यूज़ होते हुए बोला।

‘अरे नरेश, अमरीक यह सब क्यों कर रहा है। सोचो जरा।‘ वास्को ने बोला और अपनी व्हिस्की के घूंट मारने लगा।

नरेश फिर अपने आप से ही बोलने लगा, ‘अमरीक क्राई में आया और उसने सत्या को मार डाला। फिर इंस्पेक्टर राजवीर के सामने हमें किसी काले मास्कधारी की कहानी सुनाई और ओरिएट ओबिलिस्क का नाम लिया। ओरिएट ओबिलिस्क का नाम सुनते ही मैं चौंक गया। हमने उसे पुलिस से छुड़वाना चाहा परन्तु प्रथमेश ने उसे पहले छुड़वा लिया। अभिषेक उसे अपने घर ले गया जहाँ उस अमरीक ने अभिषेक को भी मार डाला। उसका लैपटॉप और ओरिएट ओबिलिस्क लेकर चला गया।‘

‘तुम ये सोचो अभिषेक के पास ओरिएट ओबिलिस्क कहाँ से आयी‘ वास्को अपनी व्हिस्की के सिप मारते मारते बोला।

‘वो उस डबल क्रॉस करने वाली श्रद्धा के कारण‘ नरेश बोला।

‘हम्म‘ वास्को बोला और सामने पड़ी जैक डेनियल की बोतल से एक और व्हिस्की का पेग बनाने लगा। उसने बोला ‘नरेश कंटिन्यू’

‘फिर अमरीक हमारे पास आया, आपने उस पर जानलेवा हमला किया परन्तु श्रद्धा ने बोला कि उसके पास ओरिएट ओबिलिस्क का कोड है।’

‘बिलकुल और उस अमरीक ने कहा कि वो हमसे सौदा करना चाहता है।’ वास्को बीच में बोला।

‘हाँ’

‘अब तुम खुद सोचो नरेश, की वो व्यक्ति हमें नुक्सान पहुँचाना चाहेगा या हमसे सौदा’ वास्को मुस्कुराते हुए बोला।

नरेश को ये सब कुछ बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अमरीक को इतना हल्के में लेना ठीक था क्या।

‘तुम चिंता मत करो नरेश। अमरीक खुद हमसे संपर्क करेगा, और फिर हम उसे बताएँगे की हम चीज़ क्या है।’ वास्को खूंखार स्वर में बोला।

नरेश को समझ नहीं आ रहा था कि वास्को क्या गेम खेल रहा था।

नरेश चुपचाप वास्को के प्राइवेट चैम्बर से बाहर आ गया। नरेश बहुत समय से वास्को के साथ काम कर रहा था। परन्तु इतने सालो में पहली बार उसे डर लगने लगा था।

उसे अमरीक की वो बात भी याद आ रही थी कि, ‘नरेश कभी भी वास्को के जैसा नहीं बन सकता। वो नौकर था और नौकर ही रहेगा।” आखिर वो अमरीक क्या कहना चाहता था। नरेश से वो क्या चाहता था।

नरेश अपनी ख्यालो की उधेड़बुन में उलझा हुआ ही था कि उसके मोबाइल पर एक प्राइवेट नंबर से कॉल आया। नरेश हैरान था कि ये प्राइवेट नंबर से उसे कौन कॉल कर सकता था। नरेश ने डरते हुए फ़ोन उठा लिया। 'हेलो' एक परिचित आवाज़ ने नरेश का स्वागत किया।

नरेश समझ गया कि फोन किसने किया है। 'अमरीक तुम'

नरेश बोला और फिर उसने अपनी आस पास देखा। वो ऑफिस में था। वो जल्द से जल्द अपनी केबिन में चला गया और दबी आवाज़ में बोला, 'अमरीक तुम ने मुझे क्यों कॉल किया है'

'मैंने कहा था न कि तुम को एक मौका दूंगा - नौकर से मालिक बनाने का'

'क्या बकवास कर रहे हो' नरेश गुस्से में बोला।

'सोच लो'

नरेश घबरा गया और चिंतित था कि वो क्या करे। ये अमरीक बहुत ही ज्यादा खतरनाक था। 'क्या चाहते हो तुम'

अमरीक के हसने की आवाज़ आयी। 'तुम फॉरेन सिवरी में खड्डा बस्ती में आ जाओ। वहाँ जावेद की एक छोटी सी दुकान है। वहाँ के चाय पकोड़े फेमस है। 1-2 प्लेट खा लो।'

अमरीक ने फोन काट दिया।

नरेश विस्मित हो गया। वो बेहद घबरा भी गया था। क्या वो वास्को को बता दे ? या फिर एक बार सिवरी चला जाये। आखिर ये

अमरीक ऐसा क्या चाहता था जो नरेश को वास्को के खिलाफ उकसा रहा था। या यह वास्को की ही कोई चाल है। क्या अमरीक वास्को का ही आदमी था।

ये खेल बहुत ज्यादा खतरनाक हो चुका था। नरेश अभी इन्ही विचारों में घिरा हुआ था, जब उसके केबिन में किसी ने नॉक किया।

'में आई कम इन प्लीज (May I come in please)' एक बहुत मधुर आवाज़ ने पूछा।

नरेश ने अपनी केबिन के द्वार पर देखा तो ऋतू खड़ी हुई थी।

'यस प्लीज' नरेश बोला।

'सर मुझे आपको कुछ दिखाना था। हमारे सेल्स डाउन हो रहे है।' ऋतू बोली।

नरेश को अभी काम में कोई इंटरस्ट नहीं था।

उसके दिमाग में सिर्फ अमरीक ही घूम रहा था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

उसने ऋतू का हाथ पकड़ा और अपनी केबिन में रखे सोफे पर बैठा दिया। वो खुद भी ऋतू के पास ही बैठ गया।

ऋतू घबरा गयी। आखिर ये नरेश क्या चाहता था। उसने कुछ बोलना चाहा, परन्तु नरेश ने उसके होंटो पर अपनी उंगलिया लगा दी।

ऋतू को समझ नहीं आया कि नरेश इतना ज्यादा डिफरेंट बिहेव (behave) क्यों कर रहा था। आखिर क्या बात थी ?

'ऋतू मैं तुम्हें बहुत ही कॉन्फिडेंस में एक बात बोलना चाहता हूँ।' नरेश बोला।

ऋतू सकपका गयी। क्या नरेश को पता चल गया था कि वो रेनू को पनाह दे रही थी। रेनू प्रथमेश के लिए काम कर रही थी। ऋतू को लगा उसकी नौकरी खतरे में है।

'नरेश मैं .... ' ऋतू कुछ बोलने वाली थी, परन्तु नरेश उसे रोकते हुए बोला 'ठहरो पहली मेरी बात सुनो'

ऋतू चुप हो गयी।

'मुझे अभी अमरीक का फोन आया था' नरेश दबी आवाज़ में बोला।

'क्या' ऋतू आश्चर्यचकित होते हुए बोली।

'हाँ ऋतू। वो मुझे सिवरी बुला रहा है किसी जावेद की दुकान पर'

ऋतू बिना कुछ बोले एक टक नरेश को देखती रही।

'मैं वहाँ जा रहा हूँ, परन्तु मैं चाहता हूँ तुम मुझे फॉलो करो और मेरे फ़ोन को मैं ऑन रखूँगा तुम हमारी बाते भी सुनो।'

ऋतू हैरान थी कि नरेश उसका इतना सगा कब से हो गया। ऋतू अभी एक साल से भी कम समय से क्राईं में काम कर रही थी और वो नरेश की इतनी भी ख़ास नहीं थी। पहले रेनू और अब नरेश सब ऋतू से ही क्यों मदद मांग रहे थे। ऋतू को कुछ संशा होने लगी परन्तु उसके ध्यान को नरेश की आवाज़ ने तोडा, 'ठीक है ऋतू'

‘जी सर’ ऋतू अनायास ही बोल उठी।

‘और ये बात किसी को भी पता नहीं चलना चाहिए। किसी को भी नहीं।’ नरेश बोला और उठ गया। वो अपनी गाड़ी की चाबी अपनी ड्रावर (drawer) से निकालने लगा और ऋतू उसे एक टक देखने लगी।

‘सर आप बुरा न माने तो एक बात पूंछू’ ऋतू सोफे से उठते हुए बोली।

नरेश अपनी गाड़ी की चाबी, अपना वॉलेट सब इकठा करते हुए अपना ब्लेजर पहन रहा था।

‘हाँ ऋतू’

‘सर अमरीक ने आपको फोन क्यों किया’

‘वो मुझे वास्को के खिलाफ भड़का रहा है। मैं सिर्फ समझना चाहता हूँ उसका इरादा क्या है’

‘सर वो बहुत खतरनाक है’

‘इसलिए ऋतू मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। यदि मुझे कोई भी खतरा होता है तो तुम फॉरेन वास्को और पुलिस को खबर कर देना।’ नरेश बोला और ऋतू के पास आ गया।

‘तुम मेरी इतनी मदद तो करोगी न’ नरेश ने ऋतू के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला।

ऋतू ने हामी में सर हिला दिया। हालाँकि उसकी बिलकुल भी इच्छा नहीं थी कि वो नरेश की मदद करे परन्तु उसके पास और कोई चारा

नहीं था। इस अमरीक ने क्राई का माहौल पूरा ही बिगाड़ दिया था। ऋतू को अब कोई नई नौकरी ढूंढ कर जल्द ही क्राई से निकलना होगा।

अध्याय 24

माधव के फोन पर राजवीर का फोन बजा। माधव ने फोन उठाया और बहुत ही बदहवास आवाज़ में बोला ‘तुम कहाँ हो राजवीर पिछले 24 घंटो से तुम्हरा फोन स्विच ऑफ आ रहा था।’

‘सॉरी सर। मैंने अभी देखा आपकी बहुत सारी मिस कॉल थी।’

‘हाँ मुझे टेंशन हो रही थी। तुम दिल्ली गए हुए हो। इधर अमरीक का कुछ पता नहीं चल रहा है।‘

‘सर मैं अमरीक के घर पहुँच गया था, उसके दादा दादी से मिला। परन्तु वो बहुत शातिर निकले‘

‘मतलब‘

‘उन्होंने मुझे एक घर में बंद कर दिया था।‘

‘क्या‘

‘हाँ वो सत्तर अस्सी साल के बुज़ुर्ग थे तो मैं थोड़ा लापरवाह हो गया था। किसी ने मेरे पीछे सर पर मारा और में बेहोश हो गया था।‘

‘क्या’ माधव आश्चर्यचकित हो गया।

‘हाँ फिर मुझे किसी कमरे में बंद कर दिया था।’

‘फिर‘

‘फिर सर मैं पुरे दिन बंद ही रहा। मेरा फोन तो मेरे पास था परन्तु वो डिस्चार्ज हो गया था। किसी तरह से मैं उस मकान से निकला परन्तु तब तक उसके दादा दादी का कहीं कोई पता नहीं था।’

‘तुम मुंबई वापस आ जाओ‘

‘हाँ जी सर मैं आ रहा हूँ। मुझे अमरीक की ओरिजिनल डिटेल्स मिल गयी है। मुझे राजन शर्मा के बेटे की डिटेल्स भी मिल गए है।’

‘गुड मुझे पता है तुम अमरीक को जल्दी पकड़ लोगे‘

‘हाँ सर मैं अमरीक को जल्द ही पकड़ लूंगा। बस एक बात समझ नहीं आ रही।’

‘क्या‘

‘अमरीक का कुछ न कुछ तो वास्को से सम्बन्ध है।’

‘मतलब’ माधव ने गौर से सुना। उसे वास्को के खिलाफ कोई सबुत नहीं चाहिए था।

‘अमरीक तब से ही एक्टिव हुआ जब से राजन शर्मा का खून हुआ‘

‘तो उससे वास्को का क्या सम्बन्ध‘

‘राजन शर्मा अपनी रिसर्च वास्को को ही बेचने वाला था परन्तु तब उसका खून हो गया। शायद श्रद्धा को कुछ पता था और वास्को ने उसे भी मरवा डाला‘

‘तुम्हारे पास कोई सबुत है।‘

‘नहीं सर अभी तो बस मेरी थ्योरी है।’

‘फिर इस सब से ऊपर उठो। फॉरेन मुंबई आ जाओ और अमरीक को पकड़ो। बस ज्यादा दिमाग मत लगाओ ’

माधव ने फोन काट दिया।

माधव को पता था कि राजवीर इतनी आसानी से मानने वाला नहीं था। वो श्रद्धा की मौत का भी प्रॉपर इन्वेस्टीगेशन करेगा और अमरीक और वास्को का भी इन्वेस्टीगेशन करेगा। क्या वाकई वास्को और अमरीक का कोई कनेक्शन था ? माधव सोच में पड़ गया। परन्तु ऐसा होता तो वास्को उसे अमरीक को मार डालने के लिए क्यों कहता। यह कहानी और भी उलझती जा रही थी।

माधव को यह समझ नहीं आ रहा था कि यदि अमरीक के दादा दादी ने राजवीर को पकड़ लिया था तो उसे इतनी आसानी से छोड़ कैसे दिया। क्या पहेली है ?

माधव ने तुरंत ही वास्को को फोन लगाया।

‘हाँ बोलो’ वास्को गंभीर स्वर में बोला।

‘राजवीर का दिल्ली से फोन आया था। उसने अमरीक के दादा दादी का पता लगा लिया है।’

‘उससे मुझे क्या। तुम को जो बोला है; बस वही करो ’

‘हाँ वास्को परन्तु ...’

'माधव' वास्को बीच में बोला।'अभी नरेश मेरे केबिन से बाहर गया है और वो भी अमरीक से घबराया हुआ है और तुम भी घबराओगे तो कैसे काम चलेगा।'

'परन्तु ...' माधव कुछ बोलने लगा।

'माधव - उस अमरीक को पकड़ो और जिन्दा मेरे सामने पेश कर दो। बस इतना करो और अपना इनाम ले जाओ' वास्को खूंखार स्वर में बोला और उसने फोन काट दिया।

माधव को समझ आ गया था कि वास्को को उस इंटर्न से कुछ बहुत ख़ास पूछना था। इसलिए वो इंटर्न अमरीक वास्को को जिन्दा चाहिए था। राजवीर भी अमरीक को मारेगा नहीं। परन्तु एक बात जो माधव को समझ नहीं आ रही थी वो ये थी कि वास्को अभी कुछ दिनों पहले उस अमरीक को मरवाना चाहता था परन्तु अब उसे वो जिन्दा चाहिए। आखिर ऐसा क्या हो गया ? इसका एक ही मतलब था कि उस इंटर्न के पास ऐसा कुछ था जो वास्को को चाहिए था।

उस इंटर्न के पास ऐसा क्या था ?

माधव ने फॉरेन ही कुंवर को फोन लगाया।

'यस सर' कुंवर ने सैलूट मारते हुए बोला। उसके सैलूट की आवाज़ फोन से होते हुए माधव तक पहुँच गई थी।

'कुंवर एक बात बताओ, राजवीर ने तुम्हें किस काम पर लगाया है'

‘सर वो श्रद्धा का पोस्ट मोर्टेम कराना है और उसकी सारी डिटेल्स निकालनी है’

‘ठीक है। क्या तुमने ये सब कर दिया’

‘हाँ सर ऑलमोस्ट हो ही गया। क्यों सर’

‘ध्यान से सुनो कुंवर। तुम जो भी डिटेल्स राजवीर को दोगे।’

‘वो आपको भी देनी है’ कुंवर बीच में बोल उठा।

‘हाहा तुम स्मार्ट हो कुंवर।’

‘यस सर। आपका आर्डर सर आँखों पर’

माधव ने फोन काट दिया।

कुंवर ने तुरंत ही राजवीर को फोन कर दिया।

‘हाँ कुंवर’ राजवीर ने थकावट भरी आवाज़ में बोला।

‘कहाँ हो सर’ कुंवर बोला।

‘तुम भी माधव सर की तरह चिंतित हो गए हो क्या ’

‘मैं कुछ समझा नहीं ’

‘अरे उन्होंने कल मुझे बहुत सारे कॉल किये थे’

‘वो क्यों’

‘शायद उन्हें पता करना होगा कि मैंने अमरीक को पकड़ने का क्या प्लान बनाया है’

‘ओके फिर’

‘कुछ नहीं यार, मैं यहाँ राजन शर्मा के बेटे कि डिटेल्स निकालने आया था, तो मुझे अमरीक की ओरिजिनल डिटेल्स मिल गयी।’

‘क्या बात है सर। फिर तो अमरीक को पकड़ ही लेंगे‘

‘नहीं यार कुंवर। अमरीक के दादा दादी से मैं मिला परन्तु उन्होंने मुझे ही कैद कर लिया‘

‘क्या‘ कुंवर बहुत ही आश्चर्य से बोला।

‘हाँ। फिर मुझे उन्होंने एक कमरे में बंद कर दिया। रात भर में वहीं था, सुबह किसी तरह वहाँ से निकला और फिर एक दुकान से मोबिल चार्ज करवाया और माधव सर को फोन किया‘

‘परन्तु उन्होंने आप पर हमला किया और आपको कैद किया‘ कुंवर बेहद गुस्से में बोला।

‘हाँ, परन्तु एक बात समझ नहीं आयी, उन्होंने मुझे वहीं एक कमरे में बंद कर दिया ये जानते हुए भी कि मैं उनका पता जान चुका हूँ और मैं राजन शर्मा के बेटे कि डिटेल्स भी जान गया हूँ।’

‘हाँ ये तो है सर‘

‘और एक बात समझ नहीं आयी कि राजन शर्मा के बेटे के पास जो किताब थी वो उसने अमरीक को दे दी।’

‘ये क्या कह रहे है सर। कौनसी किताब?’ कुंवर विस्मित होते हुए बोला।

‘अरे यार राजन शर्मा ने जो कैंसर का क्योर का ईजाद किया और अपनी रिसर्च को दो किताबों के किन्ही पन्नो के बीच छुपा दिया। एक किताब उसने अपने बेटे को दी और ये बात श्रद्धा को नहीं पता थी। दूसरी उसने श्रद्धा को दे दी।’

‘श्रद्धा को दे दी। क्या राजन शर्मा श्रद्धा पर इतना यकीन करता था‘ कुंवर ने आश्चर्य से पूछा।

‘श्रद्धा वास्को के लिए काम करती थी। उसने राजन शर्मा को अपने हुस्न के जाल में ऐसा फसांया कि राजन उस पर विश्वास करने लगा। बस एक बात जो श्रद्धा को नहीं पता थी कि ये दो किताबें अलग अलग है। उसे लगा दोनो किताबें एक ही है।’

‘और उस श्रद्धा ने फिर वास्को को डबल क्रॉस भी किया‘ कुंवर बीच में बोला।

‘हाँ। उसने एक किताब अभिषेक को बेच दी और उसे लगा वो राजन से दूसरी किताब लेकर वास्को को दे देगी।’

‘ओके सर‘

‘परन्तु राजन शर्मा कि हत्या से पूरा गेम चेंज हो गया ‘ राजवीर बोला।

‘कैसे सर‘

‘अरे यार कुंवर, श्रद्धा को लगा कि वो वास्को को दूसरी किताब उसके बेटे से लेकर दे देगी। परन्तु तभी राजन शर्मा की हत्या हो गयी। उसका बेटा अंडर ग्राउंड हो गया। कहीं अब्रॉड चला गया।’

तभी कुंवर बीच में बोला, ‘और कुछ दिनों में वो अमरीक क्राई में आता है, और वास्को श्रद्धा को उसके पीछे लगा देता है।’

‘यस कुंवर।’

‘समझ गया सर आपने कुछ ज्यादा पता लगा लिया है। मैंने आपको इसलिए फोन किया है कि माधव सर चाहते है कि उन्हें पूरी डिटेल्स मिले‘

‘ठीक है तुम उनके आर्डर फॉलो करे‘ राजवीर बोला और उसने फोन काट दिया।

राजवीर को समझ आ गया था कि उसे अब क्या करना है। बस एक बहुत बड़ी पहेली उसके सामने थी, राजन शर्मा कि हत्या किसने की। वास्को राजन शर्मा को नहीं मारेगा क्योंकि उसको उससे कैंसर का कोड चाहिए था, प्रथमेश भी राजन शर्मा से डील कर रहा था और जब श्रध्दा ने उसे एक किताब दे दी थी तो वो क्यों राजन शर्मा को मारेगा। कोई बहुत बड़ा सम्बन्ध है इस अमरीक और राजन शर्मा के हत्यारे के बीच। अमरीक राजन शर्मा के बेटे का दोस्त था। तो क्या वो राजन शर्मा के हत्यारे से बदला ले रहा था। परन्तु किससे। उसने सत्या को मारा जो प्रथमेश का

आदमी था, फिर अभिषेक को जो प्रथमेश का राइट हैंड था। आज तक अमरीक ने वास्को के किसी भी आदमी को नहीं मारा था।

ये कहानी उलझती जा रही थी। राजवीर इन्ही ख्यालो में उलझा हुआ फ्लाइट में बैठ गया और उसने मुंबई कि फ्लाइट पकड़ ली थी।

उसकी दिल्ली यात्रा बहुत ज्यादा सफल रही थी और उसे अनेकों प्रश्नो के उत्तर मिल चुके थे।

बस अब सिर्फ एक मुख्य प्रश्न बचा हुआ था - राजन शर्मा की हत्या किसने की और उसकी बॉडी क्यों गायब की गयी।

अध्याय 25

प्रथमेश और रेनू ऋतू के घर के बाहर खड़े थे। वो कालिया गैंग का इंतज़ार कर रहे थे। कल रात में ही प्रथमेश ने कालिया को बताया था कि अमरीक ऋतू के घर में हो सकता है। उसने अमरीक का नंबर भी कालिया को दे दिया था। इस वक्त सुबह के ग्यारह बज रहे थे। प्रथमेश और रेनू देर रात से ही ऋतू के घर के बाहर खड़े थे, परन्तु कालिया गैंग का कहीं कोई पता नहीं था। ऋतू भी ऑफिस के लिए निकल चुकी थी। प्रथमेश ने दो बार कालिया गैंग को फोन भी किया था परन्तु उसे कोई जवाब नहीं मिला था।

प्रथमेश और रेनू मर्सिडीज़ में बैठे हुए थे। जब उन्होंने देखा की कोई अनजान व्यक्ति ऋतू के घर में घुस रहा था। उन्हें नहीं पता था कि वो कौन है।

'क्या ये कालिया गैंग का आदमी है' प्रथमेश बोला।

रेनू को यह समझ नहीं आ रहा था कि प्रथमेश यहाँ बाहर खड़ा क्यों है। रात भर से दोनों पागलो जैसे ऋतू के घर के बाहर थे। कोई भी संदेहास्पद हरकते उनको नहीं दिखी थी। अब ये कालिया गैंग का आदमी शायद ऋतू के घर में घुसने की कोशिश कर रहा था।

प्रथमेश ने अपने मोबाइल के कैमरे को ज़ूम करके देखा और उसे वो आदमी दिख रहा था। वो ऋतू के घर में घुस गया था।

'प्रथमेश किसी ने हमें यहाँ देख लिया तो' रेनू घबराते हुए बोला।

‘अरे रेनू हम अमरीक का पता लगाने आये है। वो आदमी कालिया गैंग का मेंबर है। यदि अमरीक ऋतू के घर में है तो जल्द ही पकड़ा जायेगा।’

‘परन्तु प्रथमेश मुझे पक्का नहीं है की वहाँ अमरीक होगा। मुझे सिर्फ शक था।’

‘हाँ मुझे पता है तभी तो मैं यहाँ बाहर खड़ा हूँ।‘

रेनू को डर लग रहा था क्योंकि कालिया गैंग बहुत ही ज्यादा खतरनाक था और पुलिस के राडार पर भी था। यदि पुलिस को पता चला की प्रथमेश और रेनू कालिया गैंग से संपर्क में है तो उन दोनों के लिए बहुत ज्यादा खतरा हो सकता था।

रेनू प्रथमेश को झंझोड़ते हुए बोली,’ प्रथमेश निकलते है यहाँ से। ये सब नहीं करते है।’

‘तुम पागल हो क्या रेनू। याद नहीं उस अमरीक ने हमे 11 बजे का अल्टीमेटम दिया था।’

‘हाँ ‘

‘इसलिए रेनू तुम मुझे मेरा काम करने दो। तुम अमरीक को फोन लगाओ।’

रेनू ने चुपचाप अपने पर्स में से अपना फोन निकाला और अमरीक को फोन लगाया।

रिंग बहुत देर तक जाने के बाद अमरीक की आवाज़ आयी, ‘पैसे तैयार है‘

रेनू ने फोन को स्पीकर पर डाला और प्रथमेश को दे दिया।

‘अमरीक तुम कहाँ हो‘ प्रथमेश ने गंभीर स्वर में बोला।

‘वो सब छोडो।’ अमरीक बहुत ही कड़क आवाज़ में बोला। ‘पैसे का इंतज़ाम हो गया ‘

‘अमरीक पच्चीस करोड़ रुपए बहुत बड़ी रकम होती है ‘

‘ठीक है प्रथमेश बाबू आपको दो दिन और दिए। परन्तु अब रकम है साठ करोड़। तीस करोड़ का इंतज़ाम करना‘

‘क्या ‘ प्रथमेश चौंकते हुए बोला ‘तुम पागल हो अमरीक‘

‘ऋतू के घर के बाहर टाइम बर्बाद मत करो; पैसे का इंतज़ाम करो। मैं दो दिन में फोन करूँगा और बताऊंगा कि तीस करोड़ कहाँ लाने है। ओनली कैश या गोल्ड में‘

‘सुनो तो अमरीक ‘प्रथमेश ने बीच में बोलने की कोशिश की।

‘नहीं प्रथमेश ‘ अमरीक बहुत ही खूंखार स्वर में बोला ‘तुम जैसे मूर्खों के लिए मेरे पास समय नहीं है। दो दिन - तीस करोड़ का इंतज़ाम हो जाना चाहिए ‘

प्रथमेश से आजतक किसी ने भी ऐसे बात नहीं की थी।

‘और हाँ प्रथमेश पुलिस ऋतू के घर पहुँचने वाली है।’

प्रथमेश के होश फाख्ता हो गए। ‘क्यों’ प्रथमेश घबराते हुए बोला।

‘तुम जैसे मुर्ख ने कालिया गैंग को बोला है कि मैं ऋतू के घर पर हूँ। उस मुर्ख ने अपना एक और आदमी वहाँ भेजा है। मैंने उसे भी मार डाला है। जल्द ही ऋतू की बाई घर पर आएगी और वहाँ उसे लाश मिलेगी। तो पुलिस तो आएगी न‘ अमरीक ने एक खूंखार हसी भरी और फोन काट दिया।

प्रथमेश रेनू की शकल देखने लग गया। अमरीक बेहद खतरनाक था और उसे कैसे पता चल गया की प्रथमेश और रेनू ऋतू के घर के बाहर है। और उसने कब उस कालिया गैंग के आदमी को मार डाला।

प्रथमेश बुरी तरह से हिल चुका था। वो और रेनू वहाँ से तुरंत ही भाग गए।

प्रथमेश को डर लग रहा था, यदि अमरीक सच बोल रहा था और कालिया गैंग का आदमी मारा गया था तो पुलिस इन्वेस्टीगेट करेगी और कहीं प्रथमेश की फोन कॉल की डिटेल्स न निकल जाये।

रेनू और भी ज्यादा घबरा रही थी। अमरीक उसे ही फोन करता है और कहीं यदि अमरीक पकड़ा गया तो रेनू भी लपेटे में आ जाएगी। रेनू जल्द से जल्द ये सब छोड़ कर कहीं भाग जाना चाहती थी।

अमरीक के आने के बाद से क्राई में एक भूचाल आ गया था। रेनू को अब लग रहा था कि उससे बहुत बड़ी गलती हो गयी थी। क्या वो वास्को से माफ़ी मांग ले।

इधर प्रथमेश अपनी मर्सिडीज़ चला ही रहा था कि उसका फोन बज गया। प्रथमेश को समझ आ गया था कि कालिया गैंग उसे फोन करेगा ही। उसने गाड़ी एक साइड में रोकी और फोन आंसर किया।

'मैं कालिया बोल रहा हूँ' फोन पर एक बहुत भारी आवाज़ ने कहा।

'कालिया बॉस मुझे माफ़ कर दो मुझे नहीं पता था कि अमरीक आपके इस आदमी को भी मार डालेगा।' प्रथमेश रोते हुए बोला। वो बेहद घबरा चुका था।

'मार डालेगा ; तू पागल है क्या।' कालिया चीखा।

'मतलब' प्रथमेश थोड़ा सँभालते हुए बोला। 'आपके आदमी जो अभी ऋतू के घर पर गया था उसको अमरीक ने मार डाला है न'

'तू क्या सुबह सुबह नशा करके बैठा है'

'तो' प्रथमेश को आश्चर्य और विस्मय दोनों हो रहा था।

'मुर्ख मेरा आदमी उस मकान में जाकर आ गया। मैंने अमरीक के फोन की लोकेशन भी ट्रेस करवा ली, वो विरार मैं है न की वहाँ जहाँ तूने बताया था।'

'ओह ' प्रथमेश ने रेनू की और गुस्से से देखा।

‘मुर्ख सुन, ये नंबर अमरीक का ही है न। मेरे साथ खेल मत खेल तुझे भारी पड़ेगा।’

‘नहीं कालिया बॉस मुझे इसी नंबर से अमरीक फोन करता है‘

‘ठीक है, तो वो विरार में कहीं है। उस मकान में कोई दिक्कत नहीं है। वो ऋतू का ही है और वहाँ अमरीक नहीं है। मेरा आदमी चेक कर के आ गया‘

कालिया ने फोन काट दिया।

प्रथमेश को समझ नहीं आया की अभी उसे अमरीक ने बोला था कि उसने उस आदमी को मार डाला था। ये सब क्या पहेली थी।

तभी रेनू के फोन पर अमरीक का फोन आ गया।

‘हा हा, प्रथमेश बाबू‘

‘तूने झूठ क्यों बोला‘

‘मुर्ख प्रथमेश बाबू को और मुर्ख बनाने के लिए‘

‘क्या‘ प्रथमेश का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था।

‘सुनो प्रथमेश बाबू तुमने कालिया गैंग को मेरे पीछे लगाया है इसलिए तुम्हें अब कोड के 60 करोड़ पुरे एडवांस देने होंगे। 2 दिन में 60 करोड़ की व्यवस्था कर लेना।‘

अमरीक ने फोन काट दिया था।

प्रथमेश ने रेनू की ओर देखा। प्रथमेश ने मन बना लिया था। उसे अब अमरीक से कोई बात नहीं करनी थी।

प्रथमेश ने अपनी गाड़ी का गेट खोला और रेनू को बोला ‘निकल बाहर‘

‘जी’ रेनू सकपकाती हुई बोली।

‘हाँ और फिर कभी अपनी ये मनहूस शकल मुझे मत दिखाना’ प्रथमेश बेहद ही गुस्से से बोला।

‘प्रथमेश मैं तो ...’

‘मुझे कुछ नहीं सुनना। निकल मेरी गाड़ी से बाहर अभी के अभी।’

रेनू कुछ कहना चाहती थी परन्तु प्रथमेश उसे धक्का देने लगा। रेनू चुपचाप उसकी मर्सिडीज़ से उतर गयी।

‘मेरे को न तो फोन करना न मेरे से मिलने आना। और उस कातिल खूनी अमरीक का फोन आये तो कहना वास्को से डील करले।’

प्रथमेश ने दरवाजा बंद किया और अपने घर की ओर निकल गया।

रेनू उस बेहद तेज गति से जाती हुई मर्सिडीज़ को देखती रही और जोर जोर से रोने लगी।

उसे समझ नहीं आया कि वो अब क्या करे। उसे क्राई को डबल क्रॉस करने का फल मिला था।

रेनू को पता ही नहीं चला कब ये खेल पूरी तरह से पलट गया। वो धीरे धीरे अपने घर की तरफ चली गयी। उसका सामान अभी प्रथमेश

के घर पर था परन्तु जल्द ही प्रथमेश का कोई नौकर रेनू के घर पर वो सामान लेकर आ जायेगा।

रेनू ने अमरीक को ही फोन लगाया।

‘इतनी जल्दी इंतज़ाम हो गया पैसे का‘ अमरीक बोला।

‘नहीं, प्रथमेश ने कहा है कि तुम वास्को से डील कर लो‘ रेनू बोली और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

‘ठीक है पर तुम रो क्यों रही हो‘ अमरीक ने आश्चर्य से पूछा।

‘क्योंकि प्रथमेश ने मुझे अपनी गाड़ी से निकाल दिया और बोल दिया की मैं उसके जीवन से निकल जाऊ‘

‘हाहा कोई नहीं तो क्राई चली जाओ। तुम तो क्राई में काम करती हो‘

‘वहाँ तो ऋतू उनको बता देगी‘

‘वो तो है परन्तु हो सकता है ऋतू ने नहीं बताया हो‘

रेनू चुप ही रही।

‘चलो तुमने मेरी मदद की है, मेरे होटल के 2000 रुपये भी दिए है इसलिए मैं भी तुम्हारी मदद करता हूँ‘

रेनू को समझ नहीं आया की ये अमरीक उसकी मदद क्यों करेगा। रेनू चुप ही रही। वो चुपचाप अमरीक की बात सुन रही थी।

‘तुम क्राई जाओ और ऐसे रहो जैसे कुछ हुआ ही नहीं। शांत रहो और अपना जॉब करो। तुम यदि कभी मुसीबत में हो तो मुझे मैसेज या कॉल कर देना। मैं तुम्हारी हेल्प करने की कोशिश करूँगा।‘

अमरीक बोला और उसने फोन काट दिया। रेनू के आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। अमरीक - वो कातिल; वो खुनी; रेनू को सांत्वना दे रहा था। रेनू को अमरीक की बात समझ आ गयी। रेनू चुपचाप से अपने घर गयी और फिर क्राई के ऑफिस पहुँच गयी।

कुछ देर पहले रेनू को लगा था कि उसका जीवन ही समाप्त हो गया था परन्तु अमरीक ने उसमे एक नयी जान फूंक दी थी। रेनू को पहली बार अमरीक अच्छा लगने लगा था।

वक्त कैसे अपना रंग बदलता है। कुछ घंटो पहले प्रथमेश रेनू को मसीहा और अमरीक शैतान लग रहा था और अब उसे अमरीक, प्रथमेश से भी बड़ा हितेषी नज़र आ रहा था।

अध्याय 26

दिन के तकरीबन दो बज रहे थे। नरेश जावेद की दुकान पर बैठा था। उसका वहाँ कुछ खाने का मन नहीं था। वो एक बहुत ही छोटी सी दुकान थी जिसके बाहर कुछ कुर्सियाँ और मेज रखी थी। वहाँ आस पास मखियाँ भिन्न भिन्ना रही थी और ट्रैफिक का सारा पोल्लुशन (pollution) भी आ रहा था। नरेश की मज़बूरी न होती तो वो ऐसी जगह कभी नहीं आता। नरेश का फोन उसकी ऊपर वाली जेब में था और ऋतू पास में ही नरेश की BMW X5 में बैठी हुई थी और फ़ोन को रिकॉर्ड मोड पर कर रखा था। प्लान ये था कि ऋतू नरेश और अमरीक की बातें रिकॉर्ड कर लेगी। ताकि यदि कभी पुलिस या वास्को को कुछ बताना पड़े तो उनके पास रिकॉर्डिंग के रूप में सबूत मौजूद रहे। नरेश को बैठे बैठे तकरीबन एक घंटा हो चुका था। उसने जावेद को सिर्फ बैठने के लिए 1000 रुपए भी दे दिए थे। नरेश अब उस धुप और पोल्लुशन (pollution) में खाली बैठे बैठे थक गया था और ऋतू भी अब गाड़ी में बैठे बैठे बोर हो चुकी थी। उसने रिकॉर्डिंग बंद कर दी थी। वो फोन बंद नहीं कर सकती थी। उसका फोन अभी भी नरेश के फोन से कॉल पर जुड़ा हुआ था। नरेश के फोन की बैटरी हालाँकि बहुत देर तक नहीं चलने वाली थी। नरेश ने कल्पना नहीं की थी कि अमरीक उसे एक से डेढ़ घंटा बैठा कर रखेगा। नरेश उठा और वहाँ से जाने लगा जब उसे जावेद ने आवाज़ दी।

‘क्या है’ नरेश झिल्लाते हुए बोला।

‘सर आप एक बार हमारे घर के अंदर आइये न‘ जावेद ने बहुत ही मृदु भाव से बोला।

‘क्या’ नरेश झेपते हुए बोला।

जावेद का मकान उसकी दुकान के ऊपर ही था और रास्ता उसकी दुकान के अंदर से था।

‘मैं तुम्हारे घर में क्यों आऊं‘ नरेश क्रोधित स्वर में बोला।

‘क्योंकि आपने हमारी दुकान से कुछ खाया नहीं, और आपको 1-2 प्लेट पकोड़े और चाय खाने के लिए कहा गया था।’ जावेद मृदु भाव से बोला।

नरेश की आँखों में अंगार दौड़ गए और वो समझ गया कि जावेद अमरीक से मिला हुआ है। अमरीक जावेद के घर पर इतनी देर से बैठा हुआ था और उसने उसको नीचे इस धुप और पोल्लुशन में पिछले डेढ़ घंटे से बैठा कर रखा हुआ था।

परन्तु नरेश के पास कोई चारा नहीं था। नरेश चुपचाप जावेद के पीछे-पीछे चला गया और जावेद के मकान में पहुँच गया। जैसे ही दरवाजा खुला और नरेश मकान में दाखिल हुआ अमरीक वहाँ चाय पकोड़े खाते हुए उसे दिखा।

अमरीक ने नरेश को देखते ही अपने चाय पकोड़े नीचे रख दिए और बहुत ही प्यार से बोला, ‘आईये नरेश सर बैठिये ‘

नरेश ने अमरीक को बेहद गुस्से में देखा। परन्तु फिर उसने अपना गुस्सा पी लिया।

'मैं नीचे हूँ भाई कुछ चाहिए तो बोल देना' जावेद मृदु भाव से बोला।

'बस जावेद भाई कितना खाऊंगा। मैं तो वैसे भी अभी धीरे धीरे ठीक हो रहा हूँ वरना नरेश सर एंड वास्को सर ने तो मुझे गोली मारकर पूरा इंतजाम कर दिया था।' अमरीक शातिराना ढंग से बोला।

जावेद थोड़ा हँसा और दरवाजा बंद करते हुए चला गया।

'मुझे यहाँ क्यों बुलाया है' नरेश गुस्से में बोला।

'बैठो नरेश' अमरीक बोला।

'नरेश, न की नरेश सर। बहुत तरक्की कर ली तूने' नरेश गुस्से में बोला।

'तू सर कहलाने लायक पहले बन तो जा' अमरीक ने तल्ख़ आवाज़ में कहा।

'मैं यहाँ तेरी बकवास सुनाने नहीं आया हूँ।' नरेश ने बहुत ही गुस्से में बोला।

'नरेश तूने चाय पकोड़े नहीं खाये। मैंने कहा था खा लेना' अमरीक बोला।

'मैं ऐसे छोटी जगह कुछ खाता पीता नहीं' नरेश ने सख्त लहजे में बोला।

‘नरेश, ये पकोड़े खा और ये चाय पी’ अमरीक ने और भी ज्यादा सख्त लहजे में बोला और अपनी झूठी चाय के कप और आधे खाये हुए पकोड़े की ओर इशारा किया।

नरेश गुस्से से लाल पीला हो गया।

नरेश को अमरीक से इस बदतमीजी की उम्मीद नहीं थी। नरेश के लिए अमरीक की कोई औकात नहीं थी। हालाँकि वो डरा हुआ था, अमरीक एक खूंखार अपराधी था। परन्तु नरेश की भी कोई सेल्फ रेसपेक्ट थी। वो दरवाजा खोलने का प्रयास करने लगा परन्तु दरवाजा बाहर से बंद था।

‘नरेश’ अमरीक ने बहुत ही खूंखार लहजे में बोला। उसका लहजा इतना ज्यादा सख्त और तल्खिया था कि किसी की भी रूह कंपा दे।

नरेश डर गया।

‘देखो अमरीक’ नरेश बहुत ही प्यार भरे स्वर में बोला।

‘चाय और पकोड़े’ अमरीक ने अपने झूठे कप और आधे खाये पकोड़े की तरफ इशारा करते हुए बोला।

नरेश वहाँ पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठ गया और उसने वो पकोड़ा खा लिया और एक ही घूंट में चाय भी पी ली।

‘देट इस लाइक ए गुड बॉय (that’s like a good boy)’ अमरीक ने सरकास्टिक (sarcastic) अंदाज़ में कहा।

नरेश की आँखों में अंगार था परन्तु उसने कुछ भी नहीं कहा और चुप ही रहा।

'चलो एक बात बताओ तुम अभिषेक को जानते थे।' अमरीक ने एक कुटिल मुस्कान के साथ पूछा।

नरेश को समझ नहीं आया कि अमरीक क्या कहना चाहता है।

'अरे वो ही अभिषेक जिसे मैंने मार डाला था। याद नहीं क्राई में वास्को के केबिन में तू और वास्को मुझसे पूछ रहे थे मैंने अभिषेक को क्यों मारा' अमरीक ने कुटिलता पूर्वक कहा।

'मुझे माफ़ कर दो अमरीक' नरेश ने बहुत ही मृदु भाव से बोला।

अमरीक ने नरेश को बीच में ही टोक दिया।

'मुर्ख जो पूछ रहा हूँ उसका जवाब दे' अमरीक का लहजा फिर तल्ख़ और उसके हाव भाव बेहद बद्तमीज़ थे।

'हाँ। हम एक ही इंडस्ट्री में है' नरेश बोला।

'और अभिषेक की पत्नी सावित्री क्या वो भी एक ही इंडस्ट्री में है' अमरीक के चेहरे पर एक कुटिल हसी थी।

'तुम कहना क्या चाहते हो' नरेश बोला।

अमरीक ने अपना फोन निकला और अपने फोन की गैलरी में से एक वीडियो प्ले किया।

नरेश की आँखे फटी की फटी रह गयी। उस वीडियो में नरेश और सावित्री नग्न अवस्था में थे और अभिषेक की पत्नी सावित्री को नरेश ने अपनी गोद में उठा रखा था।

‘पूरा वीडियो आराम से देख लो। मैंने खुद दो बार देखा है। तुम लोगों ने ऐसे ऐसे कारनामे किये है जो शायद कोई प्रोफेशनल भी मुश्किल से कर पायेगा’ अमरीक ने बेहद बदतमीजी और बेअदबी से बोला। उसके चेहरे के हावभाव उसकी बात को और भी घिनोना रूप दे रहे थे।

नरेश का चेहरा पीला पड़ गया। ये अमरीक चीज क्या है ? उसे कैसे पता चल गया की अभिषेक की पत्नी के साथ उसके अवैध सम्बन्ध थे।

और ये वीडियो कहाँ से आ गया। ये वीडियो कब और किसने लिया।

‘देख नरेश, तू सावित्री के साथ जो चाहे करे वो तुम दोनों का आपस का मामला है, परन्तु तूने सावित्री के कहने पर सत्या को क्राई में नौकरी दिलाई’ अमरीक ने तल्ख़ लहजे में कहा।

नरेश को समझ नहीं आ रहा था कि अमरीक को ये सब कैसे पता चल गया।

‘मैंने कहा था नरेश तू मुर्ख है और नौकर ही बना रह सकता है मालिक नहीं’ अमरीक चीखा।

नरेश अमरीक के पैरों में गिर गया। ‘प्लीज अमरीक ’ नरेश कुछ बोल नहीं पाया।

‘यह ही नहीं तूने ओरिएट ओबिलिस्क की किताब का राज़ जो श्रद्धा ने केवल वास्को को बताया था और वास्को ने तुझे, तूने वो भी सावित्री को बता दिया और सावित्री के ब्लैक मेल करने पर तूने ही श्रद्धा को वो किताब अभिषेक को देने को कहा। श्रद्धा नहीं तू वास्को को डबल क्रॉस कर रहा था‘ अमरीक भावना विहीन अंदाज़ में बोला।

‘मुझे माफ़ कर दे अमरीक।’ नरेश ने अमरीक के पाँव पकडे हुए थे और वह जोर जोर से रो रहा था।

नरेश को इतना सदमा लगा था कि वो भूल गया कि उसका फोन ऑन था और ऋतू उसकी गाड़ी में बैठे हुए सारी बाते सुन रही थी। नरेश की थोड़ी किस्मत अच्छी थी कि उसका फोन अब डिस्चार्ज हो गया था और ऋतू इसके आगे की बाते नहीं सुन पायेगी।

‘मुर्ख तुझे लगता है कि तुझे सावित्री ने फसाया था।’ अमरीक बोला।

‘हाँ अमरीक मैं अभिषेक की पत्नी से एक पार्टी में मिला था। उसने मुझे अपने हुस्न के जाल में फसा लिया। मैं अक्सर अभिषेक के घर जाता था जब कभी भी वो टूर पर रहता। सावित्री ने कब मुझे पूरी तरह मंत्र मुग्ध कर दिया मालूम ही नहीं पड़ा। मैंने सावित्री के कहने पर ही सत्या को नौकरी दी। उसको ही मैंने ओरिएट ओबिलिस्क का राज़ बताया।’

नरेश थोड़ा रुका और अपने आप को सँभालते हुए आगे बोला। उसे अब अमरीक से कुछ छिपाने में कोई फायदा नहीं दिख रहा था।

‘एक दिन सावित्री ने मुझसे कहा उसने गलती से अभिषेक के सामने ओरिएट ओबिलिस्क का राज़ उजागर कर दिया है। अभिषेक को यदि वो किताब नहीं दी गयी तो अभिषेक हमारे अवैध सम्बन्धो के बारे में मेरी पत्नी को और वास्को को बता देगा।’

अमरीक घिन्न भरी नज़रों से नरेश को देख रहा था। वो अभी भी अमरीक के पाँव पकडे हुए था। नरेश ने आगे कहा,

‘मैंने श्रद्धा को थोड़ा फोर्स किया और बिना वास्को को बताये श्रद्धा को अच्छे पैसे देकर वो ओरिएट ओबिलिस्क की किताब अभिषेक को दिलवाई। उस समय श्रद्धा और मुझे दोनों को ही लगा था कि वो दो किताबें एक जैसी ही है और एक भी वास्को को देंगे तो काम चल जायेगा।‘

‘इसलिए ही तो कह रहा हूँ तू निरह मुर्ख है ‘अमरीक ने पाँव से झटका देकर नरेश को दूर करते हुए बोला।

‘मतलब‘ नरेश ने मासूमियत भरे अंदाज में बोला।

‘अभिषेक ने ही ये सारी पिक्चर और वीडियो लिए है। उसने अपने घर में हिडन कैमरा लगाया। उसकी पत्नी उसके कहने पर ही ये सब कर रही थी‘

‘क्या‘ नरेश को शॉक लग गया था।

‘परन्तु उसकी पत्नी ने उसकी मौत के बाद मुझे एक एक चीज बताई। इंस्पेक्टर राजवीर उनके घर पर आया और उसने क्या पूछा’ नरेश अकस्मात बोल गया।

‘वो इसलिए ताकि यदि तुझे अभिषेक के खून के बारे में कुछ पता हो तो तू बता सके। अभिषेक की पत्नी को लगा था कि वास्को या तूने ही अभिषेक का खून करवाया है।’

नरेश जमीन पर ही सर पकड़ कर बैठ गया।

‘खैर मैंने तुझे यहाँ इसलिए नहीं बुलाया की तुझे कोई मोरल लेसन (moral lesson) दूँ’ अमरीक बोला।

नरेश सँभलते हुए उठा और कुर्सी पर बैठ गया।

‘मेरे पास वो कोड है जिससे हम कैंसर का परमानेंट क्योर बना सकते है ’ अमरीक बोला।

‘और तुम्हें वास्को से पैसे चाहिए’ नरेश बोला।

‘मुर्ख नरेश, तो फिर मैं वास्को को फोन करता तुझे जावेद के चाय पकोड़े क्यों खिलाता’ अमरीक बोला।

जावेद के चाय पकोड़े का नाम सुनते ही नरेश को घिन्न सी आ गयी और वो ऊबाकी लेने लगा।

‘मैं चाहता हूँ हम अपनी खुद की कंपनी खोले’ अमरीक बोला।

‘मतलब’ नरेश ने विस्मित होते हुए पूछा।

‘मतलब ये की तू 100 करोड़ का इंतज़ाम कर, और तू क्राई जैसी कंपनी का COO है आराम से एक छोटी कंपनी का सीईओ बन सकता है। 100 करोड़ की लागत से हम अपनी कंपनी खोलेंगे। बाकि बैंक फाइनेंस करेगा। और हम कैंसर क्योर बेचेंगे।‘ अमरीक बोला।

‘बाकि सब ठीक है, तेरे पास कोड है मैं डिस्ट्रीब्यूशन वगैरह सब संभल लूंगा, परन्तु मैं 100 करोड़ कहाँ से लाऊंगा ‘ नरेश बोला।

‘क्राई की कंपनी के फाइनेंस में हेर फेर कर और 100 करोड़ का गबन कर ले‘ अमरीक बिलकुल ही सामान्य भाव से बोला।

‘क्या‘ नरेश के चेहरे की हवाइंया उड़ गयी।

‘बिलकुल नहीं। मैं जेल जाने का रिस्क क्यों लूँ’ नरेश बोला।

‘अरे मुर्ख जब मैं वास्को को बता दूंगा की तूने ओरिएट ओबिलिस्क की किताब प्रथमेश के राइट हैंड अभिषेक को दिला दी तो तेरी क्राई की नौकरी तो गयी। जान बक्श दे वास्को वो ही बहुत है। और सोशल मीडिया पर तेरे सावित्री के साथ कारनामे मैं वायरल कर दूंगा‘ अमरीक खिसियाते हुए बोला।

नरेश के होश उड़ गए। वो कहाँ फस गया था। अमरीक बेहद शातिर, चालक और खतरनाक था। उसकी पत्नी और बच्चों को सावित्री के बारे में मालूम पड़ गया तो वो उसे छोड़ कर चले जायेंगे। वास्को को पता चला कि ओरिएट ओबिलिस्क की एक किताब नरेश ने अभिषेक को दिलाई है तो श्रद्धा जैसा हाल उसका भी हो जायेगा।

उसे अब इस अमरीक की बात ही माननी होगी। उसके पास अब कोई चारा नहीं था। जावेद के चाय पकोड़े उसे बहुत ही महंगे पड़े थे। नरेश का सर फटा जा रहा था।

‘ठीक है नरेश। तुम फॉरेन 100 करोड़ रुपए क्राई से गबन करो। तुम्हारे पास दो दिन का समय है।’

‘अमरीक मुझ पर रहम करो ‘

‘ठीक है तीन दिन ‘

‘अमरीक प्लीज’

‘अहमको के राजा, अपने घुटनो से सोचना बंद कर और जो कानो के बीच है उससे सोचना शुरू कर तो तीन दिन में कर पायेगा। तीन दिन मतलब तीन दिन वरना अपने पच्चीस मंज़िला अपार्टमेंट से कूद कर सुसाइड कर लेना।’ अमरीक चीखा।

अमरीक उठा और दरवाजे पर जोर से दस्तक दी, बाहर खड़े जावेद ने वो दरवाजा खोल दिया। अमरीक निकल गया और नरेश वही बैठा रहा और अपने भाग्य को कोसने लग गया।

कुछ समय बाद नरेश उठा और बोझिल मन के साथ अपनी गाड़ी में पहुँच गया जहाँ ऋतू उसका इंतज़ार कर रही थी। ऋतू ने पूरी बात नहीं सुनी थी परन्तु वो समझ गयी थी कि जावेद के मकान में क्या क्या हुआ होगा। ऋतू ने गाड़ी स्टार्ट कि और क्राई के दफ्तर आ गयी।

अमरीक ने बहुत खतरनाक बिसात बिछाई थी। वो किसके इशारे पर काम कर रहा था ये समझना मुश्किल था। ये कहानी अब एक खतरनाक मोड ले चुकी थी।

अध्याय 27

राजवीर इस वक्त राजन शर्मा के घर में आ गया था। उसने बस यह ही एक जगह नहीं ढूंढी थी जो इस केस से जुडी हुई थी। उसे यहाँ पहले ही आ जाना चाहिए था। राजन शर्मा का घर मुंबई के जुहू इलाके में था। वो वैसे राजवीर के जूरिस्डिक्शन में नहीं था परन्तु फिर भी राजवीर की रेस्पेक्ट सभी पुलिस अफसर करते थे इसलिए राजवीर को कोई बहुत दिक्कत नहीं हुई। राजन शर्मा का खून हुआ या वो एक्सीडेंट था कुछ पता नहीं लग पाया था और उसकी लाश भी गायब हो गयी थी इसलिए कोई पुलिस इन्क्वारी हुई ही नहीं। शायद राजवीर ही पुलिस का पहला आदमी था जो राजन शर्मा के घर आया था। राजवीर कल रात ही दिल्ली से आया था और आज सुबह ही वो राजन शर्मा के घर पर था। राजवीर को शक था कि जयेश - राजन शर्मा का बेटा, अमरीक और राजन शर्मा आपस में मिले हुए थे और शायद जयेश और अमरीक राजन शर्मा की हत्या का ही बदला ले रहे थे।

जयेश तो अंडरग्राउंड था या शायद अंडरग्राउंड होने का नाटक कर रहा था और किसी बड़े षड़यंत्र का हिस्सा था। राजवीर ने सोचा की एक बार नरेंद्र मीणा को फोन लगाया जाये। वो प्रोफेसर जिसने जयेश को अब्रॉड जाकर रिसर्च करने की परमिशन दी थी। राजवीर एक दो बार कल रात में भी नरेंद्र मीणा को संपर्क करने की कोशिश कर चुका था, परन्तु

सफल नहीं हो पाया था। उसने फिर एक बार नरेंद्र मीणा को फोन किया और इस बार वो फोन आंसर हो गया।

‘हेलो प्रोफेसर मीणा हियर (here), हु इस थिस? (who is this?)

‘हेलो प्रोफेसर मीणा, थिस इस (this is) सीनियर पुलिस इंस्पेक्टर राजवीर - मुंबई पुलिस’

‘बताईये मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ’

‘सर एक छोटी सी ही हेल्प चाहिए। आपका एक स्टूडेंट है जयेश शर्मा ‘

‘हाँ जी है बोलिये‘

‘क्या बात है सर आपको अपने इतने हज़ारो स्टूडेंट्स के नाम याद रहते हैं’ राजवीर थोड़ा कुटिलता पूर्वक बोला।

‘अरे सब के नहीं रहते किसी किसी के रह जाते है, आप बोलिये क्या काम है‘ नरेंद्र मीणा थोड़ा उखड़ते हुए बोला।

‘आपने उसे अब्रॉड भेजने का रिकमेन्डेशन दिया था‘

‘अरे इंस्पेक्टर साहब जयेश एक बेहद ही एवरेज स्टूडेंट है। मैं तो उसे अब्रॉड कतई नहीं भेजता परन्तु वो मेरे पैरो में ही पड़ गया‘

‘प्रोफेसर मीणा आप बहुत ही भोले हैं’ राजवीर सरकास्टिकली (sarcastically) बोला।

‘जी‘

‘आपने अपने अकाउंट स्टेटमेंट को चेक नहीं किया ‘

‘जी मैं समझा नहीं’ प्रोफेसर मीणा थोड़ा असहज होते हुए बोले।

‘सर आपके अकाउंट में जयेश के अकाउंट से पच्चीस लाख रुपए ट्रांसफर हुए हैं’ राजवीर बेहद गंभीर और सख्त लहजे में बोला।

नरेंद्र मीणा की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी।

‘सर मुझे माफ़ कर दीजिये। मुझे मेरी पत्नी के इलाज के लिए पैसे चाहिए थे और जयेश ने कहा वो इंतजाम कर देगा यदि मैं उसे लंदन जाने का रिकमेन्डेशन दे दूँ।’ प्रोफेसर मीणा गिड़गिड़ाते हुए बोले।

शायद यदि प्रोफेसर मीणा इंस्पेक्टर राजवीर के सामने होते तो वो राजवीर के पैर ही पकड़ लेते।

‘तो क्या जयेश लंदन में है’ राजवीर ने पूछा।

‘मैंने उसे लंदन का रिकमेन्डेशन दिया था’ नरेंद्र मीणा बोला।

‘प्रोफेसर साहब यदि आप चाहते है कि मैं आपके खिलाफ कंप्लेंट नहीं करु तो साफ़ साफ़ बताईये। मुझे आपकी नौकरी खाने में कोई इंटरेस्ट नहीं है’ राजवीर बेहद गुस्से में बोला।

‘इंस्पेक्टर साहब जयेश लंदन में दो दिन रहा फिर वो वापस इंडिया आ गया’ मीणा बोला।

‘फिर उसकी लंदन में रिसर्च की अटेंडेंस’ राजवीर बोला।

‘वो मैं डमी लगवा देता हूँ। जब तक कोई लंदन जाकर चेक नहीं करेगा या इमीग्रेशन से चेक नहीं करेगा पता नहीं चलेगा की जयेश लंदन में नहीं है’ मीणा बोला।

‘आपने उसकी काफी मदद कर दी है’ राजवीर सरकास्टिकली (sarcastically) बोला।

मीणा चुप ही रहा।

‘जयेश लंदन से इंडिया कब आया’ राजवीर ने पूछा।

‘मैं आपको चेक करके डेट्स मैसेज कर देता हूँ’

‘ठीक है प्रोफेसर मीणा। आप मेरा नंबर सेव कर लीजिये कुछ और बात हुई तो मैं फोन करूँगा’ राजवीर ने बोला और फोन काट दिया।

राजवीर ने जयेश के बैंक एकाउंट्स स्टेटमेंट चेक करवा लिए थे और इससे उसे बहुत फायदा मिला था। प्रोफेसर मीणा का नाम उसे दिल्ली के वार्डन से मिला था और बैंक अकाउंट स्टेटमेंट से साफ़ था कि प्रोफेसर मीणा ने जयेश से 25 लाख रुपए लिए थे।

इधर राजवीर के फोन पर प्रोफेसर मीणा का मैसेज आ गया था। वो शायद ज्यादा ही घबरा गए थे और पूरी तरह से कोआपरेट (COOPERATE) कर रहे थे। इतनी जल्दी उनसे रिवर्ट की उम्मीद राजवीर ने भी नहीं की थी।

राजवीर ने मैसेज पढ़ा और डेट्स पर ध्यान दिया। राजन शर्मा की लाश जिस दिन गायब हुई थी उसके अगले दिन ही जयेश लंदन चला गया

था और मात्र दो दिन बाद ही वापस इंडिया आ गया था। राजवीर का शक सही था। जयेश इंडिया वापस आया, अमरीक ने क्राई ज्वाइन कर लिया। ये दोनों मिलकर एक बहुत बड़े षड़यंत्र को अंजाम दे रहे थे ।

कोई भी राजन शर्मा के बेटे के बारे में पता करेगा तो वो लंदन में था। उसे शायद राजन शर्मा के खून के बारे में पता भी नहीं था। परफेक्ट ऐलिबी थी।

नरेंद्र मीणा से बात करके राजवीर को काफी कुछ क्लैरिटी मिल गई थी। जब से राजवीर दिल्ली होकर आया है उसे इस केस के सिलसिले में अनेकों जानकारी मिल रही थी। राजवीर राजन शर्मा के घर को अच्छे से खंगाल रहा था। राजवीर को इस घर में कोई भी ऐसे चीज नहीं मिली थी जिससे उसे कोई क्लू मिल सके।

राजवीर ने फिर राजन शर्मा की स्टडी की ओर रुख किया। उसने देखा वो रूम बिखरा हुआ था। इसका मतलब जब राजन शर्मा यहाँ कुछ काम कर रहा होगा उस पर कोई हमला हुआ। परन्तु जितना राजवीर को याद था उस हिसाब से राजन शर्मा की हत्या बहुत तेज भागने से हुई थी। राजवीर ने स्टडी से ड्राइंग रूम तक नज़र घुमाई। राजवीर ने देखा ड्राइंग रूम की खिड़की का शीशा थोड़ा टुटा हुआ है जैसे कोई आदमी इस खिड़की से कूद कर भागा हो। राजवीर खुद भी उस खिड़की से बाहर निकला और बाहर मैन गार्डन में आ गया। राजन शर्मा का मकान ग्राउंड फ्लोर पर था। हालाँकि वो छोटी सी सोसाइटी थी और अपार्टमेंट पांच फ्लोर का था।

राजन शर्मा पर हमला हुआ होगा और शायद वो इस खिड़की से कूद कर बाहर भागा होगा। राजवीर सोच में पड़ गया। तभी उसे ड्राइंग रूम के सोफे के नीचे कुछ दिखा।

राजवीर खिड़की से ही फिर से अंदर आ गया और सोफे को हटा कर उसने उस चीज को देखा जिसने उसका ध्यान आकर्षित किया था। दो छोटी छोटी वाइल थी जैसे छोटी दवाई की शीशी हो जिसमे होमोएपेथी मेडिसिन ली जाती है। राजवीर ने उन दो छोटी शिशियों को देखा। उन पर टेट्रोडोटोक्सिन और बूफोटोक्सिन लिखा हुआ था। वो दोनों शीशियां खाली थी। परन्तु उनमे कुछ बुँदे लगी हुई थी।

फॉरेंसिक के लिए इतना काफी रहेगा। राजवीर ने सोचा। उसने उन दोनों शिशियों की फोटो खेंची और कुंवर को भेज दी।

वो अभी बाकि मकान को देख ही रहा था कि कुंवर का फोन आ गया।

‘यस कुंवर’

‘सर आपने ये क्या भेजा है ‘

‘तुम ये अपने फॉरेंसिक के एक्सपर्ट को भेजो और पूछो ये टेट्रोडोटोक्सिन और बूफोटोक्सिन क्या होता है। मैं तुम्हें ये शीशियां दे दूंगा तुम इन्हे भी अपने फॉरेंसिक एक्सपर्ट को दे देना ताकि वो चेक कर सके कि इन शिशियों में यही दोनों ड्रग्स है जिनका नाम लिखा हुआ है।’

‘ठीक है सर आप दे देना, मैं करवा दूंगा‘

‘और वो श्रद्धा की पोस्टमॉर्टेम हो गयी‘

‘हाँ सर। परन्तु एक अजीब सी बात मालूम पड़ी है‘

‘क्या कुंवर‘ राजवीर बोला। उसे वैसे भी कुछ पूर्वाभास हो गया था कि श्रद्धा कुछ ऐसा जानती थी जो और कोई नहीं।

‘श्रद्धा को कैंसर था परन्तु फिर भी वो बिलकुल नार्मल जैसे रहती थी ‘

‘क्या ?’ राजवीर चौंका। ‘उसे कैंसर कब से था‘

‘सर हमारे डॉक्टर भी कंफ्यूज है। वो कह रहे हैं कि श्रद्धा को पिछले एक साल से कैंसर था परन्तु वो जैसे का वैसा ही रहा और ऐसा लग रहा था कि उसे कोई ऐसी दवाई मिल रही थी जिसका पता हमारे डॉक्टर्स को नहीं चल रहा।’

राजवीर सोच में पड़ गया। इसका मतलब श्रद्धा को राजन शर्मा ने कैंसर का क्योर दे दिया था। श्रद्धा वास्को के लिए नहीं अपितु राजन शर्मा के लिए ही काम कर रही थी। राजन शर्मा को उसने अपने हुस्न के माया जाल में नहीं बल्कि राजन शर्मा ने श्रद्धा को अपने इशारे पर नचा रखा था। क्योंकि वो श्रद्धा को उतनी ही मात्रा में दवाई देता जितनी उसे जिन्दा रखने के लिए काफी थी।

‘सर क्या हुआ‘ कुंवर फोन पर चीखते हुए बोला।

राजवीर को अहसास हुआ कि कुंवर अभी फोन पर है। ‘तुम ऐसा करो कुंवर फॉरेंसिक टीम को राजन शर्मा के घर भेज दो।’

‘ओके सर’

राजवीर ने फोन काट दिया।

इसका मतलब श्रद्धा वास्को के कहने पर भले ही राजन शर्मा के यहाँ आयी हो परन्तु वो जल्द ही राजन शर्मा पर डिपेंडेंट हो गयी। राजन शर्मा श्रद्धा के जरिये गेम खेल रहा था। परन्तु गेम था क्या ? ये पहेली उलझती जा रही थी।

और सबसे मुख्य प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिल रहा था कि आखिरकार राजन शर्मा की हत्या किसने की?

राजवीर इन्ही सब ख्यालो में उलझा हुआ था कि उसे रामलाल का फोन आया।

‘गुड मॉर्निंग सर‘

‘हाँ रामलाल बोलो‘

‘सर मैंने वास्को और माधव सर कि बात रिकॉर्ड कर ली है। आपके साथ शेयर कर दूँ’

‘क्या। वास्को और माधव सर की बात। तुमने कैसे रिकॉर्ड कर ली।’ राजवीर को आश्चर्य हुआ।

‘बस सर हम छोटे लोग हैं परन्तु कभी कभी बड़े काम कर देते हैं। आप बोलो तो मैं लिंक भेजू। आपने कहा था न कि माधव सर पर नज़र रखूं‘

‘क्या बात है रामलाल तुमने तो कमाल कर दिया। भेजो लिंक’

राजवीर हर्षित हो गया था। रामलाल ने वाकई बहुत अच्छा काम कर दिया था। थोड़ी देर में राजवीर के फोन पर व्हाट्सप्प मैसेज आ गया। राजवीर ने उस लिंक पर क्लिक कर दिया जो रामलाल ने भेजा था। उसमे वास्को और माधव की बातचीत थी। माधव को वास्को बोल रहा था – 'जो बोला गया है वो करो और अपना दाम ले जाओ।' परन्तु वास्को माधव को क्या करने के लिए बोल रहा था। इस बातचीत से तो ज्यादा कुछ क्लियर नहीं हो रहा था।

खैर रामलाल आखिर एक ड्राइवर था और उसने इतनी रिकॉर्डिंग कर ली वो ही बहुत बड़ी बात थी। राजवीर ने फोन जेब में रखा और राजन शर्मा के घर की तहकीकात में लग गया। राजवीर को पता ही नहीं चला की रामलाल उसके साथ कितना बड़ा गेम खेल गया था।

रामलाल उस वक्त माधव के केबिन में बैठा था।

'सर अपने जो बोला वो लिंक दे दिया' रामलाल बोला।

'हाँ' माधव बहुत ही कुटिलता पूर्वक बोला।

माधव अपने लैपटॉप की स्क्रीन पर देख रहा था। 'तुमने बहुत अच्छा काम किया रामलाल। तुम्हारी नौकरी बच गयी। तुम जा सकते हो'

रामलाल ने माधव को सैलूट मारा और वहाँ से निकल गया। रामलाल को नहीं पता था कि उसने राजवीर का फ़ोन हैक करवा दिया था और अब माधव अपने पर्सनल लैपटॉप पर न सिर्फ राजवीर का फोन सुन सकता था अपितु उस फोन की सारी डिटेल्स चेक कर सकता था और

अपने ऑफिस में बैठे बैठे ही राजवीर के फोन का माइक और कैमरा ऑन करके सब कुछ सुन और देख सकता था।

राजवीर अब माधव के हाथो की कठपुतली बन गया था।

माधव आखिर चाहता क्या था? राजवीर को नहीं पता था। परन्तु ये खतरनाक खेल अब अपने बेहद रक्तरंजित पड़ाव पर जा रहा था जहाँ पल पल में गेम पलट सकता था। कौन किसका सगा और कौन किसे धोका देगा कहना मुश्किल था। रामलाल जिसे राजवीर ट्रस्ट करता था उसने राजवीर को इतना बड़ा धोका दिया था।

अध्याय 28

प्रथमेश बेतहशा अपने घर में भागा चला आया था। उसकी पत्नी और उसका बेटा भी आ चुके थे। प्रथमेश ने उन दोनों को हग किया और अपने कमरे में ऊपर फर्स्ट फ्लोर पर चला गया। उसने वहाँ अपना एक ऑफिस बना रखा था। प्रथमेश ने तुरंत ही किसी को अपने दूसरे सिक्योर फ़ोन से फोन किया। उस रहस्यमय व्यक्ति ने फोन उठा लिया।

'सर मैं फस चुका हूँ।' प्रथमेश गिड़गिड़ाते हुए बोला।

'तुम ज्यादा सोच रहे हो।' सामने से आवाज़ आयी।

'नहीं सर। आपको मेरी मदद करनी होगी। वो कालिया गैंग को आपके ही कहने पर मैंने अमरीक को मारने भेजा था।'

'मुर्ख' सामने से बहुत तल्ख़ लहजे में आवाज़ आयी।

प्रथमेश घबरा गया।

'तुम्हें क्या परेशानी है वो बोलो बस।' सामने वाले ने अपने लहजे में थोड़ी ढिलाई देते हुए कहा।

'सर कालिया गैंग को अमरीक नहीं मिला। उस मुर्ख रेनू के बहकावे में मैंने कालिया गैंग को अमरीक का पता बता दिया, परन्तु मुझे पता है अमरीक बहुत शातिर है। वो कालिया गैंग के हाथ नहीं आएगा और कालिया गैंग मुझसे अपने लोगों की मौत का बदला लेगा।'

प्रथमेश रोने लग गया। उसे अपनी पत्नी और पुत्र ही दिख रहे थे।

‘तुम्हें लगता है मुंबई के इतने बड़े माफिया को एक अदना सा इंटर्न चुनौती दे सकता है।’ सामने वाले ने अपने लहजे में थोड़ी सी नरमी लायी।

‘सर’ प्रथमेश अपने आंसू पौंछते हुए बोला, ‘मुझे अमरीक से कोई डील नहीं करनी। मैं बस चाहता हूँ की मेरा इन सब से पीछा छूट जाये।’

‘और तुम्हारा साथी अभिषेक उसकी मौत को भूल गए। सत्या को भी। उनकी मौत तुम्हारे सर पर ही है।’

‘सर उस समय मुझे नहीं पता था कि अमरीक इतना खतरनाक है। मुझे लगा एक अदना सा इंटर्न ही तो है। परन्तु अब मैं समझ गया हूँ वो कोई बहुत बड़ा खिलाडी है। मैं उससे पार नहीं पा सकता। प्लीज मेरी मदद कीजिये।’

‘मुझसे क्या चाहते हो’

‘बस इतना सर की कालिया गैंग मुझे कुछ नुक्सान नहीं पहुंचाए।’ प्रथमेश एक सांस में बोल गया।

‘ठीक है। हो जायेगा।’

‘थैंक यू सर।’

‘एक काम करो तुम मेरा।’

‘क्या सर’

‘उस सावित्री से पूछो अभिषेक का वो ड्राइवर कौन था।’

‘अभिषेक का ड्राइवर ’ प्रथमेश चौंका।

‘हाँ। इंस्पेक्टर राजवीर ने अभिषेक की बिल्डिंग में लगी CCTV फुटेज चेक की थी। जिस दिन अभिषेक मारा गया कोई ड्राइवर अभिषेक के साथ था।’

‘परन्तु सर अभिषेक तो खुद ड्राइव करता था।’

‘मुर्ख। तुझे जो कह रहा हूँ वो कर। बस।’ सामने वाले ने इर्रिटेट होते हुए बोला।

‘ठीक है सर। मैं सावित्री को बुला लेता हूँ। और उससे पूछ भी लेता हूँ।’

‘और उस रेनू को बोल ऋतू पर नज़र रखे। ऋतू के घर में अमरीक के होने का शक था न।’

‘परन्तु सर अमरीक वहाँ नहीं था। मुझे खुद कालिया ने बताया वो किसी विरार में .....’

‘मुर्ख प्रथमेश।’ सामने वाला बीच में ही चीखा। ‘जो बोलता हूँ वो किया कर। अपना दिमाग मत लगाया कर।’

‘जी सर‘

सामने वाले ने फोन काट दिया। प्रथमेश की सांस में अब थोड़ी सांस आ गयी थी। उसे डर लग रहा था कि कहीं कालिया गैंग अमरीक को नहीं ढूंढ पाया तो उसे ही नहीं मार डाले। वो एक बिज़नेसमैन था कोई माफिया नहीं। वो तो कालिया गैंग को जानता भी नहीं था। उसके इस

रहस्यमय मददगार ने ही उसे कालिया गैंग को सुपारी देने के लिए कहा था।

राजन शर्मा जिस दिन मरा था उसी दिन से चीजे बिगड़ गयी थी। राजन शर्मा की रिसर्च पूरी हो गयी थी। प्रथमेश और वास्को दोनों ही उसे पैसे देने के लिए तैयार थे। वास्को शायद पिछली बार की तरह बाज़ी मारने ही वाला था कि राजन शर्मा मर गया था। फिर भी किसी तरह अभिषेक ने उसकी वो किताब ओरिएट ओबिलिस्क हासिल कर ली थी। परन्तु अभिषेक ने कभी भी प्रथमेश को खुल कर कुछ नहीं बताया था।

अभिषेक के विचार से प्रथमेश को याद आया उस रहस्यमय मददगार ने अभिषेक के ड्राइवर का पता करने के लिए कहा।

ये कौन ड्राइवर आ गया।

प्रथमेश यह सोचते हुए सावित्री को फोन लगता है।

'हेलो' सावित्री बोली।

'सावित्री तुम मेरे घर आ सकती हो क्या।' प्रथमेश एक टक आवाज़ में बोला।

'इस समय' सावित्री ने अपनी घडी देखी और बोली। उस समय श्याम के चार बज रहे थे।

'हाँ'

'ठीक है। आधे घंटे में तुम्हारे घर पर आ जाउंगी।' सावित्री ने कहा और फोन काट दिया।

इधर उस रहयस्यमय मददगार ने प्रथमेश के सिक्योर फोन पर वो CCTV फुटेज भेज दिए थे जो इंस्पेक्टर राजवीर ने अभिषेक की बिल्डिंग से लिए थे जब अभिषेक की हत्या कर दी गयी थी।

सावित्री जल्द ही प्रथमेश के घर पहुँच गयी थी। प्रथमेश की पत्नी ने दरवाजा खोला। हालाँकि वहाँ कई नौकर और हाउस हेल्प थे। परन्तु अपने मोबाइल पर जो मैन डोर के कैमरे से कनेक्टेड था, प्रथमेश की बीबी ने सावित्री को उनके घर आते हुए देख लिया था।

'हाय सावित्री' प्रथमेश कि पत्नी बोली।

'हाय। मुझे प्रथमेश ने फोन करके बुलाया है। वो शायद कुछ चिंतित लग रहा था।' सावित्री बोली।

'हाँ। मुझे भी कुछ तो अजीब लगा। मैं इतने दिनों बाद आयी परन्तु उसने मुझसे कुछ बात ही नहीं की।'

'कोई बात नहीं। मैं देखती हूँ, माजरा क्या है। वो कहाँ है।' सावित्री बोली।

प्रथमेश की पत्नी ने हाथ से इशारा कर के सावित्री को बता दिया था कि प्रथमेश फर्स्ट फ्लोर पर अपने ऑफिस में है।

प्रथमेश की पत्नी सावित्री को धीरे धीरे सीढ़ियों से ऊपर जाते देख रही थी। इतनी सज धज के आयी है ये। ब्लू विस्कोस शिफॉन की प्रिंटेड साडी, हील वाली सैंडल, परफ्यूम वो भी वर्साचे ब्राइट का क्रिस्टल वुमन

जो दूर से ही महक रहा था। इसे देख कर कौन कह सकता था कि इसके पति की मौत की तेरवीं भी नहीं हुई थी।

शायद वो ऐसी औरतो को अपने पति से सामान्य तौर पर मिलने भी न दे। परन्तु उसका पति प्रथमेश कुछ ज्यादा ही चिंतित लग रहा था। इसलिए उसकी पत्नी ने बिना कुछ बोले चुपचाप अपने कमरे में जाने का फैसला किया।

‘हाय प्रथमेश। क्या आग लग गयी है।’ सावित्री ने प्रथमेश को हग करते हुए कहा।

प्रथमेश ने अपने मैकबुक एयर लैपटॉप को सावित्री की तरफ घुमाया और बोला। ‘ये देख रही हो।’

‘हाँ उस दिन का फुटेज है जिस दिन मेरा प्यारा पति मारा गया था, उस ब्लडी अमरीक के हाथों।’ सावित्री भावहीन स्वर में बोली।

‘ये ड्राइवर कौन है।’ प्रथमेश ने फुटेज को पॉज करते हुए अपनी ऊँगली से इशारा करते हुए कहा।

उसमे एक ड्राइवर के कपडे पहने व्यक्ति अमरीक के मैनगेट के बाहर था और अभिषेक सब कॉम्पैक्ट पिस्तौल की नौक पर अमरीक को अपने घर में ले जा रहा था।

‘पता नहीं। पहले कभी देखा नहीं। और इसका चेहरा भी कुछ साफ़ नहीं दिख रहा।’

‘ध्यान से देखो सावित्री।’ प्रथमेश ने जोर देकर कहा।

‘उहूँ ; नहीं कुछ समझ नहीं आ रहा।‘

‘इसका मतलब ये जो भी है इसका अभिषेक के कत्ल से कोई कनेक्शन है‘ प्रथमेश ने कहा।

‘परन्तु फुटेज देख कर तो लगता है अभिषेक ही उस ड्राइवर को जानबूझ कर अपने साथ लाया है।‘

‘हाँ सावित्री। यह ही तो पहेली है। उस दिन अभिषेक ने मुझे फोन किया। मुझे कहा कि वो अमरीक से पता कर रहा है कि उसका प्लान क्या है। उसने क्यों सत्या को मारा। परन्तु वो मुर्ख उसे अपने घर ले गया। तुम उस समय अपने मायके गयी हुई थी।’

‘हाँ वो मुझे पता है।’

‘ये ड्राइवर कौन है‘ प्रथमेश सोच में पड़ गया। उस ड्राइवर का चेहरा बिलकुल भी साफ़ नहीं दिख रहा था। उसकी टोपी कुछ इस तरह से आडी लगी हुई थी की वो उसके चेहरे को ढक रही थी। क्या उस ड्राइवर को पता था कि CCTV कहाँ कहाँ है और उसने जानबूझ कर अपनी टोपी को इस तरह से लगाया कि उसका चेहरा नहीं दिखे।

‘प्रथमेश’ सावित्री उस ड्राइवर की CCTV फुटेज देखते हुए बोली। ‘तुम बोलो तो मै एक काम कर सकती हूँ।’

‘क्या‘

‘मै अपनी बिल्डिंग में मेरे टावर के सिक्योरिटी गार्ड से पूछ सकती हूँ। क्योंकि ये रेगुलर ड्राइवर नहीं था तो हो सकता है उसने इस ड्राइवर की कोई एंट्री करवाई हो।’

‘परन्तु सावित्री ऐसा होता तो पुलिस को पता चल जाता।’

‘हो सकता है पुलिस ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया हो। हालाँकि जितना मुझे याद है उस इंस्पेक्टर ने मुझसे ड्राइवर के बारे में पूछा तो था।’

‘ठीक है। तुम पता करो।’

सावित्री ने हामी में सर हिला दिया। वो प्रथमेश के कमरे से जाने लगी। फिर रुकी और बोली, ’प्रथमेश, तुम थोड़े पैसे मेरे अकाउंट में ट्रांसफर दो।’

‘अरे तुम्हें पैसे की क्या जरुरत पड़ गयी।’

‘वो अभिषेक के मरने के बाद मुझे पैसे तो मिलेंगे नहीं।’

‘तुम्हें इन्शुरन्स से पैसे मिल जायेंगे। किसी भी कारण से हमारे किसी भी सीनियर एम्प्लोयी की मौत होती है तो उसकी सालाना सैलरी का तीन गुना पैसा मिल जाता है।’

सावित्री के चेहरे पर हल्की सी ख़ुशी आ गयी। ‘ठीक है।’

वो वहाँ से जल्दी ही निकल गयी।

ये क्या औरत है ? प्रथमेश भी सोच में पड़ गया। इसे अपने पति की मौत का बिलकुल भी गम नहीं है। इसे सिर्फ पैसे चाहिए।

खैर प्रथमेश को इससे ज्यादा मतलब नहीं था। वो उस रहेसमय ड्राइवर के बारे में सोचने लग गया।

प्रथमेश को नहीं पता था कि खेल अब बेहद खूंखार हो चुका था। कुछ ही दिनों में वो सब कुछ होने वाला था जिसकी किसी ने भी कल्पना भी नहीं की थी।

अध्याय 29

‘यह क्या कह रहे हो तुम ?’ राजवीर बेहद ही आश्चर्य से बोला।

राजवीर उस मेडिकल एक्सपर्ट के केबिन में बैठा हुआ था। सुबह के ग्यारह बज रहे थे। उस मेडिकल डॉक्टर ने प्रो राजन शर्मा के घर से आयी उन दो वाईल की शीशियों की जाँच कर ली थी जो पिछली शाम को उसके पास आयी थी।

राजवीर उस डॉक्टर के लैपटॉप की स्क्रीन पर देख रहा था।

‘सर मैं सही कह रहा हूँ। इन दोनों दवाइयों के मिश्रण से कोई भी आदमी अपनी मौत को दस से ग्यारह घंटों के लिए फेक कर सकता है‘ उस मेडिकल एक्सपर्ट ने बिलकुल ही भाव हीन स्वर में बोला।

राजवीर सोच में पड़ गया। इसका मतलब राजन शर्मा मरा ही नहीं था। उसने अपनी मौत को फेक किया था। ताकि वास्को आदि सभी को लगे की वो मर गया था। परन्तु उसने ऐसा क्यों किया था। ये पूरा खेल राजन शर्मा का ही रचा हुआ था।

‘क्या हुआ सर‘ उस मेडिकल एक्सपर्ट ने राजवीर को देखा और पूछा।

‘कुछ नहीं‘ तुम एक बात बताओ।

‘जी सर‘

‘इस बात में कितनी रिस्क है। कहीं इन दवाइयों को लेने से कोई आदमी सच में मर गया तो‘

‘सर इसकी संभावना फिफ्टी फिफ्टी ही है। कोई बहुत मजबूर न हो तो ऐसा रिस्क नहीं लेगा। इसमें जान जाने का खतरा बहुत ज्यादा है।’

‘इसका मतलब फिफ्टी परसेंट चांस है की वो सच में भी मर जाये।’

‘जी सर‘

‘फिर तो कोई ये रिस्क क्यों ही लेगा‘ राजवीर ने अनायास ही बोल दिया।

‘सर ये तो मैं नहीं कह सकता‘ वो मेडिकल एक्सपर्ट थोड़ा असहज होते हुए बोला।

राजवीर सोच में पड़ गया। राजन शर्मा ने इतना बड़ा खतरा क्यों उठाया। अपनी मौत को वो फेक क्यों करेगा। आखिर ये सारा माजरा था क्या ?

‘ठीक है। और कुछ जो तुम्हें कल रात उस घर से मिला हो। जो मेरे लिए जानना जरुरी हो।’

‘सर बाकि तो कुछ भी ख़ास नहीं। परन्तु उस घर में कोई भी इलेक्ट्रॉनिक ट्रेस नहीं था।’

‘मतलब‘ राजवीर ने विस्मय से बोला।

‘मतलब यह सर, की उस घर में वाई फाई नहीं था, न ही किसी और प्रकार की कोई इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस मिली, जैसे लैपटॉप, मोबाइल आदि’

‘समझ गया।’ राजवीर ये सब चीजे जल्दी ही समझ जाता था।

राजवीर ने फॉरेन अपने एक दोस्त इंस्पेक्टर को फोन लगाया और बोला, ‘मुझे राजन शर्मा के घर से क्या क्या सामान मिला था, उसकी लिस्ट चाहिए ‘

‘सर हमने कोई इन्वेस्टीगेशन की ही नहीं। इसलिए कुछ सीज़ ही नहीं किया वहाँ से। ‘

‘क्यों’

‘क्योंकि राजन शर्मा मरा था ये सिर्फ माधव सर ने आपको बताया। आप ही गए थे उस हॉस्पिटल उसकी लाश को देखने। उसके बाद हमें लगा आप ही वो इन्वेस्टीगेशन करेंगे। हमने सिर्फ राजन शर्मा का घर सीज किया।‘

राजवीर ने फोन काट दिया। इसका मतलब राजन शर्मा के घर पर पुलिस ने कोई पंचनामा बनाया ही नहीं। माधव सर ने इस केस को इतने हल्के में क्यों लिया। राजवीर को माधव पर शक होने लगा था।

माधव ने राजवीर को लाश के बारे में बताया था परन्तु वो लाश तो अगले ही दिन गायब हो गयी थी। राजवीर को कुछ भी इन्वेस्टीगेट करने का मौका ही नहीं मिला था। और उसके बाद उसे अमरीक ने ही अनेकों खून

करके बिजी रखा था। राजवीर को किसी बहुत बड़े षड़यंत्र का पूर्वाभास हो गया था। राजन शर्मा या तो मरा नहीं था या फिर उसे मारने की कोशिश की गयी परन्तु उसे बचाने के लिए किसी ने उसे वो दोनों दवाइयां दे दी। ताकि उसके कातिल को लगे की वो मर गया परन्तु वो मरा नहीं और उसे हॉस्पिटल से गायब करके बचा लिया गया हो।

माधव ने क्या इसलिए तो राजन शर्मा की हत्या पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वो भी इस खेल में मिला हुआ था। राजवीर का माथा घूमे जा रहा था। ये पहेली सुलझने का नाम ही नहीं ले रही थी। जितना राजवीर इसे सुलझाने की कोशिश करता ये उतनी ही उलझती ही जा रही थी।

क्या राजन शर्मा को बचा लिया गया ? क्योंकि राजन शर्मा खुद से तो ऐसी कोई कोशिश नहीं करेगा। ये जरूर हो सकता है की कोई उसे मारने वाला था परन्तु उसे ये दोनों ड्रग्स दे दिए गए। ताकि उसके कातिल को लगे की वो मर गया और उसे छोड़ के चला जाये और फिर उसे बचाया जा सके।

राजवीर ने मेडिकल एक्सपर्ट को थैंक्स बोला और उस फॉरेंसिक लैब से निकल गया। वो अपनी पुलिस कार महिंद्रा थार में आकर बैठ गया। उसके दिमाग में अभी भी राजन शर्मा की हत्या ही चल रही थी। आखिर ये सब क्या षड़यंत्र था? कहीं श्रद्धा उसे इन्ही सब से ही सम्बंधित कुछ बताने वाली तो नहीं थी। इसलिए श्रद्धा की हत्या करा दी गयी हो।

राजवीर ने आंखे बंद कर ली। उसकी कार अभी पार्किंग में ही थी। वो सोचने लगा की किन किन लोगों की हत्या अब तक हुई, जो इस केस से सम्बंधित थे। पहली हत्या थी राजन शर्मा की, उसके बाद सत्या - क्राई का स्टोर मैनेजर, उसके बाद कालिया गैंग के लोगों की हत्या और अभिषेक। इन सबकी हत्या का संदेह था अमरीक पर और श्रद्धा को राजवीर के सामने किसी ट्रक ने कुचला जिसका कुछ पता नहीं चल पाया था।

परन्तु ये सब लोग वो थे जो वास्को के खिलाफ थे। वास्को को इन सबकी मौत से फायदा हुआ। और माधव भी अमरीक को मरवाना चाहता है बस। वो वास्को के साथ पूरी तरह से मिला हुआ था।

ये सारा खेल शायद वास्को ही खेल रहा था। परन्तु वास्को चाहता क्या था ? आखिरकार क्या था ये गेम?

यदि राजन शर्मा की रिसर्च पूरी हो गयी थी, और राजन शर्मा अपनी रिसर्च बेचना चाहता था तो उसकी हत्या क्यों हुई। और यदि उसने अपनी खुद की मौत को फेक किया तो क्यों ? और यदि कोई उसे मारना चाहता था और उसने बचने के लिए अपनी मौत फेक की थी, तो वो हैं कहाँ। उसने अब तक पुलिस की मदद क्यों नहीं ली।

राजवीर ने कुंवर को फोन लगाया और बोला 'कुंवर क्या किसी भी पुलिस स्टेशन में राजन शर्मा नामक किसी ने कोई पुलिस प्रोटेक्शन माँगा है।'

‘राजन शर्मा, सर वो तो मर गया है न‘ कुंवर आश्चर्य से बोला।

‘जितना बोला है पता करो बस‘

‘ओके सर‘

राजवीर फोन काटने ही वाला था कि उसे कुछ अजीब सी आवाज़ आयी। उसने फॉरेन अपने फोन की स्क्रीन को देखा; एक पल के लिए उसे लगा की कोई एप अभी अभी बंद हुई। यह कौनसी एप थी। राजवीर को कुछ शक हो गया।

इधर माधव अपने केबिन में बैठा था और राजवीर की सभी बातें जो उसने उस मेडिकल एक्सपर्ट से की थी और फिर कुंवर से उसने सब सुन लिया था। माधव के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आ गयी। रामलाल ड्राइवर ने उसके लिए बहुत बड़ा काम कर दिया था।

राजवीर को शक भी नहीं हुआ और रामलाल ने राजवीर का फोन हैक करवा दिया था।

माधव भी सोच में पड़ गया था, क्या ये राजन शर्मा जिन्दा है? तो वो हैं कहाँ। और क्यों छुपा हुआ था।

माधव को अपने पत्ते अच्छे से खेलने पड़ेंगे।

माधव ने तुरंत ही अपनी डेस्क के आगे वाले ड्रावर में से एक नोकिआ 2660 फ्लिप फोन निकला। वो फोन स्मार्ट फोन नहीं था इसलिए हैक नहीं हो सकता था। उसने उस फोन से किसी को फोन लगाया।

‘तुम फॉरेन ही वास्को से मिलो और डील कर लो‘

शायद सामने वाले ने कुछ बोलने की कोशिश की होगी, तभी माधव चिल्लाया 'जो बोला है करो' और उसने फोन रख दिया।

फिर माधव ने अपने ऑफिसियल फोन से राजवीर को फोन लगाया।

'यस सर'

'राजवीर तुम्हें कहा था उस खुनी अमरीक को पकड़ो। क्या प्रोग्रेस है'

'सर बस कुछ दिन और दीजिये'

'राजवीर तुम्हारे जैसे सेलेब्रेटेड अफसर से ये उम्मीद नहीं है। तुम्हारे पास अड़तालीस घंटे है'

माधव ने फोन काट दिया और अपनी कुटिल मुस्कान लिए अपनी सीट पर आराम से पीछे होकर बैठ गया।

राजवीर ने अपनी गाड़ी स्टार्ट की और पुलिस स्टेशन की तरफ निकल गया। वो पूरी तरह से कन्फ्यूज्ड था। उसे इस षड़यंत्र का पर्दा फाश करना था। परन्तु उसे सबसे पहले उस इंटर्न अमरीक को पकड़ना भी था।

वो इंटर्न कहा हो सकता था। राजवीर ने अपनी गाड़ी पुलिस स्टेशन के बजाये क्राई की तरफ घुमा दी थी।

कुछ ही देर में राजवीर रेनू के फ्रंट डेस्क के सामने खड़ा था।

रेनू राजवीर को वहाँ अचानक देख कर कुछ ज्यादा ही घबरा गयी थी। और उसने वो ही एक गलती कर दी थी। राजवीर एक्सपर्ट इन्वेस्टिगेटर

था और वो हाव भाव में छोटी से छोटी हलचल को पहचान लेता था। उससे ये नहीं छुपा की रेनू असहज हो चुकी थी, और ये कोई सामान्य असहजता नहीं थी अपितु जब आप कुछ झूठ बोलते है तब होने वाली असहजता थी।

'तुम कुछ छुपा रही हो' राजवीर ने तल्ख़ अंदाज़ में बोला।

'नहीं' रेनू सकपकाते हुए बोली। 'कुछ भी तो नहीं।'

'ठीक है। फिर बताओ वो अमरीक यहाँ आया था।'

'नहीं सर'

'क्या में नरेश जी से या ऋतू मैडम से मिल सकता हूँ'

'सर वो दोनों अभी किसी मीटिंग में है' रेनू जल्दी जल्दी बोली।

राजवीर समझ गया था कि रेनू उसे वहाँ से जल्द रवाना कर देना चाहती है। परन्तु क्यों?

रेनू ने तपाक से बोल दिया था कि ऋतू और नरेश मीटिंग में है बिना ये जानने की कोशिश किये कि क्या वो अभी राजवीर से मिल सकते थे भी या नहीं।

राजवीर समझ गया था कि रेनू कुछ तो छुपा रही थी। उस जैसे ट्रेंड अफसर से ये बातें नहीं छुपती थी।

'ठीक है मैडम। मैं फिर कभी आता हूँ' राजवीर बोला और रेनू के टेबल पर अपनी उँगलियों से टेप (tap) करता हुआ वहाँ से बाहर आ गया।

राजवीर ने तुरंत ही क्राई कि बिल्डिंग छोड़ दी और अपनी महिंद्रा थार में बैठ कर अपने एक मित्र के पास चला गया जो टेलीफोन की दुकान चलाता था।

उसने अपने दोस्त से एक नया फोन और टेम्पररी सिम कार्ड ले लिया। उसने फिर अपने जूनियर अफसर को फोन किया जिसने उसके लिए राजन शर्मा कि डिटेल्स ढूंढी थी। राजवीर ने अपने इस नए फोन से उसे फोन किया।

‘मैं इंस्पेक्टर राजवीर बोल रहा हूँ’

‘सर ये आपका कौनसा नंबर है’

‘वो छोडो। मुझे रेनू के फोन रिकाड्र्स की सारी डिटेल्स दो। उसका फोन नंबर मैं तुम्हें व्हाट्सप्प कर रहा हूँ। और किसी और को बताने कि जरुरत नहीं है’

‘ठीक है सर।’

राजवीर ने रेनू कि फोन की डिटेल्स दे दी।

जब तक राजवीर क्राई कि बिल्डिंग से अपने ऑफिस पहुँचता, उसके पास रेनू के फोन की सारी डिटेल्स आ गयी थी।

राजवीर उन्हें देखने लगा और एक नंबर ने उसका ध्यान आकर्षित कर दिया।

राजवीर के चेहरे पर मुस्कान आ गयी थी। उसने आखिर ऐसा क्या देख लिया था।

यह खेल अपने आखरी पड़ाव पर था। और अब अपने खुनी अंजाम पर पहुँचने को तैयार था।

अध्याय 30

‘ये साइबर अटैक कैसे हुआ है‘ वास्को चीखा। वो अपने केबिन में बैठा हुआ था। उसके सामने उसकी कंपनी के बेस्ट आईटी एक्सपर्ट भी थे, और उनका IT हेड भी।

तभी रेनू का फ्रंट डेस्क से वास्को के पास फोन आया।

‘हां रेनू‘ वास्को बहुत ही गुस्से भरे स्वर में बोला। उसने अपने आईटी के एक्सपर्ट्स की ओर निराशा भरे अंदाज़ में देखा। वो सभी क्लू लेस थे कि क्राई के सर्वर पर ये साइबर अटैक कैसे हो गया था।

‘सर इंस्पेक्टर राजवीर आये थे‘ रेनू घबराते हुए बोली।

‘उसे क्या चाहिए‘

‘सर वो नरेश सर और ऋतू मैडम के लिए पूछ रहे थे‘

‘उस मुर्ख को और कोई काम तो है नहीं, जब देखो तब क्राई चला आता है। ठीक है मैं माधव को बोलता हूँ। तुम उसे वहाँ से चलता करो‘

‘सर वो चले गए। मैंने कहा की नरेश सर और ऋतू मैडम मीटिंग में है‘

‘गुड जॉब रेनू।’

वास्को ने फोन काट दिया। उसने फिर अपने उन आईटी एक्सपर्ट को देखा जो पसीना पसीना हो रहे थे और अपने लैपटॉप पर लगे हुए थे।

इन मूर्खों के होते हुए भी ये साइबर अटैक हो गया था।

उसने निकम्मों की टीम पाल रखी थी। वास्को की सुर्ख आखों से वो आईटी एक्सपट्र्स जो शायद पच्चीस तीस वर्षीया लोग थे, वे ऐसे घबरा रहे थे मानो उन्हें किसी शेर के सामने निहत्ता खड़ा कर दिया गया हो। आईटी हेड उनको देख कर बोला, 'गो टू सर्वर रुम एंड चेक। वी विल मैनेज हियर (go to server room and check. We will manage here)।' सभी जूनियर लोग सर्वर रुम की ओर चले गए। उन्होंने वास्को की तरफ देखने की हिम्मत भी नहीं की। अब केवल आईटी हेड और उसके डिप्टी ही वहाँ पर थे।

इधर वास्को उन्हें देखने के बदले अपने सिक्योर फोन से माधव को फोन लगा रहा था।

फोन आंसर होते ही वास्को तल्ख़ लहजे में बोला, 'माधव तुम्हारा आदमी आया था'

'कौन राजवीर'

'हाँ'

'उसे तो मैंने अमरीक को ढूंढने के लिए लगा रखा है'

'तो उसे कहो अपना काम करे। अमरीक को ढूंढे और उसका काम तमाम कर दे'

'हो जायेगा'

'हो जाना चाहिए। वो भी जल्दी। याद रखो माधव मेरे पास सयम की कमी है'

वास्को ने फोन काट दिया।

माधव के लिए इतना इशारा काफी था। वास्को को पता था कि किससे कितनी देर बात करनी है।

‘मूर्खो क्या हुआ है। हम वर्ल्ड की बेस्ट फार्मा कंपनी है। हमारे ही सर्वर हैक हो जायेंगे तो क्या होगा।’ वास्को आईटी हेड और उसके डिप्टी पर चीखा।

वो दोनों बिना कुछ बोले अपने ही काम में लगे रहे।

तभी वहाँ ऋतू का फोन आया।

‘बोलो‘

‘सर मैं आपसे मिलना चाहती हूँ‘

‘क्या काम है‘

‘सर बहुत अर्जेंट है। वरना मैं आपको डायरेक्ट कॉल नहीं करती। आपकी सेक्रेटरी से अपॉइंटमेंट लेती’

‘ठीक है। आ जाओ मेरे केबिन में‘

वास्को ने इण्टरकॉम रख दिया।

‘सर ये साइबर अटैक बिलकुल कुछ अजीब सा है। हमें समझ नहीं आ रहा। इसने फाइनेंसियल डाटा को मिक्स अप कर दिया है‘ आईटी हेड बोला। वो अपने लैपटॉप पर ही देख रहा था।

‘मूर्खों क्या कहना चाहते हो साफ़ साफ़ कहो‘

उस आईटी हेड ने अपने लैपटॉप को वायरलेसली वास्को के 75 इंच के स्मार्ट टीवी से कनेक्ट किया और वास्को को दिखाया।

‘सर ये देखिये, कंपनी के फाइनेंसियल एकाउंट्स मिक्ड अप हो रहे है।’

वास्को ने अपने बड़े स्मार्ट स्क्रीन टीवी पर देखा जहाँ उस साइबर अटैक के कारण एक बग उनके ERP सिस्टम में आ गया था और वो सारे अकाउंट नंबर्स को किसी अननोन अकाउंट नंबर से चेंज कर रहा था।

वास्को ने गौर से देखा। वो बहुत ज्यादा स्मार्ट था। उसे एक मिनट भी नहीं लगा और वो पूरा गेम समझ गया। ‘इसका मतलब कोई हमारे ERP सिस्टम के साथ छेड़ छाड़ कर रहा है। हमारे कस्टमर या अन्य रीसीवेबल्स का पैसा हमारे अकाउंट में आने के बजाये किसी और के अकाउंट में जा रहा है‘

‘जी सर। और ये इंटरनल सिग्नल है‘

वास्को समझ गया कोई उसका अपना एम्प्लोयी ही उसके ERP में ऐसा बग डाल चुका था, जिससे क्राई के अकाउंट में पैसा आने के बजाये कहीं और जा रहा था। चूँकि क्राई का ERP सिस्टम बहुत स्ट्रांग था, इसलिए इस वायरस अटैक से फाइट करने के चक्कर में उस ERP सिस्टम ने पूरा IT नेटवर्क ही बैठा दिया था। परन्तु वायरस ने जो फाइनेंसियल अकाउंट चेंज कर दिए थे उसे ERP नहीं रोक पाया। क्लाइंट्स का पैसा अब क्राई में आने के बदले कहीं और ही जा रहा था।

क्राई को हर घंटे तक़रीबन दस करोड़ रुपए का रेवेन्यू आता था। यदि ये सिस्टम एक भी दिन ख़राब रहा तो 250 करोड़ रुपये का नुकसान क्राई को हो सकता था।

'इसे फॉरेन ठीक करो' वास्को चीखा।

तभी वहाँ ऋतू आ गयी।

वास्को के होश उड़े हुए थे और उसके आईटी एक्सपर्ट पूरी कोशिश में लगे हुए थे कि इस फाइनेंसियल लीकेज को रोका जाये।

वास्को ने ऋतू का आना नोटिस ही नहीं किया।

वो अपने एक्सपर्ट पर चीख रहा था, 'मेरा दस करोड़ हर घंटे का नुक्सान हो रहा है। जल्दी कुछ करो '

ऋतू ने वास्को को देखा और उन आईटी एक्सपर्ट्स को जो अपने अपने लैपटॉप में घुसे हुए थे।

'वास्को सर'

'ऋतू अभी मैं बिलकुल भी फ्री नहीं हूँ। जो भी है तुम नरेश से डिसकस कर लो और जो भी इशू है उसे ख़तम करो।'

वास्को ने अनमने ढंग से बोला और ऋतू को जाने का इशारा कर दिया।

'सर ये नरेश सर ने ही कराया है' ऋतू उस बड़ी स्क्रीन की तरफ, जहाँ वो साइबर अटैक की डिटेल्स डिस्प्ले हो रही थी, इशारा करते हुए बोली।

'क्या' वास्को चौंका। 'ऐसी बकवास के लिए मेरे पास समय नहीं है। तुम अपनी हद पार कर रही हो'

'सर नरेश सर कल अमरीक के चाय पकोड़े खा कर आये है, अब उसका बिल पे कर रहे है' ऋतू बहुत ही शातिराना ढंग से बोली।

'क्या'

वास्को ने ऋतू को खूंखार नज़र से देखा। वास्को को लग गया ऋतू सच बोल रही थी। उसके हाव भाव बिलकुल ही सामान्य थे।

'मैं समझा नहीं'

'सर मैं कल नरेश सर के साथ अमरीक से मिलने गयी थी'

'क्या'

'हाँ सर। अमरीक नरेश सर को ब्लैक मेल कर रहा था'

'नरेश को ब्लैक मेल'

'क्योंकि उनका अभिषेक की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध है'

'क्या' वास्को चौंका फिर आगे बोला 'तो इसका इस साइबर अटैक से क्या लेना देना'

'सर वो मुझे डायरेक्टली नहीं पता। परन्तु जब ये साइबर अटैक हुआ तो मुझे शक हुआ। मैंने नरेश सर के लैपटॉप की आई पी डिटेल्स चेक की'

'तुम कैसे कर सकती हो नरेश के लैपटॉप की आई पी डिटेल्स चेक'

‘सर मैंने उनका लैपटॉप हैक कर लिया था‘

‘क्या‘

‘सर मैं साइबर एक्सपर्ट हूँ। ये मेरे लिए कुछ मुश्किल काम नहीं।’

वास्को ऋतू को आश्चर्य से देख रहा था।

ऋतू बिना किसी भाव के आगे बोली, ‘उनके लैपटॉप में एक वार्निंग ट्रिगर हुई है वो भी तभी जब क्राई पर साइबर अटैक हुआ ‘

‘और ये इत्तफाक नहीं हो सकता ‘ वास्को बीच में बोला।

वास्को ने ऋतू को आंख मारी। फिर उसने अपने उन दोनों आई टी एक्सपर्ट्स की ओर देखा।

वास्को ने फिर तुरंत ही नरेश को अपने इण्टरकॉम से फोन लगाया ‘नरेश कम टू माय केबिन नाउ (COME TO MY CABIN NOW)।’

नरेश का जवाब सुने बिना ही वास्को ने फोन काट दिया।

‘उस नरेश के लैपटॉप की डिटेल्स निकालो। चेक करो ऋतू क्या बोल रही है। ट्राई टू अनडू दी इफ़ेक्ट (TRY TO UNDO THE EFFECT)।‘

दोनों आईटी एक्सपर्ट्स ने हामी में सर हिलाया। कुछ मिनट में ही उन्होंने नरेश के लैपटॉप डिटेल्स को चेक कर लिया था।

‘सर ऋतू सही बोल रही है। नरेश इस दी कल्प्रिट (Naresh is the culprit)।‘ आईटी हेड बोला।

‘ठीक है अनडू करो‘ वास्को बोला।

ऋतू ने वास्को की बड़ी मदद कर दी थी। उस वायरस का सोर्स कोड पता लगाने में वरना आईटी वालों को काफी समय लगता और, उसके बाद उसे अनडू करने में और भी ज्यादा समय।

परन्तु अब कुछ मिनट में ही आई टी वालों ने नरेश के लैपटॉप पर एक्टिव बग के सोर्स को पहचान लिया और वायरस को डीएक्टिवेट कर दिया।

नरेश तब तक वास्को के केबिन में आ चुका था।

नरेश ने देखा वहाँ ऋतू और आईटी हेड मौजूद थे।

'वास्को मुझे लगा ही था, ये अमरीक कुछ खतरनाक करेगा। उसने हमारे सिस्टम हैक कर लिए..... '

'बैठो नरेश' वास्को ने नरेश को बीच में टोकते हुए बोला।

नरेश ऋतू के पास वाली चेयर को सरकाकर उस पर बैठना लगा।

'नीचे बैठ - जमीन पर' वास्को बेहद गुस्सैल भाव से गुर्राया।

नरेश को एक दम से शॉक लग गया। उसके जूनियर वो आईटी हेड और ऋतू वहाँ थे। वो सब चेयर पर बैठे थे और वास्को नरेश को जमीन पर बैठने के लिए कह रहा था।

नरेश खड़ा ही रहा।

वास्को ने अपनी ड्रावर में से Sub-compact Glock G36 .45 Auto pistol निकाली। नरेश की हवाइयाँ उड़ गयी थी।

‘वास्को प्लीज’ नरेश घबरा गया। वो चुपचाप जमीन पर बैठ गया था। उसकी दशा बहुत ख़राब चल रही थी। कल उस अदने से अमरीक ने उसे बहुत ज्यादा जलील किया था और शायद आज उसे जलील करने की वास्को की बारी थी ।

‘क्यों किया तूने ऐसा’ वास्को ने अपनी Glock G36 पिस्तौल नरेश पर तानते हुए कहा।

नरेश के माथे से पसीना निकल रहा था। वो केबिन पूरी तरह से एयर कंडिशन्ड था और टेम्परेचर 20 पर सेट था। फिर भी नरेश पसीने पसीने हो रखा था।

आईटी हेड ने बीच में बोला‘ सर वायरस को डाक्टिवटे कर दिया गया है। सिस्टम्स विल बी बैक टू नार्मल इन टेन मिनिट्स (systems will be back to normal in 10 minutes) I’

‘गुड, कितनी देर सिस्टम हैक्ड रहा’ वास्को ने पूछा। हालाँकि उसने अभी भी नरेश के ऊपर अपनी पिस्तौल तान रखी थी।

‘अराउंड फोर्टी फाइव मिनट्स सर (around forty five minutes sir)’

‘सो थिस मीन्स अराउंड एट करोर रुपीस (so this means around eight crore rupees)’

नरेश को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

‘नरेश मुझे आठ करोड़ रुपए अभी के अभी ट्रांसफर कर’

नरेश का मुँह खुला का खुला रह गया। आठ करोड़ रुपए।

'वास्को मेरे पास आठ करोड़ कैश कहा से आएगा '

'वो मुझे नहीं पता। आठ करोड़ ट्रांसफर कर। तेरे पास तीस मिनट्स है।' वास्को बेहद तल्ख़ अंदाज़ में बोला। वास्को ने Glock G36 को अनलॉक कर दिया था। नरेश पर गोली अब किसी भी समय चल सकती थी।

'मुझे माफ़ कर दो वास्को। अमरीक ने कहा था उसे सो करोड़ चाहिए। यदि मैंने उसे तीन दिन में सो करोड़ नहीं दिए तो ...'

'तो वो तेरा भांडा फोड़ देगा। वो फूट चुका है।'

'प्लीज वास्को '

'आठ करोड़'

'मैं एक दम से आठ करोड़ कहाँ से लाऊंगा'

'जहाँ से तू ये वायरस लेकर आया था। जिसने मेरे सिस्टम को हैक करके मेरे पैसे बाहर भेजे। जहाँ तूने पैसे भेजे है वहाँ से लेकर आ'

'वास्को अभी फाइनेंसियल लॉस होना चालू नहीं हुआ था। वो सिर्फ फाइनेंसियल डिटेल्स चेंज हो रही थी। पैसे ट्रांसफर होते परन्तु उससे पहल रोक लिए गए' नरेश ने ऋतू की ओर देखा।

'हाँ वास्को सर। जब मैंने नरेश का लैपटॉप हैक किया, तो मुझे समझ आ गया ये बग,'

ऋतू ने वास्को के बड़ी स्मार्ट स्क्रीन की ओर इशारा किया जहाँ वो बग अब डीएक्टिवेट हो गया था और ERP सिस्टम रिस्टोर हो रहा था।

‘कुछ बहुत बड़ी गड़बड़ करने वाला है। मैं उसे रोक तो नहीं पायी बट (but) मैंने उसे डिलेकर दिया। और फॉरेन आपके पास आ गयी‘

‘स्मार्ट गर्ल ऋतू। इम्प्रेसिव (impressive)। तुमने मेरा नुकसान होने से बचा लिया।’

‘थैंक्स सर‘ ऋतू का सर फक्र से ऊँचा हो गया था।

‘ठीक है नरेश, तू ऋतू को आठ करोड़ ट्रांसफर कर दे।’

‘वास्को‘

नरेश इससे पहले आगे कुछ बोलता वास्को ने गोली चला दी थी। वो गोली नरेश के शोल्डर को हल्का सा स्क्रैच करती हुई आगे दिवार पर जा भिड़ी।

नरेश की चीख निकल गयी।

‘ये तेरे सर को भी चीर सकती थी।’ वास्को बेहद खूंखार स्वर में बोला।

नरेश बुरी तरह से रो रहा था।

वास्को नरेश को घिन्न भरी नज़रों से देख रहा था। उसे समझ आ गया था कि ये मुर्ख COO उसके साथ किस हद तक धोखा कर सकता था।

‘तू चाहता तो मुझे सब कुछ साफ़ साफ़ बता सकता था। परन्तु तेरी नियत में खोट था’ वास्को गुर्राया।

नरेश अपने कंधे को पकड़ कर जमीन पर ही बैठा हुआ था और जोर जोर से रो रहा था।

वास्को ने फिर नरेश की पत्नी को फोन लगाया।

नरेश को समझ नहीं पा रहा था कि वास्को चाहता क्या था। नरेश की पत्नी ने फोन उठाया ‘हेलो’

‘मैं वास्को बोल रहा हूँ’

‘जी’

‘तुम्हारा पति नरेश एक ऑफिस के अर्जेंट काम से त्रिपुरा जा रहा है। उसे कुछ दिन लगेंगे। वहाँ नेटवर्क भी ख़राब है, और जल्दी बाज़ी में नरेश अपना मोबाइल फोन ऑफिस में ही छोड़ गया है। तुम चिंता मत करना कुछ दिनों में वो शायद तुमसे सम्पर्क कर लेगा’

वास्को ने फोन काट दिया।

नरेश को समझ आ गया की वास्को के इरादे खतरनाक थे।

नरेश को अमरीक ने कहाँ फसा दिया था।

नरेश उठा और अपने दूसरे हाथ से अपने दाएं कंधे को जिसमे से खून निकल रहा था पकडे हुए वास्को के पैरों में गिर गया।

‘ऋतू को आठ करोड़ दे दे और मेरी नज़रों से दूर हो जा ’

‘मेरे पास आठ करोड़ नहीं है।’ नरेश जोर जोर से रो रहा था।

‘ठीक है अपना घर ऋतू के नाम कर दे’ वास्को बोला।

वास्को ने अपने सेक्रेटरी को फोन लगाया और बोला ‘नरेश खट्टर अपना घर ऋतू मैडम को गिफ्ट करेंगे। अपने लीगल वाले को बोल कर पेपर तैयार करा लो और जब तक नरेश सर साइन नहीं करे वो घर नहीं जायेंगे।’

दोनों आईटी हेड भी बुरी तरह घबरा गए थे। वास्को के साथ कोई भी खेल नहीं खेल सकता था। वास्को बेहद ही खूंखार इंसान था। वो ऐसे ही नहीं इतनी बड़ी फार्मा कंपनी का मालिक था।

अमरीक ने नरेश को कहीं का नहीं छोड़ा था। अमरीक का ये तीसरा शिकार था। सत्या की हत्या, अभिषेक की हत्या और नरेश को भी मृत्यु तुल्य कष्ट, कहीं अमरीक वाकई वास्को का ही तो आदमी नहीं था। क्योंकि ये तीनो शिकार वो थे, जो वास्को को नुक्सान पहुंचा रहे थे।

इस उलझी हुई पहेली का कोई छोर किसी को भी नहीं मिल रहा था। आखिर अमरीक कौन था, और ये रक्तरंजित गेम आखिर था क्या ?

अध्याय 31

वास्को के आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। वो अपने मोबाइल में आये उस मैसेज को कई बार पढ़ चुका था। अपने आलीशान केबिन में बैठा हुआ वो अब सूरज की रौशनी से जगमगाते सुन्दर मुंबई शहर को देख रहा था। वास्को अपनी सीट से उठा और अपने सोफे पर पड़ी ब्लैक डैनिएल्स की बोतल से अपने व्हिस्की गिलास में एक पेग बनाया। फिर उसने व्हिस्की की चुस्कियां लेते हुए अपने मोबाइल पर आये उस मैसेज को फिर से पढ़ा।

'पचास करोड़ ट्रांसफर कर दो। तुम्हें राजन शर्मा के कोड मिल जायेंगे। अमरीक'

वास्को सोच में पड़ गया। अमरीक के पास उसका पर्सनल नंबर कहा से आया। क्या नरेश ने अमरीक को ये नंबर दिया ? और ये अमरीक अब इतना दुस्साहसी हो गया था कि वो उसे डायरेक्ट मैसेज कर रहा था। नरेश के ख्याल से वास्को को ऋतू की याद आयी। ऋतू ने ही नरेश के उस साइबर अटैक को टाइम पर विफल कर दिया था।

वास्को ने तुरंत ही ऋतू को फोन किया। 'कम टू माय केबिन नाउ (Come to my cabin now)।'

वास्को ने बिना ऋतू का उत्तर सुने अपना इण्टरकॉम रख दिया। वो फिर से अपने खिड़की से उस सुबह मुंबई की आपा धापी देखने में लग गया। पांच मिनिट में ही ऋतू उसके केबिन में उसके सोफे पर बैठी थी।

ऋतू को वास्को ने अमरीक का मैसेज दिखा दिया था।

'सर ये अमरीक नरेश को ब्लैक मेल करने के बाद अ .....' ऋतू कुछ बोलना चाह रही थी परन्तु वास्को बीच में बोला 'पचास करोड़ मैं दे सकता हूँ'

ऋतू की आँखे फटी रह गयी। वास्को अमरीक को पचास करोड़ देने को राजी था।

'बस मुझे स्युरेटी (surety) चाहिए की अमरीक के पास कोड है'

'सरआप चाहते है मैं पता करु'

'हाँ '

'ठीक है सर। आपने मुझे नरेश का 8 करोड़ का मकान दिलवाया है इतना तो मैं आपके लिए कर ही दूंगी '

'वो आठ करोड़ का मकान तुम्हारी मेहनत और मुझे नुकसान से बचाने का था। यदि ये कोड वाकई चल गया तो अमरीक के पचास करोड़ के अलावा मैं तुम्हें भी अगले पांच साल तक दो करोड़ देता रहूँगा।'

ऋतू की बांछे खिल उठी। मतलब आठ करोड़ का मकान और साल के दो करोड़। उसे शायद अगले पांच साल क्या पूरी ज़िन्दगी काम करने की जरुरत नहीं रहेगी।

वास्को ने एक नज़र ऋतू को देखा और अपने ब्लैक डेनियल व्हिस्की का सिप मारते हुए बोला,' तुम जाओ और मुझे फोन मत करना। मेरे पास आकर फेस तो फेस ही अपडेट देना'

ऋतू बहुत ही ज्यादा खुश हो गयी थी। उसने फॉरेन वो नंबर नोट किया जिससे अमरीक ने वास्को को मैसेज किया था और वहाँ से जाने लगी।

‘एक बात और‘ वास्को ऋतू से बोला। ऋतू तकरीबन दरवाजे पर पहुँच गयी थी।

‘यस सर‘

‘अमरीक विरार में कहीं है। ये नंबर विरार के किसी मकान पर ट्रेस हुआ है। मैं तुम्हें अड्रेस दे रहा हूँ। तुम वही चली जाओ।’

ऋतू रुक गयी। वास्को ने वो एड्रेस लिखी हुई स्लिप अपने ड्रावर में से निकाली और ऋतू को दे दी।

‘मैंने अपने सोर्स से अमरीक का फोन नंबर ट्रेस करवा लिया था‘

‘ओके सर ‘

वास्को ने देखा ऋतू बिलकुल भी नहीं घबराई। जिस खतरनाक हत्यारे ने कालिया गैंग के लोगों की भी हत्या कर दी थी उससे मिलने के लिए ऋतू राजी हो गई थी और उसके घर जाने के लिए भी। ऋतू ने अपनी उत्सुकता में ये गलती कर दी थी। वास्को को इतने हल्के में लेना उसके लिए खतरनाक हो सकता था।

परन्तु वास्को कुछ नहीं बोला। उसने ऋतू को जाने का इशारा कर दिया।

वास्को ऋतू को अपने केबिन से जाते हुए देख रहा था। वास्को क्या गेम खेल रहा था ये कह पाना मुश्किल था।

ऋतू के जाने के बाद, वास्को ने नरेश को फोन किया। नरेश अपनी किस्मत को कोस रहा था। वो अपना घर खाली करने में अपनी पत्नी की मदद कर रहा था जब उसका फोन बजा,

‘वास्को सर‘ नरेश ने बेहद ही आशा भरे स्वर में बोला।

‘हाँ‘

‘सर मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गयी‘ नरेश जल्दी जल्दी बोला।

‘वो सब ठीक है। अपना मकान और नौकरी वापस चाहता है।’ वास्को गुस्सैल स्वर में बोला।

‘यस सर‘

‘अगले पंद्रह मिनट में मेरे ऑफिस में आ जा।’ वास्को ने फोन काट दिया।

नरेश ने अपनी पत्नी को देखा और उसे गले लगा लिया।

‘अब क्या हो गया‘ नरेश की पत्नी बोली।

‘शायद मेरी नौकरी और ये घर बच गया। वास्को ने बुलाया है।‘

नरेश फॉरेन ही घर से निकल गया। उसके हाथ में पट्टी बंधी थी परन्तु वो किसी भी दर्द की परवाह किये बगैर क्राई पहुँच गया और पंद्रह मिनिट ख़तम होने से पहले ही वास्को के केबिन में बैठा था।

‘मैं वाकई शर्मिंदा हूँ। उस अमरीक ने मुझे मेंटली तोड़ दिया था। इसलिए ..’

‘नरेश, मुझे सब पता है। तुझे फॉरेन ऋतू का पीछा करना है। ‘

‘क्या ‘

‘हाँ। वो ऋतू क्या सोचती है मुझे समझ नहीं आता।’

नरेश को ये सब किसी फंतासी (fantasy) के समान लग रहा था। आखिर हो क्या रहा था ?

वास्को नरेश के पास आकर बोला। ‘नरेश तू मेरा पुराना वफादार है और ऋतू को आये एक साल भी नहीं हुआ है‘

‘मैं कुछ समझा नहीं सर‘

‘नरेश, तुझे अमरीक ने ब्लैक मेल किया, और तूने ये साइबर अटैक किया। तेरा कंप्यूटर मेरे सिक्योर सर्वर से जुड़ा हुआ है। तो तू इतनी आसानी से मेरे ERP को हैक कर पाया। परन्तु ऋतू ने तेरा कंप्यूटर हैक करके वो साइबर अटैक विफल कर दिया।’

‘हाँ‘

‘तेरा कंप्यूटर हैक...’

नरेश को अब वास्को की बात समझ आ गयी। नरेश का कंप्यूटर सिक्योर्ड सर्वर पर था। जैसे वास्को का। उसको हैक कोई बहुत ट्रेंड हैकर भी आसानी से नहीं कर सकता जब तक की वो पिछले कई महीनो से ऐसी कोशिश न कर रहा हो।

'राइट वास्को। मैं समझ गया'

'हाँ नरेश। ये लड़की पिछले कई महीनो से तेरा और मेरा लैपटॉप हैक करने के कोशिश कर रही थी। वो कुछ दिनों पहले ही सफल हुई थी। उसने मेरा लैपटॉप इसलिए हैक नहीं किया क्योंकि फिर वो फस जाती।'

नरेश को वास्को अब किसी भगवान् के तुल्य लग रहा था।

'अमरीक और ऋतू मिले हुए है।' वास्को बोला।

नरेश शौक में आ गया था।

'अमरीक ने तुझे ब्लैक मेल तब किया जब ऋतू ने उसे बता दिया कि अब वो तेरा कंप्यूटर हैक कर सकती है।'

'और ऋतू आपकी नज़रों में हीरो बनने के लिए इतना बड़ा खतरा उठा गई।'

'खाली मेरी नज़रों में हीरो बनाने के लिए नहीं, इनका प्लान कुछ और है।' वास्को बोला और अपनी ब्लैक डैनिएल्स व्हिस्की का पेग बना कर पीने लगा।

'मैं क्या करु '

'तुम ऋतू का पीछा करो। उसको मैंने अमरीक से निगोशिएट करने के लिए भेजा है।'

नरेश पूरी तरह से कंफ्यूज हो चुका था। परन्तु उसे ये मौका छोड़ना नहीं था। उसे वास्को का ये काम कर देना था। अमरीक और ऋतू दोनों से उसे भी बदला लेना था।

‘तुम्हें ऋतू और अमरीक को रंगे हाथो पकड़ना है और ‘

‘और ‘

वास्को ने अपनी ड्रावर में से अपनी Sub-compact Glock G36 .45 Auto pistol निकाली और नरेश को दे दी।

‘समझ गया उन दोनों को ख़तम कर देना है‘

‘हाँ। यदि जरुरत पड़े तो।’

‘परन्तु वास्को‘

‘नरेश तुम चिंता मत करो। मेरा वादा है, यदि तूने मेरा ये काम कर दिया और तू पकड़ा गया या मारा गया तो तेरे परिवार को मैं इतना मुआवजा दूंगा की उन्हें कभी पैसे की कमी नहीं खलेगी‘

नरेश के चेहरे पर संतोष का भाव आ गया। वैसे भी उसने सावित्री से अवैध सम्बन्ध रख कर अपने परिवार को धोखा दिया था। ये अच्छा मौका था उनके लिए कुछ कर गुज़रने का। नरेश ने वो सब कॉम्पैक्ट पिस्तौल ले ली।

वास्को ने नरेश को भी वो एड्रेस दे दिया जो उसने ऋतू को दिया और साथ ही एक सिक्योर फ़ोन।

‘इस फोन में तुम्हें ऋतू की लोकेशन मिलती रहेगी। ऋतू को नहीं पता है, परन्तु उसका फोन हैक्ड है। और इस फोन की मदद से तुम उसे ट्रैक कर सकते हो‘

वास्को के चेहरे पर कातिलाना भाव थे।

नरेश ने वास्को को बहुत गलत समझा था। वास्को ऋतू की सच्चाई इतनी जल्दी समझ गया था। अमरीक ने सही कहा था कि नरेश कभी भी वास्को नहीं बन सकता था। नरेश को जो कुछ समझ नहीं आया वो वास्को को आ गया। वास्को ऐसे ही नहीं इतनी बड़ी फार्मा कंपनी का मालिक था।

नरेश वहाँ से बाहर निकल गया। उसके पास अब एक मिशन था। और उसे वो किसी भी कीमत पर सफलता पूर्वक करना था।

अध्याय 32

रात के 11बजे रामलाल के घर पर दस्तक हुई। इस समय कौन हो सकता है, रामलाल को समझ नहीं आया। वो पुलिस कॉलोनी में रहता था। वो एक सिक्योर कॉलोनी थी इसलिए रामलाल ने बिना डरे ही दरवाजा खोल दिया। उसके सर पर एक जोरदार वार हुआ। रामलाल बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो वो महिंद्रा थार में पीछे की सीट पर लेटा हुआ था। वो गाड़ी जुहू चौपाटी पर पार्क्ड थी क्योंकि समुन्दर की मिटटी की भीनी भीनी महक और रात की वो ठंडी हवा उसे उठा रही थी।

रामलाल उठ कर गाड़ी से बाहर आ गया और उसके सामने था उसका आक्रमणकारी।

रामलाल ने उस आदमी को देखकर उसके पैर पकड़ लिए।

'मुझे माफ़ कर दीजिये सर'

रामलाल बिना कुछ बोले ही समझ गया था कि उसने क्या गलती की थी।

'क्यों किया तुमने ऐसा' राजवीर गुस्से में बोला।

'सर' रामलाल ने डरते हुए बोला 'मुझे माधव सर नौकरी से निकाल देते'

'ठीक है। तुम्हें मेरा एक काम करना है' राजवीर बोला।

'क्या सर'

‘और ये तुम्हारी मर्जी है। तुम्हारे पर कोई दबाव नहीं है‘

‘मैं समझा नहीं सर‘

‘रामलाल जब तुम बेहोश थे, मेरे दिमाग में कई चीजे चल रही थी।’ राजवीर रामलाल से नजर हटा कर समुन्दर को देखते हुए बोला।

‘मैं तुम्हें इस धोके के लिए क्या सजा दू। मुझे मालूम पड़ गया था कि मेरा फोन तुम्हरे द्वारा भेजे गए लिंक से हैक हुआ है।’

‘सर मुझे माधव सर ने बोला था ‘

‘हाँ वो सब मैंने पता लगा लिया है।’

‘सर मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ‘ रामलाल बहुत ही गंभीर स्वर में बोला। राजवीर से धोखा उसे अब कचोट रहा था।

‘तुम्हें ये usb ड्राइव ‘राजवीर ने रामलाल को एक छोटी सी usb ड्राइव देते हुए बोला ‘ उस लैपटॉप में लगा देनी है जो माधव के केबिन में है‘

‘ठीक है सर‘

‘तुम करोगे‘

‘बिलकुल सर। कर दूंगा‘

‘ठीक है। परन्तु अभी करना होगा।’

‘अभी वो लैपटॉप माधव सर के घर पर होगा ‘

‘नहीं वो ऑफिस में है।’

‘आपको कैसे पता सर’

‘तुमने मेरे फोन को हैक किया और माधव सर अपने उस लैपटॉप से मेरे फोन को ट्रैक कर रहे थे। परन्तु ट्रैकिंग की प्रॉब्लम ये है कि कोई जानकर रिवर्स ट्रैक भी कर सकता है।

‘समझ गया सर‘

‘तुम्हें माधव सर के ऑफिस जाना है। मैं भी साथ चलूँगा और तुम उनके गार्ड से बोलोगे माधव सर ने अपना लैपटॉप मंगवाया है।’

‘ओके सर। परन्तु उस गार्ड ने माधव सर को फोन कर लिया तो…‘

‘तो तुम्हारी नौकरी गयी‘

रामलाल हक्का बक्का रह गया।

‘इसलिए कह रहा हूँ रामलाल, यदि तुम चाहो तो मेरी मदद करो, नहीं तो मत करो।’ राजवीर ने बहुत ही मृदु भाव से बोला।

राजवीर जाकर अपनी पुलिस की महिंद्रा थार में बैठ गया जहाँ अभी कुछ देर पहले बेहोश रामलाल लेटा हुआ था। रामलाल भी अपने झुके कंधे लेकर वहाँ आ गया।

‘चलो तुम्हें घर छोड़ दूँ‘ राजवीर ने रामलाल का उतरा हुआ मुँह देखा और बोला।

‘नहीं सर मुझे ACP ऑफिस ले चलिए‘ रामलाल बहुत ही दृढ़ता पूर्वक बोला। उसकी बोली में एक अजीब सा आत्मविश्वास था।

राजवीर की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। सामान्यतः राजवीर ऐसे अवैध काम नहीं करता। परन्तु उसके पास कोई चारा नहीं था। माधव ने उसका फोन हैक करके पहले ही हर हद पार कर दी थी।

थोड़ी देर में ही राजवीर और रामलाल ACP ऑफिस में थे। रामलाल आराम से अंदर चला गया। ACP के केबिन के बाहर पुलिस कांस्टेबल ने उसे रोक लिया।

'ACP सर का लैपटॉप रह गया है वो लेने आया हूँ।'

गार्ड को कुछ तो अटपटा लगा। वो जानता था कि रामलाल ACP सर का ड्राइवर है, परन्तु ACP सर रात के 12 बजे क्यों किसी को लैपटॉप लेने भेजेंगे।

'तुम सर का केबिन खोलो और मुझे लैपटॉप ले जाने दो।' रामलाल ने बहुत ही कॉन्फिडेंटली बोला। उसका कॉन्फिडेंस देख कर एक बार तो उस कांस्टेबल को लगा कि वो सच ही बोल रहा था। वैसे भी रामलाल अपनी ईमानदारी के लिए जाना जाता था इसलिए उस पर शक करना बेवकूफी थी।

'मैं केबिन खोल देता हूँ, परन्तु तुम लैपटॉप नहीं ले जा सकते जब तक मैं ACP सर से बात न कर लू' गार्ड ने संशित स्वर में कहा।

'ठीक है तुम अपनी तस्सली कर लो' रामलाल बिना हिचके बोला।

गार्ड ने रामलाल के लिए ऑफिस का केबिन खोल दिया ताकि वो लैपटॉप ढूंढ ले। रामलाल ने फॉरेन ही लैपटॉप ढूंढ लिया और वो USB ड्राइव उस लैपटॉप में लगा दी। उसने लैपटॉप को ऑन भी कर दिया था।

इधर गार्ड ने तसल्ली के लिए ACP माधव को फोन लगाया। परन्तु तब तक राजवीर वहाँ आ गया।

‘ये केबिन क्यों खुला हुआ है’ राजवीर बेहद गुस्से में बोला।

राजवीर को देख कर उस कांस्टेबल ने ACP माधव का फोन कट कर दिया। वैसे भी रिंग नहीं गयी थी।

‘सर ACP सर का ड्राइवर उनका लैपटॉप लेने आया है’

‘इस समय’ राजवीर चीखा।

‘सर वो ...’

‘रामलाल’ राजवीर जोर से बोला और ‘रामलाल दौड़ता हुआ ACP माधव के केबिन से बाहर आ गया’

‘तुम ये केबिन बंद करो’ राजवीर कांस्टेबल से बोला।

‘रामलाल तुम समझते क्या हो। कब ACP सर ने तुम्हें बोला की तुम लैपटॉप लेकर आओ’

‘सर मुझे माफ़ कर दो। मेरे बेटे का एग्जाम था तो मेने सोचा रात में लैपटॉप ले जाऊ सुबह रख दूंगा’ रामलाल रोते हुए बोला। रामलाल राजवीर के पैर में गिर गया था। उस ACP ऑफिस के बाहर बैठे कांस्टेबल को भी हैरानी हो गयी थी।

उसने तुरंत ही केबिन को बंद कर दिया। राजवीर सर ने उसको भी बचा लिया था। वरना ACP माधव उसका तबादला किसी छोटे गांव में करवा देते।

‘तुम ईमानदार आदमी हो, इस बार तुम्हें माफ़ कर देता हूँ। आगे मत करना‘ राजवीर ने रामलाल के कंधे पर हाथ रखा और उसे भेज दिया।

फिर राजवीर ने उस कांस्टेबल को देखा ‘कई बार ऐसी गलती हो जाती है। तुम भी इस बात की शिकायत मत करना‘

‘जी सर‘ उस कांस्टेबल ने बहुत ही उत्साहित होते हुए बोला। अच्छा हुआ ACP सर को फोन नहीं लगा था।

राजवीर भी ACP ऑफिस से बाहर आ गया।

थोड़ी देर में उसके मोबाइल पर ACP माधव का पूरा डेटा हैक होकर आ चुका था। रामलाल ने शानदार काम कर दिया था।

जब तक सुबह ACP माधव अपने केबिन में आएगा और लैपटॉप देखेगा तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। उसका सारा डेटा अब राजवीर के पास था। और अब माधव को अपने जीवन का सबसे बड़ा सबक मिलने वाला था।

राजवीर फॉरेन ही अपने घर पर अपने लैपटॉप में वो सारा डेटा एनालिसिस कर रहा था जो माधव के कंप्यूटर से उसे मिला था। राजवीर की आँखे चौड़ी हो गयी थी। माधव सर की पत्नी की मौत कैंसर से हुई थी।

ये बात राजवीर को पता ही नहीं थी। इस लैपटॉप के डेटा ने पूरा खेल राजवीर के सामने खोल के रख दिया था।

सब कुछ किसी कारण से होता है (Everything Happes for a Reason), अब चरितार्थ हो गया था। जहाँ राजवीर इस गेम को समझने के लिए भटक रहा था, वहीं माधव ने उसका फोन हैक करके, उसे ये प्रेरणा दी की वो माधव का लैपटॉप हैक कर ले।

राजवीर तो खाली माधव और वास्को के बीच का इन्वॉल्वमेंट की जाँच करना चाह रहा था ताकि माधव को सबक सिखा सके परन्तु अनजाने में उसने ये गुथी ही सुलझा दी थी जो राजन शर्मा की हत्या से चालू हुई थी।

राजवीर ने एक अवैध काम कर दिया था और अब वो एक और अवैध काम करने जा रहा था। ये खेल अपने आखरी पड़ाव पर पहुँच चुका था।

अध्याय 33

कालिया गैंग के मुखिया को सूझ नहीं रहा था कि वो क्या करे। उसे इंस्पेक्टर राजवीर पर कतई भरोसा नहीं था। परन्तु राजवीर उससे अकेले में मिलना चाहता था। आखिर क्यों ? राजवीर ने पता लगा लिया था कि उसके लोगों को किसने मारा। कालिया अपने लोगों की मौत का बदला लेना चाहता था। परन्तु राजवीर उसकी मदद करेगा ये उसे कुछ हजम नहीं हो रहा था।

उसने फिर भी राजवीर से मिलने की ठान ली और राजवीर को ऐसी जगह बुलाया जहाँ कोई पुलिस वाला सामान्यतः जाने की हिम्मत नहीं करेगा। कालिया गली इस बात के लिए फेमस थी कि कोई पुलिस की बड़ी फौज भी वहाँ नहीं घुस सकती थी। वहाँ सिर्फ कालिया की हुकूमत चलती थी। कालिया को उम्मीद नहीं थी कि राजवीर आएगा। परन्तु ठीक सुबह के नो बजे राजवीर वहाँ आ चुका था। राजवीर समय का पंक्चुअल (punctual) था।

राजवीर उस छोटे से कमरे में बैठा हुआ था जब कालिया वहाँ आया। उसके दो बॉडीगार्ड भी उसके साथ थे।

‘इंस्पेक्टर साहब आपका बहुत नाम सुना था, अब समझ भी आ गया कि आप वाकई कबीले तारीफ है।’ कालिया राजवीर के सामने की

कुर्सी पर बैठते हुए बोला। ‘यहाँ आना किसी पुलिस वाले की बस की बात नहीं।’

‘मैं निहत्ता भी आया हूँ और पुलिस यूनिफार्म में भी नहीं हूँ।’ राजवीर बोला।

‘ये आपकी और भी हिम्मत है साहेब‘ कालिया मुस्कुराया।

‘यदि मैं तुम्हें बता दूँ की किसने तुम्हारे लोगों को मारा है ‘

‘बताना नहीं है साहेब, मेरे हवालेकरना है उस अमरीक को। कालिया बेहद खूंखार स्वर में बोला। ‘ऐसे तड़पती मौत मिलेगी उसे ....’

‘अमरीक ने वो हत्याएं नहीं की है .’

‘क्या ‘ कालिया के आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही।

‘तुम सिर्फ बताओ, मेरी इस मदद के बदले मदद करोगे‘

कालिया कंफ्यूज हो चुका था ‘क्या और कैसी मदद‘

‘वो सब मैं तुम्हें बता दूंगा। पहले वादा करो‘

‘साहेब यदि आप सही बोल रहे हैं तो यदि आपने मुझे असली कातिल दे दिया तो वादा है मैं आपकी मदद करेगा‘

‘वैसे तो एक पुलिस वाले के लिए ये बहुत शर्म की बात है कि वो एक मुजरिम से मदद ले परन्तु ..’

‘साहेब कैसी बाते करते हो। आप और मैं एक ही है। बस अलग अलग नजरिया है। आपके लिए जो छह है वो मेरे लिए नो‘

‘है है‘ राजवीर थोड़ा सा हँसा।

राजवीर ने अपनी जेब में हाथ डाला। कालिया गैंग के बॉडी गार्ड सतर्क हो चुके थे। राजवीर ने अपनी जेब से अपना एक स्मार्ट फोन निकला। ये फोन उसने अपने दोस्त से लिया था। ये उसका हैक्ड फोन नहीं था। वैसे भी अब तक माधव को अपने ऑफिस में अपने लैपटॉप में वो usb लगी हुई मिल गयी होगी और माधव सब समझ गया होगा।

राजवीर ने ऐसा क्या देख लिया था और वो कालिया गैंग जैसे खतरनाक गैंगस्टर की मदद ले रहा था। क्यों ?

इधर माधव अपने ऑफिस में अपने लैपटॉप के सामने बैठा हुआ था। तकरीबन दिन के साढ़े दस बज रहे थे। माधव अपने ऑफिस में अपने लैपटॉप को देख कर समझ गया था कि कल रात क्या हुआ होगा। उसका वो कांस्टेबल और उसका ड्राइवर रामलाल उसके सामने खड़े थे।

'रामलाल ये कांस्टेबल कह रहा है तू कल रात मेरे ऑफिस में आया था'

'हाँ '

'रामलाल तेरे को अभी के अभी ससपेंड कर रहा हूँ' माधव चीखा।

रामलाल के चेहरे पर कोई भाव नहीं था।

'नहीं कर सकते माधव' रामलाल ने बहुत शांत रहते हुए जवाब दिया।

माधव और वो कांस्टेबल जो कल रात ड्यूटी पर था दोनों बुरी तरह सकते में आ गए। रामलाल माधव साहब को माधव कह रहा था। क्या ये पागल हो गया था।

‘क्यों नहीं कर सकता मुर्ख’

‘अभी कुछ देर रुक, तुझे एक फोन आएगा, तेरे सभी सवालों के जवाब मिल जायेंगे’ रामलाल ने घृणा और हेय भाव से बोला।

माधव के होश उड़ गए थे। उसे समझ आ गया कि राजवीर उसके साथ गेम खेल गया है और रामलाल को सब कुछ पता है।

‘निकल जा मेरी नज़रों के सामने से’ माधव चीखा।

रामलाल और वो कांस्टेबल दोनों वहाँ से चले गए। उस कांस्टेबल को पता ही नहीं चला कि रामलाल आज क्या खा कर आया था। इतना दुस्साहसी व्यवहार।

माधव ने अपना सर पकड़ लिया था। तभी उसके फोन पर प्राइवेट नंबर से कॉल आया।

माधव को समझ आ गया था कि ये फोन राजवीर का ही है।

‘हेलो’ माधव बोला।

‘एक एड्रेस मैसेज कर रहा हूँ। मर्द का बच्चा है तो वहाँ आ जा अभी के अभी।’ राजवीर चीखा। फिर राजवीर ने कुटिलता पूर्ण स्वर में कहा ‘वैसे तू मर्द का बच्चा है नहीं, फिर भी आ जा, तेरे पास कोई चारा नहीं है।’

माधव हैरान रह गया था। राजवीर ने बाज़ी ही पलट दी थी।

‘कहाँ आना है‘ माधव शांत स्वर में बोला।

‘पढ़ना तो तुझे आता था। अब इस शॉक के कारण तू भूल गया तो किसी और से पढ़वा लेना। मैंने मैसेज कर दिया।’ राजवीर बोला।

राजवीर ने फिर थोड़ा पॉज लिया और बोला ‘हाँ अकेले मत आना, अपने उन दो शागिर्दों को भी लेकर आना। समझ गया ना‘ राजवीर बोला।

माधव ने थोड़ा पॉज लिया। माधव बोला, ‘ठीक है। उनको ले आऊंगा। परन्तु मेरी एक शर्त है‘ माधव बोला।

‘तू शर्त रखने की पोजीशन में नहीं है‘ राजवीर बोला।

‘ठीक है तेरी मर्जी। मगर यदि वो वहाँ होगा तो ही मैं आऊंगा वरना नहीं।’ माधव ने खूंखार भाव से बोला। उसके चेहरे के भाव अब डर और निराशा के बदले खूंखार हो चुके थे।

राजवीर को समझ आ गया था कि माधव किसकी बात कर रहा था। ’और मैं मना कर दूँ तो‘ राजवीर बोला।

‘तो राजवीर तेरी पत्नी का वो हश्र होगा जो मेरी पत्नी का हुआ है।’

राजवीर का खून खोल उठा। उसका डाइवोर्स हुआ था परन्तु वो अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता था। उसे नहीं पता था कि माधव इस कदर गिर जायेगा। परन्तु माधव की आवाज़ में एक अनोखी क्रूरता थी। वो कुछ भी कर सकता था। राजवीर ने इस केस सॉल्व करने की आपा धापी में यह ध्यान ही नहीं दिया था कि उसकी पत्नी को भी कोई टारगेट कर सकता था।

'ठीक है माधव - वो वहाँ होगा। परन्तु यदि मेरी पत्नी ...' राजवीर अपनी बात पूरी करता उससे पहले माधव बोल उठा 'यदि वो वहाँ हुआ तो तेरी पत्नी को कुछ नहीं होगा ये मेरा वादा है' माधव ने फोन काट दिया।

माधव को समझ आ गया था कि उसका खेल ख़तम हो चुका था। यदि उसने राजवीर की बात नहीं मानी तो राजवीर उसकी सारी पोल खोल देगा। उसे अब एक ही रास्ता दिख रहा था, राजवीर को रास्ते से हटाना पड़ेगा।

माधव ने तुरंत ही अपने सिक्योर फोन से एक फोन लगाया। सामने से आवाज़ आयी

' हेलो '

'अमरीक' माधव बोला 'तेरे लिए एक और काम है '

माधव अमरीक को जानता था। अमरीक माधव के लिए काम कर रहा था। ये विस्मयकारी और खुनी खेल अब आखरी मुकाम पर था।

'बोलिये' अमरीक बोला।

'राजवीर को रास्ते से हटाना पड़ेगा। वो हमारा राज जान गया है।'

'ठीक है। '

'एड्रेस भेज रहा हूँ वहाँ तुझे और मुझे दोनों को जाना है।'

'समझ गया और उस.... 'अमरीक कुछ बोलने वाला था।

'हाँ उसे भी। मैं उसे फोन कर दूंगा' माधव बोला और उसने फोन काट दिया।

माधव के चेहरे के भाव अब बदल चुके थे। उसके चेहरे पर अब एक खूनी भाव आ चुका था। उसे पता था अब समय आ गया था इस खेल जो पिछले तकरीबन एक साल से चल रहा था, उसको अपने आखरी मुकाम तक पहुँचाने का। इस खेल में यदि राजवीर की बलि भी चढ़ानी पड़े तो भी माधव को गुरेज़ नहीं था।

माधव ने अपना सिक्योर फोन लिया और एक और फोन मिलाया। इस बार सामने से आवाज़ है 'यस सर'

'प्रथमेश' माधव बोला।

माधव ही प्रथमेश का वो रहस्यमयी मददगार था। माधव ने ही अमरीक को भेजा था। तो क्या माधव ही वास्को को बर्बाद करने में लगा हुआ था और वास्को को पता भी नहीं चला। परन्तु क्यों? और माधव की पत्नी का क्या राज था?

'जी सर कहिये '

'एक एड्रेस दे रहा हूँ। वहाँ पर पहुंच जाओ '

'सर ये एड्रेस '

'राजवीर को मेरी सच्चाई पता चल गयी है। '

'क्या '

'हाँ '

'और ये भी की कालिया गैंग को हमने इन्वॉल्व किया था' प्रथमेश बेहद डरे हुए स्वर में बोला। उसके होश फाख्ता हो गए थे।

‘वो नहीं पता। पर तू इस पते पर पहुँच जा‘

‘क्यों‘ प्रथमेश ने घबराते हुए बोला।

‘क्योंकि मैं बोल रहा हूँ। मुझे वहाँ तेरी मदद लगेगी।‘ माधव ने फोन काट दिया।

प्रथमेश को ये कुछ बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। माधव आखिर उससे चाहता क्या था। माधव उसे फसा भी सकता था। परन्तु प्रथमेश के पास कोई चारा नहीं था।

बहुत सालों पहले प्रथमेश मनी लॉन्डरिंग के चक्कर में फस गया था और वो केस माधव ही हैंडल कर रहा था। माधव ने प्रथमेश को उस समय तो बचा लिया परन्तु वो सारे सबूत माधव के पास ही थे। यदि प्रथमेश ने माधव की बात नहीं मानी तो माधव उसे बर्बाद कर सकता था। इसलिए माधव ने जब प्रथमेश को बोला की अमरीक को मारने के लिए कालिया गैंग को एंगेज करो उसने चुपचाप कर दिया। जबकि प्रथमेश को तो अमरीक से कुछ मतलब भी नहीं था।

यह तो अभिषेक ने ही ज्यादा होशियारी मारी थी अमरीक को पुलिस लॉक अप से छुड़ाने के लिए और अपनी जान से वो हाथ धो बैठा।

प्रथमेश घबरा गया था। परन्तु वो माधव की बात को टाल नहीं सकता था। उसने वो एड्रेस देखा जो माधव ने उसे भेजा था और वहाँ जाने की तयारी कर ली थी।

माधव इस खेल का सबसे बड़ा खिलाडी निकला था। परन्तु राजवीर बाज़ी पलट चुका था।

इधर अमरीक का पीछा करती ऋतू और ऋतू का पीछा करते नरेश भी जाने अनजाने में उसी जगह जा रहे थे जहाँ राजवीर ने माधव को बुलाया था।

अध्याय 34

राजन शर्मा पर उस काले मास्कधारी ने हमला किया था। राजन शर्मा ने बेहोश होने का नाटक किया जब तक वो काला मास्कधारी, राजन शर्मा की रिसर्च आदि को इकठ्ठा कर रहा था, राजन शर्मा ने वो दो शीशियां पी ली थी। ये शीशियां उसे सुबह ही श्रद्धा ने दी थी। इनको पीने से कोई भी अपनी मौत को फेक कर सकता था परन्तु इसमें बहुत ज्यादा खतरा था। श्रद्धा को समझ नहीं आया था कि राजन शर्मा ने ऐसी दवाइयां उससे क्यों मंगवाई थी और उनका राजन शर्मा क्या करेगा।

राजन शर्मा को शक था कि जैसे ही उसकी रिसर्च ख़तम हो जाएगी उसे मार डाला जायेगा। उसकी रिसर्च अब पूरी हो चुकी थी। वो अपनी मौत को फेक करना चाहता था। उसे कुछ भी प्लान करने का कोई मौका ही नहीं मिला।। रात तक ये मौत का दूत काला मास्कधारी आ चुका था।

राजन ने भगवान् का नाम लेकर वो दोनों शीशियां पी ली थी परन्तु उनका असर होने में समय था। तब तक उस काले मास्कधारी ने अपनी पिस्तौल राजन शर्मा पर तान दी थी। काले मास्कधारी ने अपना मास्क उठा लिया था। वो था ACP माधव। राजन शर्मा हक्का बक्का रह गया।

'मेरी बीबी के कातिल' माधव चीखा।

परन्तु माधव राजन शर्मा से घृणा के चक्कर में भूल गया था कि वो एक कारपेट पे खड़ा था। राजन शर्मा ने बहुत तेजी से उस कारपेट को खींच लिया और खिड़की से भाग गया। वो बहुत तेज भागा और पास ही एक माल में छिप गया। उसने पुलिस को फोन करना उचित नहीं समझा और अपने बेटे को फोन किया। उसने उसे कोड वर्ड में सब बता दिया था। उसका बेटा समझ गया था कि उसके पिता ने वो जहर पी लिया था और उसे फॉरेन दिल्ली से मुंबई पहुँचाना था। उसने रात की फ्लाइट पकड़ी और मुंबई आ गया।

इधर राजन शर्मा मॉल से बाहर निकला तब तक उन दवाइयों का असर हो गया था। बाहर उसे माधव मिला जिसने काला मास्क लगा रखा था। राजन शर्मा उसके सामने ही सड़क पर गिर गया। माधव को लगा बहुत तेज़ भागने से वो मर चुका था। माधव उस पर गोली चलाने वाला था कि उसे लगा, यदि उसने इस पर अपनी गोली चलाई तो फिर लाश को ठिकाने लगाना पड़ेगा। ये मर गया है और अब ऐसा लगेगा जैसे इसकी मौत हार्ट अटैक से हुई हो। माधव ने उस लाश को वहीं छोड़ दिया और अपने ही लोगों के द्वारा उस लाश को हॉस्पिटल पहुंचवा दिया।

राजन शर्मा बेहद घबरा के उठ गया। उसका चेहरा पसीने से पानी पानी हो रहा था।

उसका बेटा जयेश उसके पास ही लेटा हुआ था। वो भी उठ गया।

‘क्या हुआ पापा। फिर वो ही सब।’ जयेश ने थोड़ा टेन्स टोन में कहा।

राजन ने पीने के पानी की ओर इशारा किया और जयेश ने उसे पानी पिला दिया। सुबह के पांच बज रहे थे।

राजन थोड़ा घबराते हुए बोला,’बेटा मैं जिस तरह से बचा हूँ मुझे ही पता है।’

‘हाँ पापा। मुझे पता है। उस ACP माधव ने आपको मारने की कसम खाई थी। उसकी बीबी क्या मरी सारा ब्लेम आप पर डालने लग गया।’

‘हाँ।‘ राजन शर्मा थोड़ा सांस लेते हुए बोला।

‘वैसे पापा आपने उसकी बीबी को दवाई क्यों नहीं दी। श्रद्धा को भी तो आपने परमानेंट क्योर वाली दवाई दे दी थी’ जयेश ने अचरज भरे स्वर में पूछा।

राजन शर्मा अपने बिस्तर से उठ खड़ा हुआ।

उसके सामने पूरा का पूरा सीन आ गया।

श्रद्धा उसके पास आयी थी। वो वास्को की एजेंट थी। वास्को को पिछली बार राजन शर्मा ने अपनी रिसर्च बेच दी थी। परन्तु राजन शर्मा को कुछ नहीं मिला और सारा माल वास्को कमा कर ले गया।

इसलिए इस बार राजन शर्मा को कैंसर का परमानेंट क्योर बना लेना था और वो वास्को को इतनी आसानी से ये रिसर्च नहीं बेचेगा।

वास्को को भी पता था और इसलिए उसने राजन शर्मा पर पल पल नज़र रखने के लिए श्रद्धा को भेजा था। श्रद्धा ने राजन शर्मा को अपने मायाजाल में फसा भी लिया था परन्तु उसे कैंसर निकल गया। राजन शर्मा ने उसे बचाने के लिए अपना टेम्परारी क्योर दे दिया था। परन्तु श्रद्धा को परमानेंट क्योर चाहिए था और वो राजन शर्मा पर डिपेंडेंट हो गयी थी। वास्को को ये नहीं पता था कि श्रद्धा को कैंसर हो गया था।

राजन शर्मा को श्रद्धा के रूप में वास्को के खिलाफ एक अच्छा हथियार मिल गया था। परन्तु उसे कैंसर था और राजन शर्मा को कुछ ऐसा करना था कि वो उस पर हमेश डिपेंडेंट ही रहे। तभी ACP माधव भी अपनी पत्नी के कैंसर से परेशान राजन शर्मा से मिला। वास्को ने ही उसे राजन शर्मा की रिसर्च के बारे में बताया था। राजन शर्मा ने ACP माधव की बीबी को अपने कैंसर के परमानेंट क्योर करने के लिए एक्सपेरिमेंट के रूप में गिनी पिग की तरह इस्तेमाल किया। उस को वो सब दवाई दी जिससे वो ठीक होने के बदले तड़प तड़प कर मर गयी। परन्तु ACP माधव की बीबी पर इन सब एक्सपेरिमेंट के चलते राजन शर्मा को कैंसर का परमानेंट क्योर ढूंढ लेने में बहुत ज्यादा मदद हो गयी थी। ACP माधव ने अपनी पत्नी की चिता पर कसम खाई थी कि वो राजन शर्मा को मार डालेगा। परन्तु वास्को ने राजन शर्मा को तब तक कोई भी नुक्सान पहुँचाने के लिए मना कर दिया था जब तक वो परमानेंट क्योर को फाइनली नहीं बना लेता। ACP माधव अब समय का इंतजार कर रहा था।

राजन शर्मा ने इसलिए अपने कोड को ओरिएट ओबिलिस्क में छिपा दिया। उसे पता था कि जब तक उसका परमानेंट क्योर वास्को को नहीं मिल जाता वास्को उसे माधव से बचा ही लेगा। परन्तु ACP माधव से इंतज़ार नहीं हुआ और उसने आखिरकार राजन शर्मा पर काले मास्कधारी के रूप में हमला कर दिया।

राजन शर्मा को वो सारे सीन साफ़ साफ़ याद आ रहे थे। उसकी रिसर्च पूरी हुई और उस पर हमला हुआ। उसे मृत समझ माधव चला गया, और राजन शर्मा की लाश को जयेश और श्रद्धा ने मिलकर गायब कर दिया।

तब से राजन शर्मा किसी तरह छुपते छुपाते ही रह रहा था। श्रद्धा और जयेश उसकी हर संभव मदद कर रहे थे। श्रद्धा को राजन शर्मा ड्रग्स दे रहा था जो उसने बनायीं थी ताकि श्रध्द्धा का कैंसर कुछ सालो में पूरी तरह क्योर हो जाये।

इसके बदले श्रद्धा मुंबई में छिपे रहने में उसकी और उसके बेटे जयेश की मदद कर रही थी, तभी अमरीक क्राईं में आता है। माधव को शक था कि वास्को ने राजन शर्मा को बचाने के लिए उसको कहीं छिपा कर रख रहा था। इसलिए अमरीक क्राईं में आया ताकि वो राजन शर्मा की सच्चाई पता लगा ले। जबसे राजन शर्मा की लाश गायब हुई थी माधव समझ गया था कि राजन शर्मा मरा नहीं था।

अमरीक ने ऐसी हरकतें की जिससे वास्को और प्रथमेश दोनों घबरा जाएँ और जिसने भी राजन शर्मा को छुपाया हो वो माधव को पता चल जाये।

जयेश ने राजन शर्मा को उसके ख्यालों से वापस वर्तमान में लाने के झिंझोड़ा।

‘श्रद्धा को आपने क्यों मारा‘ जयेश बोला।

‘मेरे पास और कोई चारा नहीं था।’

राजन शर्मा फिर सोच में चला गया। श्रृद्धा के जरिये भी माधव ने राजन शर्मा का पता लगाने की कोशिश की थी। वो तो राजन शर्मा की किस्मत अच्छी थी कि वो उस दिन माधव के हाथ नहीं आया। श्रद्धा को राजन शर्मा पहले ही मार डालना चाहता था परन्तु उसे राजवीर ने गिरफ्तार कर लिया। फिर जैसे ही राजन शर्मा को मौका मिला उसने श्रृद्धा को मार डाला।

‘हाँ आपने बताया था। यदि श्रद्धा राजवीर को कुछ बता देती तो शायद माधव को किसी तरह पता चल ही जाता।’

‘हाँ। मुझे नहीं पता था कैसे उस माधव को पता चल गया कि मेरी रिसर्च पूरी हो गयी है। मैंने वास्को को बताया था कि मैंने रिसर्च को ओरिएट ओबिलिस्क में छिपा दिया है क्योंकि वरना वो माधव मुझे मार डालेगा।

‘और शायद वास्को ने नरेश को बताया’

‘हां’

‘और उसी रात माधव ने मुझ पर हमला कर दिया। ‘

‘इसलिए आपने अभिषेक के साथ मिलकर अपनी रिसर्च से कैंसर का क्योर बनाने की सोची‘

‘हाँ। अभिषेक प्रथमेश को छोड़ कर एक फॉरेन कंपनी से कोलैबोरेशन करके अपनी खुद की कंपनी लांच करने वाला था। क्राई का स्टोर मैनेजर सत्या भी उनके साथ था। परन्तु पता नहीं कैसे अमरीक को पता चल गया और उसने पहले सत्या की हत्या कर दी।’

‘हाँ पापा, और फिर अभिषेक ने जब उसे छुड़ाया तब उसने अभिषेक की भी हत्या कर दी। परन्तु अभिषेक ने उसे छुड़ाया क्यों‘

‘मेरे कहने पर।’

‘क्या‘ जयेश के चेहरे पर एक अलग सी बेचैनी आ गयी।

‘हां। जब मुझे पता चला अमरीक कुछ दिनों पहले इंटर्न के रूप में क्राई में आया है और सत्या की हत्या कर दी है, तो मुझे लगा कहीं वो मेरा राज तो नहीं जानता की मैं जिन्दा हूँ। वो माधव का आदमी हो सकता था।’

‘हाँ पापा। इसलिए आप अभिषेक के ड्राइवर बन कर गए थे। परन्तु अमरीक ने आपको पहचान लिया। उसने अभिषेक को मार डाला।’

‘हाँ‘

‘और अमरीक ने श्रृद्धा से मेरे एड्रेस के बारे में पूछा।‘

‘जो श्रद्धा ने उसको नहीं बताया पापा ‘

‘हाँ जयेश। हालाँकि अमरीक को पक्का नहीं पता था कि श्रद्धा को मेरे बारे में पता भी है कि नहीं।‘

‘अमरीक को फिर वास्को ने गोली मार दी और वो बुरी तरह घायल हो गया, फिर भी उसने कालिया गैंग के आदमी को मार डाला। ‘

‘हाँ। बस ये समझ नहीं आया की कालिया गैंग अमरीक को क्यों मारना चाह रहा था‘

‘हाँ‘

तभी उनके दरवाजे पर दस्तक हुई। राजन शर्मा और जयेश दोनों घबरा गए। जयेश ने धीरे से दरवाजा खोला और तभी किसी ने उस दरवाजे पर जोर से किक मार दी। वो आदमी अंदर आ चुका था।

‘अपनी मौत का नाटक करने वाले राजन शर्मा और जयेश दी ग्रेट आप लोगों को मेरे साथ चलना होगा‘ राजवीर खूंखार स्वर में बोला।

राजवीर को वहाँ देख कर राजन शर्मा घबरा गया। ‘तुम्हें यहाँ का एड्रेस किसने दिया‘

‘श्रद्धा ने‘ राजवीर बोला।

राजन शर्मा के होश फाख्ता हो गए थे। ‘तूने श्रध्दा को तो मार दिया परन्तु उसका मोबाइल मेरे पास था और तूने कई बार उसके साथ चैट की थी‘ राजवीर उदासीन स्वर में बोला। राजन शर्मा यह गलती कर बैठा था।

‘खैर तुम दोनों चिंता मत करो। तुम्हें एक सेफ जगह ही ले जा रहा हूँ। मुझे पता है माधव तुझे जान से मरना चाहता है।’ राजवीर बोला।

राजन शर्मा और जयेश दोनों घबरा गए थे।

राजवीर ने इतनी जल्दी गेम पलट दिया था कि ये सभी की कल्पना से परे था।

अंतिम अध्याय

वो एक बहुत बड़ा रुम था जहाँ जगह जगह पर कालिया गैंग के खूंखार शार्प शूटर्स अपने हाथों में बंदूक और पिस्तौल लेकर खड़े हुए थे। इस कहानी के सभी किरदार वहाँ मौजूद थे।

अमरीक, ऋतू, ACP माधव, नरेश, प्रथमेश, राजन शर्मा, जयेश और वास्को। वास्को को वहाँ राजवीर ने फोन करके स्पेशली बुलाया था। वास्को को बोला गया था उसे यदि कैंसर का परमानेंट क्योर चाहिए तो उसे वहाँ मिल जायेगा।

'आप सभी को यहाँ इस तरह से बुलाने के लिए माफ़ी।' राजवीर गंभीर स्वर में बोला।

'मेरे लोगों को किसने मारा' कालिया चीखा।

'शांत कालिया' राजवीर ने कालिया को देख कर बोला। 'आज सभी सवालों के जवाब मिल जायेंगे, और तुम्हें तुम्हारे लोगों के कातिल'

कालिया ने नज़र भर राजवीर को देखा और फिर अपनी आलीशान कुर्सी पर बैठ गया।

'चलिए शुरु से शुरु करते है' राजवीर बोला।

वहाँ मौजूद सभी लोग राजवीर से नफरत तो करते थे, परन्तु उसकी कुशाग्र बुद्धि के कायल हो चुके थे। राजवीर ने इस अत्यधिक

उलझी पहेली को इतनी आसानी से सुलझा लिया था ये बहुत ही विस्मयकारी था।

‘राजन शर्मा ने कैंसर का टेम्पररी क्योर बनाया। प्रथमेश और वास्को दोनों ने उससे संपर्क किया परन्तु वास्को ने राजन शर्मा को कन्विंस कर लिया और राजन शर्मा ने अपनी रिसर्च वास्को को दे दी।’

राजवीर ने नज़र भर के राजन शर्मा को देखा जो पसीने पसीने हो रखा था। उसे समझ आ गया था कि आज उसकी कोई चाल उसे नहीं बचा पायेगी।

राजवीर ने आगे बोला, ‘परन्तु जहाँ वास्को ने करोडो कमाए राजन शर्मा के हाथ ज्यादा कुछ नहीं आया। इसलिए अब जब राजन शर्मा ने परमानेंट क्योर बना लिया तब उसने सोचा की वो इसे बेचेगा नहीं परन्तु पार्टनरशिप करेगा।’

राजवीर ने थोड़ा पॉज लिया। वो फिर बोला,’इसलिए राजन शर्मा ने प्रथमेश, वास्को के साथ साथ अभिषेक से भी संपर्क किया। अभिषेक एक अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसने राजन शर्मा को कन्विंस किया की वो दोनों मिलकर नई कंपनी खोलेंगे।‘

‘राजन शर्मा शायद आसानी से अभिषेक के साथ मिलकर नयी कंपनी खोल भी लेता, आखिर उसी के नाम पेटेंट था, परन्तु तब तक खेल में एंट्री हो चुकी थी इस कहानी के सबसे खूंखार खिलाडी - माधव की‘

राजवीर ने माधव को देखा। उसके चेहरे पर खूंखार भाव थे और वो राजन शर्मा को ही घूर रहा था।

'माधव की पत्नी को राजन शर्मा ने मार डाला था। परन्तु वास्को के कारण माधव सही समय का इंतज़ार कर रहा था। और उसे वो समय मिल गया जब राजन शर्मा की रिसर्च पूरी हो गयी'

'मुझे ये बताओ की मेरे लोगों को किसने मारा' कालिया चीखा। 'उसने अमरीक के घाव पर एक जोरदार मुक्का मारा। वो घाव जो वास्को की गोली लगने से हुआ था और अब थोड़ा ठीक हो गया था। अमरीक की चीख निकल गयी और वो कुर्सी से नीचे गिर गया। कालिया का पेशेंस अब ख़तम हो रहा था।

'हाँ कालिया। तुम्हारा सवाल वाजिब है' राजवीर भाव हीन स्वर में बोला।

'परन्तु इस बेचारे अमरीक को मार कर कुछ नहीं होगा'

'तो कौन है वो कातिल' कालिया बहुत जोर से चीखा।

'बताता हूँ। पहले सोचो की अमरीक को माधव ने वास्को के पास क्यों भेजा पता है ?'

'तुम पहेली बुझाना बंद करो' कालिया चीखा। और राजवीर पर बन्दुक तान दी।

'ओ हो मुझे मरोगे ' राजवीर बोला और उसने कालिया की बन्दुक को नीचे कर दिया।

'चलो पहले तुम्हारे सवाल का जवाब दे देते है।'

राजवीर धीरे धीरे चल कर अमरीक के पास गया। और बोला 'तुम्हारे लोगों की कातिल है..'

राजवीर ने एक दम अमरीक के पीछे खड़ी ऋतू को सामने खींचा और बोला 'ये'

कालिया की आँखों में खून खोल गया।

'ये सुन्दर और मासूम सी लड़की ऋतू ' राजवीर बोला। ऋतू चुपचाप नज़ारे झुकाये खड़ी हुई थी।

'ये' कालिया को यकीन नहीं हो रहा था।

'हाँ' राजवीर कालिया के पास गया और बोला 'थोड़ा धीरज धरो सब समझ आ जायेगा'

कालिया चुपचाप खड़ा हो गया और ऋतू को घूरने लगा।

'तो माधव को पता था कि वास्को उसे राजन शर्मा को तब तक नहीं मारने देगा जब तक उसकी रिसर्च पूरी नहीं हो जाये। और उसके बाद हो सकता है राजन शर्मा को पैसे दे कर देश से भगा दे'

राजवीर ने वास्को की ओर देखा जो बहुत ही शांत भाव से खड़ा सब सुन रहा था।

राजवीर आगे बोला, 'इसलिए माधव ने ऋतू को वास्को के यहाँ भेजा'

राजवीर ऋतू के पास पहुंचा और बोला ‘ऋतू माधव की साली है और मिलिट्री लेवल की ट्रेंड फाइटर है‘

ऋतू चुपचाप ही खड़ी रही। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे।

‘ऋतू को वास्को के पास ये पता लगाना था कि कब राजन शर्मा की रिसर्च पूरी हो जाती है।‘

राजवीर ने ऋतू को देखा जो चुपचाप ही खड़ी थी। राजवीर आगे बोला,

‘ऋतू ने ही राजन शर्मा की रिसर्च पूरी होने की खबर माधव को दी। माधव भी चाहता था कि राजन शर्मा अपनी रिसर्च पूरी कर ले ताकि और कोई कैंसर से नहीं मरे। इधर राजन शर्मा की रिसर्च पूरी हुई और उधर माधव ने राजन शर्मा पर हमला कर दिया।‘

राजवीर ने नज़र भर माधव को देखा। जैसे मानो बोल रहा हो कि अब कन्फेस कर ही ले।

'हाँ मेने ही राजन शर्मा को काला मास्कधारी बन कर मारने की कोशिश की थी।' फिर माधव ने प्रथमेश को देखा और बोला। 'मेरा साथ प्रथमेश ने दिया था।'

प्रथमेश सकपका कर रह गया। माधव आगे बोला 'प्लान सिंपल था। मैं राजन शर्मा को मरूंगा और उसकी रिसर्च प्रथमेश को दे दूंगा। ताकि प्रथमेश कैंसर का क्योर बना सके। इससे मेरा बदला पूरा हो जायेगा और कैंसर से लोगों की जान भी बचेगी। '

'मैं राजन शर्मा के घर के बाहर नज़र रखे हुआ था जब माधव सर उसे मारने अंदर गए थे। ' प्रथमेश बोला।

'इसलिए प्रथमेश क्योंकि तुम माधव की हाथों के कठपुतली थे। ' राजवीर बहुत गुस्से में बोला।

प्रथमेश चुप ही रहा। उसे नहीं पता था कि वो आगे क्या बोले। उसके पास माधव का साथ देने के अलावा कोई और चारा भी नहीं था। वैसे भी माधव इस मदद के लिए उसे राजन शर्मा का कैंसर का क्योर भी दिलवा रहा था।

'माधव ने इसलिए राजन शर्मा की मौत की इन्वेस्टीगेशन भी ज्यादा ढंग से नहीं करवाया क्योंकि उसने खुद ने ही वो हमला किया था। परन्तु राजन शर्मा की लाश गायब हुई और माधव को शक हो गया। उसे समझ आ गया राजन शर्मा बच गया है।' राजवीर बोला।

राजवीर ने एक पॉज लिया और नज़र भर सबको देखा। उस बड़े कमरे में सब लोग हैरत से इस खूंखार कहानी का अंत ही सुन रहे थे। कालिया की नज़रो में खून था। राजवीर ने आगे कहा,

'ऋतू को भी कोई साथी चाहिए था क्योंकि अकेले उसका भांडा फुट सकता था। और तब एंट्री हुई अमरीक की।'

'इसलिए माधव ने अमरीक को भेजा और प्रथमेश को बोला की तुम्हें अमरीक को मारने की सुपारी दे।' राजवीर कालिया की तरफ देख कर बोला।

कालिया ऋतू को देख रहा था।

‘सत्या ने ऋतू और अमरीक की बातें उस दिन सुन ली और ऋतू ने एक कराटे चोप से उसे बेहोश किया और पास ही की रस्सी से उसे मार डाला। अमरीक ने जानबूझ कर ओरिएट ओबिलिस्क का नाम लिया।’

राजवीर फिर नरेश कि तरफ मुड़ा।’ ये नरेश सर शॉक में आ गए इन्होने अभिषेक कि पत्नी को बता दिया उसने अभिषेक को और अभिषेक ने राजन शर्मा को।’

नरेश नज़रे झुकाये खड़ा था। उसे अभिषेक कि पत्नी से अवैध सम्बन्ध रखना भारी पड़ गया था।

‘राजन शर्मा को लगा कि अमरीक जान चुका था कि वो जिन्दा है और इसलिए उसने अभिषेक के साथ मिलकर अमरीक को किडनैप किया।’

राजवीर फिर ऋतू की तरफ गया और उसे देख कर बोला। ‘परन्तु ऋतू अमरीक से पहले ही मिल चुकी थी। और वो अमरीक का पीछा कर रही थी। ऋतू चुपचाप अमरीक को अभिषेक के घर जाते देख रही थी। ऋतू ने राजन शर्मा को भी देख लिया था।’

राजन शर्मा ने ऋतू की ओर देखा और फिर वास्को की ओर।

वास्को पहली बार बोल उठा ‘और फिर ऋतू ने अभिषेक का खून कर दिया। परन्तु कैसे ‘

‘प्रथमेश भी बोला ‘हाँ मैंने भी वो CCTV देखा था, उसमे ऋतू कहीं नहीं थी। केवल अभिषेक ही अमरीक को पिस्तौल की नौक पर ले जा रहा

था ओर ये राजन शर्मा जो ड्राइवर बना बैठा था वो था। परन्तु राजन शर्मा की शकल भी नहीं दिख रही थी।'

'अभिषेक का खून उसकी बेवकूफी से हुआ। राजवीर बोला।

' कैसे ' वास्को ने पूछा।

'अभिषेक ने राजन शर्मा से बात करने के लिए अमरीक को अपने घर में बंद करके नीचे जाने का फैसला किया था। उतना समय काफी था ऋतू के लिए सीढ़ियों से CCTV कैमरे से बचते हुए ऊपर आ जाने के लिए।'

कालिया भी ऋतू को आश्चर्य से देख रहा था। ये बहुत ही दुस्साहसी लड़की थी।

'राजन शर्मा ने अभिषेक को अमरीक से अच्छे से पूछताछ करने के लिए बोला और खुद वहाँ से चला गया। उसे अमरीक से मिल कर समझ आ गया था कि अमरीक का इरादा कुछ और था।'

'यहीं वो गलती कर बैठा' अमरीक जोर से बोला।

'हाँ ' इस बार ऋतू बोली। मैंने राजन शर्मा को पहचान लिया और हम समझ गए कि ये अच्छा मौका था राजन शर्मा को मार डालने का। हमें अभिषेक से जल्दी निपट कर राजन शर्मा को पकड़ना था। हमने उस पर फ्लावर वास से हमला किया परन्तु उसने गिरते हुए भी मेरा पैर पकड़ लिया। मुझे जल्दी थी क्योंकि वरना राजन शर्मा हमारे हाथ से निकल जाता। मुझे अभिषेक को मारना पड़ा। मैंने ही अमरीक को अभिषेक के घर

से सारा सामान चेक करके उसका लैपटॉप, मोबाइल और वो किताब उठाने के लिए कहा था। और मैं फिर CCTV से बचते हुए वहाँ से निकली।'

'हाँ ऋतू। परन्तु जब तक तुम अभिषेक को मार कर नीचे पहुंची राजन शर्मा भाग गया था।' राजवीर बोला।

ऋतू और अमरीक ने हामी में सर हिला दिया।

'परन्तु तुम्हें ये सब कैसे मालूम पड़ गया ' राजन शर्मा भी इस बार बोल उठा।

'माधव सर की मेहरबानी ' राजवीर बोला।

सब लोग माधव को देखने लगे। अब एकालाप की बारी माधव की थी।

'मुझे शक था कि राजन शर्मा को वास्को बचा रहा था। इसलिए मैंने अमरीक को भेजा और ऐसी परिस्थितयां उत्पन्न कर दी की दोनों प्रथमेश और वास्को घबरा जाये और राजन शर्मा से संपर्क करे। परन्तु दोनों में से किसी ने भी राजन शर्मा से संपर्क नहीं किया। फिर मैंने श्रृद्धा का पीछा किया और एक बार राजन शर्मा तक पहुँच गया परन्तु वो किस्मत से बच कर निकल गया।'

'हाँ जब श्रद्धा अमरीक से बहुत दिनों बात उसके किराये के मकान पर मिलने गयी तो अमरीक का यकीन हो गया कि श्रद्धा वास्को के लिए नहीं राजन शर्मा के लिए काम करती है। 'राजवीर बोला।

‘इसलिए मैंने श्रद्धा का पीछा कर राजन शर्मा का पता ढूंढ लिया था।‘ माधव बोला।

राजवीर फिर राजन शर्मा के पास गया और बोला, 'क्योंकि राजन शर्मा को पता लगाना था कि अमरीक का प्लान क्या है। इसलिए उसने श्रद्धा को अमरीक को टटोलने के लिए भेजा।‘

‘हाँ ' माधव ने राजन शर्मा को घूरते हुए बोला। ‘और शायद राजन शर्मा और श्रध्दा को समझ आ गया था कि अमरीक राजन शर्मा को ढूंढ रहा है। वो मेरा आदमी है।' माधव खूंखार स्वर में बोला।

‘और फिर राजन शर्मा ने श्रद्धा को ही मार डाला‘ राजवीर बहुत ही ग़मगीन स्वर में बोला।

‘हाँ’ माधव भाव हीन स्वर में बोला। वो राजन शर्मा को घूरे जा रहा था। माधव ने राजवीर को देखते हुए बोला, ‘तुम्हें गुमराह करने के लिए मैंने जयेश और अमरीक का कनेक्शन दिखाया और अमरीक के वो दादा दादी मैंने ही प्लांट किये थे।‘

‘माधव सर बस आपने तब एक गलती कर दी थी‘ राजवीर बोला।

‘क्या‘

‘आप मेरे पीछे दिल्ली आ गए थे।’ राजवीर बोला।

‘हाँ। मैंने ही तुम्हें अमरीक के नकली दादा दादी के घर पर पीछे से बेहोश किया था।’

‘हां’

‘मैंने क्या गलती की’ माधव ने आश्चर्य से पूछा।

‘आपने अपने आप को मेरा हिमायती दिखने के लिए मुझे कई फोन किये जबकि आपने खुद ने ही मुझे अमरीक के झूठे दादा दादी के यहाँ बंद किया था।’

‘तो ‘ माधव अभी तक विस्मय में था।

‘तो ये माधव सर की आप ने ये नहीं देखा कि आप दिल्ली से मुझे फोन कर रहे थे। आपको मुंबई होना चाहिए था। मेरे पास भी फोन के एक्सपर्ट थे और आपकी पोल खुल गयी।’

माधव कि आंखे फटी रह गयी। राजवीर वाकई में बहुत शातिर था।

‘तब मैंने सोचा शायद आप वास्को को बचाने के लिए ऐसा कर रहे हैं, परन्तु आपने मेरा फोन हैक कर लिया और मैं समझ गया आप कुछ ज्यादा ही पर्सनल हो रहे हैं। बस तभी मैंने सोच लिया था कि मुझे आपको भी इन्वेस्टीगेट करना पड़ेगा।’ राजवीर बोला।

‘और तुम्हें मेरा लैपटॉप हैक करने का आईडिया आ गया।’ माधव बोला।

‘यस सर। परन्तु उस समय मुझे ये नहीं पता था कि आपके लैपटॉप को हैक करते ही ये केस ही पूरा सुलझ जायेगा। क्योंकि इसके मास्टर माइंड आप हैं। आप ही है जो पूरा खेल घुमा रहे थे। अमरीक, ऋतू

सब आपके इशारे पर चल रहे थे। मुझे भी आप ही घुमा रहे थे, प्रथमेश को भी और वास्को को भी डायरेक्टली या इनडायरेक्टली आप ही घुमा रहे थे।

'मेरी नफरत' माधव ने राजन शर्मा को घुरा 'इसके प्रति बहुत ज्यादा थी। इसको मारने के लिए मैं कुछ भी कर सकता था।'

'परन्तु मेरे लोगों को क्यों मारा ' कालिया गुस्से से माधव से बोला।

'क्योंकि माधव वास्को को डराना चाहता था।' राजवीर बोला।' उसे शक था कि राजन शर्मा को वास्को ने छुपा रखा था।'

'ओर मैं एक बार डर भी गया था।' वास्को बोला।

'परन्तु फिर तुम्हें मालूम पड़ गया... ' राजवीर बोला और उसकी बात बीच में वास्को ने काटी।

'की राजन शर्मा जिन्दा है ' वास्को बोला।

'हाँ ' राजवीर बोला।

'अभिषेक की मौत ने राजन शर्मा को डरा दिया था। और श्रृद्धा को मारने के बाद राजन शर्मा को पता था कि वो बहुत दिन मुंबई में माधव से छुपा नहीं रह सकता था। उसके बेटे ने मुझसे संपर्क कर लिया था। मुझे समझ आ गया था कि अमरीक और ऋतू मिले हुए है ' वास्को बोला।

'हाँ और जब रेनू के फोन पर मुझे... ' राजवीर बोला और उसकी बात फिर वास्को ने काटी।

'मेरा मैसेज रेनू को ' वास्को बोला।

‘हाँ ‘

‘रेनू को पछतावा था और उसने मुझे बता दिया था कि वो मुझे डबल क्रॉस कर रही थी और सारी डिटेल्स प्रथमेश को दे रही थी। उसे बहुत ज्यादा पछतावा था। तभी जयेश ने मुझ से संपर्क करने की कोशिश की। मुझे नहीं पता था कि वो सच बोल रहा है या ये कोई चाल है। मैंने रेनू को जयेश और राजन शर्मा से मिलकर मेरी मीटिंग सेट करने के लिए कहा। मैंने ही रेनू को बोला था कि वो जयेश से मिले ‘ वास्को बोला।

‘बस मैं जयेश का नंबर रेनू के फ़ोन पर देखती ही पूरा खेल समझ गया था और बाकि माधव सर के लैपटॉप में पूरी डिटेल्स थी।‘ राजवीर बोला।

धायें!!!

एक बन्दुक के चलने की आवाज़ आयी।

कालिया का पेशेंस अब ख़तम हो गया था। उसने ऋतू को गोली मार दी थी।

‘नहीं’ माधव चीखा। उसने कालिया को एक किक मारी और कालिया की बन्दुक नीचे गिर गयी। कालिया गैंग के सारे लोग हरकत में आ गए और उन्होंने माधव पर बंदूके तान दी। सभी का ध्यान माधव और कालिया पर ही था। किसी ने ध्यान नहीं दिया था कि वो बन्दुक ऋतू के पास गिरी थी। ऋतू के बदन से खून बह रहा था परन्तु उसके चेहरे पर थी एक खूंखार हंसी।

माधव ने ऋतू को देखा और उसने वो बन्दुक उठा ली थी। कालिया गैंग के लोग भी ऋतू को देख चुके थे परन्तु इससे पहले वो ऋतू को गोली मारते या कोई भी कुछ करता ऋतू ने एक सटीक निशाना लगा कर गोली चला दी थी। कालिया गैंग के लोगों ने ऋतू को और गोलियां मार दी थी। उसके साथ ही ऋतू के प्राण पखेरू उड़ गए थे।

वहाँ एक लाश और गिर गई थी। ऋतू की चलाई गोली सीधे राजन शर्मा के माथे को चीरती हुई निकल गयी थी।

ये कहानी राजन शर्मा की मौत से शुरू हुई थी और उसकी मौत पर ही ख़तम हो गयी थी।

माधव जोर जोर से रो रहा था। अमरीक भी बुरी तरह से कराह रहा था। कालिया गैंग वहाँ से निकल गया था। कालिया ने अपने लोगों को मारने वाली उस ऋतू से बदला ले लिया था। प्रथमेश, वास्को भी फॉरेन निकल चुके थे। राजवीर भी टका सा खड़ा हुआ था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ये खूंखार कहानी किस तरह ख़तम हुई थी।

ऋतू ने आखिर अपनी बहन का बदला ले लिया था।

कालिया गैंग ने भी अपने लोगों के कातिल ऋतू को मार दिया था जो अमरीक के साथ ही रहती थी और उसी ने अमरीक के घर में उसके आदमी को मारा था और क्राई के मेडिकल रूम में भी कालिया गैंग के आदमी को मारा था। उसे भी इन अनेक हत्याओं की सजा अपनी जान देकर चुकानी पड़ी थी।

ये कहानी इस प्रकार ख़तम होगी ये राजवीर ने भी नहीं सोचा था। माधव ने राजवीर को देखा। ना माधव को राजवीर के प्रति कोई ग्लानि थी और ना ही राजवीर को। उन दोनों ने आँखों ही आँखों में इशारा कर लिया था कि उनका राज़ उनके साथ सेफ रहेगा।

वो इंटर्न अमरीक अभी तक रो ही रहा था। उसे ऋतू की मौत का सदमा लग गया था। ऋतू ने उसकी पल पल मदद की थी और यदि वो कह पता तो ऋतू को जरूर कहता की वो उससे प्यार कर बैठा था। वो ऋतू की लाश को ही निहारता रह गया।

अमरीक एक रहस्य की तरह क्राईं में आया था और एक रहस्य की तरह ही चला गया। उसके बाद उसका कोई भी पता ठिकाना किसी को नहीं मिला।

&

टी इंटर्न

(सब कुछ किसी कारण से होता है!)

डॉ. निशा शास्त्री

डॉ. निशा शास्त्री, लोक प्रशासन में पी.एच.डी कर चुकी हैं तथा उन्हें प्रशासन मैनेज करने का तकरीबन एक दशक का अनुभव है। वो अभी बेंगलुरु स्थित एक आई टी कंपनी में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में कार्य कर रही है। वो साइंस फिक्शन में विशेष रूचि रखती हैं एवं हिंदी और अंग्रेजी भाषा में कई उपन्यास लिख चुकी हैं।

Rs. 399/-

उपन्यास

ISBN : 978-81-980852-6-9

9 788198 085269

For Sale in the Indian Sub-continent only

राजमंगल प्रकाशन

eBook Available

www.rajmangalpublishers.com

rajmangalpublishers r_publishers